SHARE YOUR HUMANITY GLOBAL PLATFORM

त्रैमासिक हिंदी ई - पत्रिका

प्रवेशांक मार्च २०२४

अपना ख़याल रखें।

धारावाहिक उपन्यास

गीत एवम मुक्तक

ग़ज़लें

कविताएं

"बाल-गुंजन"

आओ तस्वीर बनाएं...

मुंशी प्रेमचंद की कहानी: स्त्री और पुरुष

भोर

Rising of Humanity Worldwide

भोर कार्यकारिणी समूह

Rising of Humanity Worldwide

संस्थापक एवम मुख्य संरक्षक

मोनी बिजय (मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
बिजय कोइराला

सरंक्षक - मंडल

श्री लक्ष्मी शंकर बाजपेयी
डॉ. किशोर सिन्हा
डॉ. रमा शर्मा

संपादक - मंडल

मोनी बिजय (मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
डॉ. किशोर सिन्हा
श्री विश्वास दुबे
नमिता पाठक

वरिष्ठ परामर्शदाता

विनोद दुबे
रामा तक्षक
डॉ. आरती लोकेश गोयल

संस्था कार्यकारिणी मंडल

सुश्री ऐश्वर्या संपन्ना
सुश्री संगीता गुहा ठाकुरता
सुश्री सुप्रिया श्रीवास्तव
श्री शिरिष तारे
सुश्री नीता संदीप

समन्वयक

सुश्री ऐश्वर्या संपन्ना

पत्रिका डिजाइन एवं तकनीकी विशेषज्ञ

मोनी बिजय

तकनीकी परामर्शदाता

श्री विश्वास दुबे

मुख्य कार्यालय

49 B, कंफर्ट हाउसिंग सोसाइटी
थैबा, ललितपुर, काठमांडू-नेपाल
फोन नंबर - 00977-9801794046

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) :-

- यह पत्रिका मानवता, सकारात्मकता और रचनात्मकता को बढ़ावा देती है तथा इसके संपादक, संचालक एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक और अव्यावसायिक हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं । संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
- प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तरदायित्व लेखक का होगा। आलेख भेजते समय वे इस आशय का एक पुष्टि -पत्र भी संलग्न करेंगे। किसी भी प्रकार के क़ानूनी विवाद के लिए यह मंच और पत्रिका ज़िम्मेदार नहीं होगा ।
- सामान्य तौर पर इस पत्रिका के लिये अयाचित आलेख नहीं लिये जायेंगे। आलेख के लिये संपादक-मंडल लेखक से स्वयं संपर्क करेगा।
- पत्रिका के लिये आलेख यूनिफ़ोंट में टाइप कर ई-मेल द्वारा ही भेजे जायें।
- आलेख प्रेषित करने से पूर्व भलीभांति जांच लें कि उसमें भाषा या वर्तनी की अशुद्धियां न रह गई हों।
- चयनित आलेखों को प्रकाशन-पूर्व संबंधित लेखकों के पास प्रूफ़ देखने के लिये भेजा जायेगा, ताकि वे सुनिश्चित कर सकें कि उनके आलेख में कोई अशुद्धि नहीं है।
- प्रूफ़-रीडिंग पश्चात् प्राप्त आलेखों को सुधारने और लेखक/लेखकों की अंतिम स्वीकृति मिल जाने के बाद उसे उसी रूप में प्रकाशित कर दिया जायेगा।

अनुक्रमांक

- शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच परिचय ०१
- परिचय भोर कार्यकारिणी मंडल ०२-०८
- संपादकीय - मोनी विजय, नेपाल ०९
- संरक्षक - मंडल १०-१२
  अनुभवी नज़र - लक्ष्मी शंकर बाजपेयी, भारत
  शुभकामना पत्र - डॉ. किशोर सिन्हा, भारत
  शुभकामना पत्र - डॉ. रमा शर्मा, जापान
- सह - संपादक एवम समन्यवक १३-१६
  सह संपादक की ओज वाणी से- आलेख (विश्व मातृभाषा दिवस):- नमिता पाठक, ऑस्ट्रेलिया
  सह संपादक - आलेख (सोशल मीडिया - समाज का आइना) :- विश्वास दुबे, नीदरलैंड
  अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आलेख -ऐश्वर्या संपन्ना, मुम्बई-भारत
- साहित्यिक विधाएं

✦ गीत एवम मुक्तक:- १७

विनोद दुबे, मुम्बई - भारत :- शूरवीर दृष्टि रख स्वयं की चाल पर
दरयाब सिंह राजपूत, हरियाणा-भारत :- सखियाँ रगड़ीं ख़ूब एवं मुक्तक

✦ गजलें १८-१९

पंडित सुरेश प्रसाद नीरव, नोएडा,यूपी-भारत
आर.पी. घायल , पटना, बिहार-भारत
अरशद मिर्ज़ा , दोहा-क़तर :- तकदीर
डॉ. बैजनाथ शर्मा 'मिंटू' , दोहा-क़तर :- सच को झूठ बतलाना नही
राजेश प्रभाकर ,दिल्ली :- सिसकते अल्फाज़

✦ कविताएं २०-२४

अन्नदा पाटनी, अमेरिका:- होली कविता एवं कहमुकरी
शिखा पोरवाल 'मनस्विनी', वैंकूवर-कनाडा:- असली खुबसूरती
विधान आचार्य, ललितपुर-नेपाल :- एक मन है खो जाने को
रूपम कुमारी यादव, ललितपुर, काठमांडू-नेपाल :- नारी श्रृंगार
माधुरी तिवारी भट्ट, देहरादून-भारत :- होली
मधु खरे,वर्जिनिया-अमेरिका:- अनुपम प्रकृति (दोहे)
अरुण एन. गुप्ता 'हीर ', लंदन-यू. के. :- कला की परिभाषा
अनु बाफ़ना, दुबई-यू. ए. ई. :- अनमोल सौगातें
निधि दवे, दुबई-यू. ए. ई. :- परेशान बहुत है
डॉ. नितेश शाह , दुबई-यू. ए. ई. :- सुनहरी सुबह
शिवमोहन्न, दुबई-यू. ए. ई. :- दायित्व पथ
श्वेता सिन्हा, बैंगलोर-भारत:- एक ख़्वाब
गोविंद गुप्ता, लखीमपुर,यूपी-भारत:- संस्कृति के वाहक

✦ ऋतु विशेष 'वसंत' २६-२७

'प्रेम आलेख' :- ध्रुव गुप्त, पटना, बिहार -भारत
'वीणा वादिनी' :- डॉ. ऊर्मिला सिन्हा,रांची -भारत

✦ साहित्य व्यक्तित्व विशेष २८-३०

कथा सम्राट 'मुंशी प्रेमचंद जी' की लिखित कहानी 'स्त्री और पुरुष '

✦ कथा कहानी ३१-३४

मंजु तिवारी कुमार, दुबई-यू.ए.ई. :- चुनाव
वन्दना खुराना 'रूही ', लंदन-यू.के. :- मेहर
डॉ. मीनू मानसी पाराशर, दोहा-क़तर :- सोच बदले (लघु कथा)

✦ लघु कथा ३६-३७

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, नई दिल्ली-भारत:- सोने की बंदूक; सैलाब
डॉ. रमा शर्मा, जापान :- निश्छल प्यार
ई. अंकिता बाहेती, दोहा-क़तर :- दिल का रिश्ता
मंजू श्रीवास्तव 'मन', वर्जिनिया-अमेरिका:- अर्धांग

अनुक्रमांक

बच्चों की दुनियाँ (टैलेंट एंड क्रिएटिविटी SYTC) ३८
शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी किड्स वर्ल्ड परिचय

बाल -गुंजन (कविताएं, तस्वीर, निबंध इत्यादि) ३९-४१
बाल कविताएं
वंशिका हरवानी, शारजाह-यू. ए. ई. :- 'प्रवासी नागरिक', कविता
शौर्य नारायण,पटना : - 'होली है', कविता
नमन सिन्हा ,पटना :- 'होली आई', कविता
सफल कोइराला, काठमांडू-नेपाल - 'मेरी माँ', कविता
श्रेया शालिनी, पटना :- 'वसंत', कविता
अथर्व सिन्हा, रांची :- होली कविता

निबन्ध
प्रकृति नयन सिन्हा , पटना: - होली निबंध

आओ तस्वीर बनाएं.
आद्या श्रीवास्तव, दिल्ली-भारत
प्राची सिंह,पटना,बिहार-भारत
शौर्य कोइराला, काठमांडू-नेपाल
श्रेयांश कुंडू, कोलकाता-भारत
श्रेया शालिनी, पटना, बिहार-भारत
अगस्त अनय, रांची, झारखंड-भारत

धारावाहिक उपन्यास (खंड ४२-४७
डॉ.)किशोर सिन्हा, पटना-भारत ....ताली (धारावाहिक उपन्यास)

यात्रा-संस्मरण ४८-५०
भीष्म उप्रेती, काठमांडू-नेपाल ....परिवेश अभिनय और संवाद का सम्मोहन
जय कृष्णा मिश्रा 'चैतन्य', दुबई ....नाने नाने दिवस

हमारी संस्कृति-हमारी धरोहर ५१-५३
डॉ. आरती लोकेश गोयल, दुबई यू ए ई. ....नवनिर्मित बैप्स हिंदू मंदिर आबू धाबी

मंचीय कार्यक्रम तस्वीरें ५४-५६

स्वास्थ्य लाभ :-अपना ख़याल रखें। ५७-५८
उजाला सिन्हा, सुपौल, बिहार-भारत ....तनाव (कारण और निवारण)
डॉ. मोशीर आलम, पटना -भारत....किड़नी स्वास्थ्य जागरूकता

अध्यात्म खंड - अंतर्मन स्पर्श ५९-६२
महात्मा बुद्ध के विचार
ओशो रजनीश के विचार
रामा तक्षक, नीदरलैंडस .....स्वीकार भाव मेरे जीवन की धुरी है।

पाठकों के पात्र ६३

चलते - चलते
मोनीकहतीहै..

शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच का संक्षिप्त परिचय

'शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच' नकारात्मक अंधेरे के बीच सकारात्मक प्रवाह का भोर है, जहाँ मानवता को सर्वोपरि मानते हुए ऐसे सच्चे कार्यों को साहित्य, सेवा, संगीत, रचनात्मक कार्य एवं मंचीय कार्यक्रम गतिविधियों द्वारा पूरे विश्व में गुंजायमान होता है । इस पटल की शुरूआत १८ नवम्बर २०१९ को मोनी श्रीवास्तव कोइराला (मोनी बिजय) द्वारा एक सात्विक बीज फेसबुक समूह (SYH) द्वारा रखी गई, जो अब पूरे विश्व में पौधा बनकर लहरा रही हैं । इस मंच की जननी का मानना है कि "स्वस्थ-समाज की आस दूसरे से न करें, बल्कि स्वयं आगे बढ़कर उसका निर्माण करें, और ऐसा समाज (विश्व) बनाएं जहाँ हर किसी का आदर हो । यहाँ से एक छोटा विचार भी निकले, तो वह समाज में एक सकारात्मक संदेश बन प्रसारित हो । अहं, ऊपर- नीचे, बड़ा-छोटा का भाव न हो, बस हर किसी के मुख पर एक मुस्कान दे सकें ऐसा कार्य संपादित हो । समय का सही सदुपयोग हो सकें यह धारणा हो ।"

अपने इन्हीं कुछ नियम-कानून को अपनाते हुए इस मंच ने निर्बाध रूप से हरसंभव मानवता-सेवा प्रदान की जिसके द्वारा पेड़ - पौधे रोपण, वृद्ध एवं असहाय बच्चो की मदद, नेत्र-चिकित्सा, कैंसर-चिकित्सा, रक्तदान-शिविर, असहाय पशुओं की मदद, हर धर्म के उत्सव में यथासंभव सहयोग, मुस्कान बाँटने की कोशिश, बच्चें एवं हर उम्र के सदस्यों के हुनर को प्रोत्साहित कर उन्हें पुरस्कार तथा सर्टिफिकेट वितरण करना , महिलाओं के भीतर आत्मविश्वास पैदा कर पुन: आत्मनिर्भर होने में सहयोग देना , समाज को जागरूक करनेवाले अनगिनत मंचीय कार्य करना, साहित्य, संगीत एवम सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा लोगो के बीच रचनात्मकता, जागरूकता एवम सकारत्मक संदेश पहुंचाना ।

मानवता सेवा कार्यों को बढ़ावा देना, भावना और नैतिकता के रूप को विस्तृत रूप देना । पूरे विश्व के लोगो को एक मंच पर आमंत्रित कर एक मानवता प्रेम-सूत्र में बाँधने का कार्य इस मंच ने जारी रखा है। अब तक इस मंच द्वारा १९५ ऑनलाईन मंचीय कार्यक्रम हो चुके हैं और अनगिनत सेवा कार्य विभिन्न देशों एवं राज्यों में - हरदोई, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई ,काठमांडू -नेपाल, पटना -बिहार, दोहा - कतर में किया जा चुका है। कई एनजीओ संस्थाओं को यथासंभव सहयोग राशि भी वितरित की गई है।

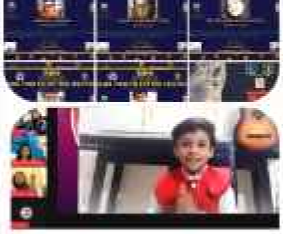

इस मंच ने नर -नारी , किन्नर समाज, वृद्ध -बच्चें, यूवा, हर उम्र, जाति ,धर्म, भाषा , देश - विदेश, पशु - पक्षी, पेड़ - पौधे सबका एक समान आदर करते हुए सबके ऊपर अनन्य कार्य किया है । पांचवें वर्ष के पदार्पण में खड़ा आज यह मंच विश्व में शांति, सद्भाव, एकता , सांस्कृतिक विरासत और समाज को एक सकारत्मक संदेश देने का यथासंभव प्रयास किया है । अभी इस मंच के पेज, यूटयूब चैनल, फेसबुक समूह, व्हाट्सएप समूह द्वारा विश्व भर के लोगो का जुड़ाव हुआ है । यह मंच कार्य गिनने में नहीं करते जाने में विश्वास रखता है। मानव अपने मानवीय संवेदना को सुंदर साकार दें, यही उद्देश्य परिपूर्ण करने के लिए अपने दोनो मंच 'शेयर योर ह्यूमैनिटी' तथा 'शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी किड्स वर्ल्ड' द्वारा भरपूर कोशिश की जा रही है। आइए, आप और हम मिलकर इस सुंदर समाज को एक विराट स्वरुप दें जहाँ से सिर्फ़ मानवता के सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हो।

शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच जननी / संरक्षक

स्वभाव से सरल, सहज और हर धर्म का आदर करनेवाली, मानवता को सर्वोपरी रखने वाली मोनी बिजय,'श्रीवास्तव. कायस्थ-कुल' (मोतीहारी, बिहार-भारत) में जन्मी और 'कोइराला, ब्राह्मण-कुल' (विराटनगर, नेपाल) में ब्याही गई हैं ।

शिक्षा में सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग (MCA) , स्काउट गाइड, मार्शल आर्ट (ताइक्वांडो ग्रीन वन बेल्ट) प्राप्त वर्तमान में आप अपने व्यवसाय की निदेशक (मामा सुपर मार्ट ट्रेडिंग, नेपाल) है, साथ ही लेखन-कार्य और मानवता-धर्म कार्यो में समर्पित हैं । स्वाभाविक रूप से हर विधा में लिखना पसंद करती है । गीत, ग़ज़ल, दोहे, लघुकथा ,कहानी, हाइकु, समीक्षा और समसामयिक विषयों पर आप लिख चुकी है । सात साझा संग्रह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। और कई सम्मानित संस्था द्वारा देश-विदेश में सम्मान से विभूषित हो चुकी हैं।

अपने मंच 'शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच' तथा कई अन्य मंचो द्वारा सेवा, साहित्य, संस्कृति, संगीत के माध्यम से, बच्चे - युवा -वृद्ध, नर-नारी - किन्नर समाज, पेड़ पौधे, पशु-पक्षी, सभी को दिल से अपनाया है और यथासंभव मदद की है। हर उम्र के व्यक्ति के हुनर और आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया है। आपको ईश्वर प्रदत्त सभी असहाय जीवो की सहायता करना, प्रकृति निहारना , गुनगुनाना और सकारात्मक रहना बेहद पसंद है । आपका मानना है कि मनुष्य जीवन में जन्में है तो अपने धर्म कर्म द्वारा इस जीवन को सार्थक करें।

१६ साल के प्रवास (दुबई , कतर) के बाद वर्तमान में अभी पति बिजय कोइराला एवम दो बेटे सफ़ल एवं शौर्य के साथ काठमांडू, ललितपुर-नेपाल में अपने व्यवसाय, परिवार एवं मानवता संग साहित्य को समृद्ध कर रही हैं । आपका कहना है कि.."मैंने अपने मानव जीवन जीने के सार्थकता में 'मानवता' को चुना है और इसे ही अपनाया है। माध्यम के लिए संगीत,साहित्य ,शिक्षा और सकारात्मक स्वरूप को अपनाकर ही चलना चाहती हूं।"

मोनीबिजय

(मोनी श्रीवास्तव कोइराला)

SYH - जननी (संस्थापक) , संरक्षक , प्रधान संपादक (भोर ई पत्रिका)

बिजय कोइराला ने 'मास्टर ऑफ़ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन' नेपाल से करने के पश्चात लगभग 20 वर्षो तक कई विदेशी धरती के उच्च पदों पर कार्यरत होने के बाद वर्तमान में ललितपुर काठमांडू, नेपाल में अपने व्यवसाय के प्रबंध निदेशक (मामा सुपर मार्ट ट्रेडिंग, नेपाल) रूप में समृद्ध कार्य कर अपने परिवार के साथ निवास कर रहे हैं ।

काठमांडू, नेपाल जो दुनिया के कई एक खूबसूरत देशों में अपनी एक अलग पहचान रखता है, वहां से बिजय जी का जुड़ाव बाल्यकाल से ही रहा है । वह अपनी धरा, अपनी मिट्टी और इस मिट्टी के कण-कण को अपना आराध्य एवं अपनी शक्ति मानते हैं और इसी शक्ति को अपना परिचय मानते हैं।

आप मनुष्य के बाहरी आवरण से नहीं बल्कि उनके अच्छे कर्मों, अस्तित्व, प्रकृति और आध्यात्म से जुड़ते हैं और इसी को अपनी प्रेरणा मानते हैं। यही वजह है कि शिक्षा-दिक्षा और कार्य अनुभव में उत्तम होते हुए भी स्वयं को मानवता का छात्र मानते हैं ।

आप शांति, सुख और स्वस्थ मानसिकता के परिचायी हैं और इसे ही समृद्धि का द्योतक मानते हैं। आप कहते हैं कि मेरी अर्धांगिणी और दो चरित्रवान एवं कर्मठ पुत्रों के साथ अपने देश में कल्याण के मार्ग पर चल रहा हूँ यह महादेव की कृपा है, और यही मेरा सबसे बड़ा परिचय है ।

बिजय कोइराला

शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच (मुख्य संरक्षक)

संरक्षक - मंडल

लक्ष्मी शंकर बाजपेयी
भारत
'भोर'
संरक्षक

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी एक प्रख्यात् साहित्यकार, कवि, लेखक, कमेंटेटर, मीडिया-विशेषज्ञ, स्तंभ-लेखक, अनुवादक और संपादक हैं। आप दुष्यंत कुमार द्वारा स्थापित हिंदी ग़ज़ल को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख कवियों में से एक हैं।

30 से अधिक काव्य विधाओं में रचनाकर्म, वेनेजुएला में विश्व कविता महोत्सव में भारत से एकमात्र कवि, प्रतिनिधि भारतीय कवि के रूप में एक दर्जन देशों में कविता पाठ, कविताओं के अनुवाद एक दर्जन से अधिक देशी विदेशी भाषाओं में, साहित्य अकादमी के संचयनों में ग़ज़लें, बाल कविताएं शामिल, ग़ज़लों का गायन अनेक प्रतिष्ठित गायकों द्वारा..।

आपके द्वारा 150 से अधिक राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय समारोहों की कमेंट्री का प्रसारण, 10 राष्ट्रपतियों, 7 प्रधानमंत्रियों सहित अनेक स्वाधीनता सेनानियों, महान हस्तियों से भेंट एवं साक्षात्कार किया गया है । नाटकों एवं संगीत सभाओं में आपकी भागीदारी प्रमुख है। 7 विश्वविद्यालयों में गेस्ट-फैकल्टी बनकर आपने सेवा प्रदान की है।

आपको देश-विदेश में अनेकों सम्मान मिलें हैं। जिसमें विदेशी धरती लंदन में अंतरराष्ट्रीय वातायन कविता सम्मान, कविता की शाम, इटावा हिंदी निधि का शिखर सम्मान और भारत में संसद के केंद्रीय कक्ष में राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान, भारतेन्दु सम्मान, हिंदी अकादमी का बाल साहित्य सम्मान , भारत सरकार के गृह मंत्रालय, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारतीय उच्चायोग लन्दन द्वारा सम्मान सहित कई दर्जन सम्मान आपके जीवन में शोभायमान है।

डॉ. किशोर सिन्हा
भारत
'भोर'
संरक्षक, सह -संपादक

डॉ० किशोर सिन्हा एक प्रख्यात् साहित्यकार, निर्देशक, अभिनेता, फ़िल्मकार एवं रेकी-हीलर हैं। आपने आकाशवाणी दूरदर्शन के लिए अनेक धारावाहिकों, नाटकों तथा डॉक्यूमेन्ट्री का लेखन, निर्देशन, प्रस्तुतीकरण एवं अभिनय के साथ लगभग डेढ़ सौ लघु फिल्मों का निर्माण किया है। आप अपने फ़ेसबुक पेज 'साक्षी हैं शब्द' के ज़रिये देश/विदेश के 120 से भी अधिक चर्चित व्यक्तित्वों का लाइव साक्षात्कार कर चुके हैं।

आपकी विभिन्न विधाओं में बीस पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें उल्लेखनीय हैं- रेकी (प्राणिक चिकित्सा), हिन्दी की आंचलिक कहानी: परंपरा और प्रयोग (आलोचना), रेडियो प्रसारण की नयी तकनीक (मीडिया), चारूलता (नाटक), अपनी कथा कहो...(नाटक), नई कहानी, पुराना पाठ: वाया व्हाट्स-एप (कहानी-संग्रह), तीस साल लम्बी सड़क (आत्मानुभव), फ़ेड इन... फ़ेड आउट (आत्मानुभव), आओ धरें एक पग और (कविता-संग्रह), नील-दशन और एक ख़ामोश नज़्म: अमृता प्रीतम (नाटक), समंदर पार इन्द्रधनुष-संपादित, ताली (उपन्यास), उनकी बातें (साक्षात्कार) ।

आपको अनेक सम्मानों एवं पुरस्कारों से नवाज़ा भी गया है, जिनमें महत्वपूर्ण हैं- प्रसार भारती का लोक सेवा प्रसारण राष्ट्रीय पुरस्कार, बिहार आर्ट थियेटर का श्रेष्ठ रंगकर्मी शिखर सम्मान, 'प्रांगण' का डॉ. चतुर्भुज स्मृति सम्मान, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'प्रफुल्लचन्द्र ओझा मुक्त सम्मान', 'लाला जगत् ज्योति प्रसाद सम्मान', बिहार गौरव सम्मान, आकाशवाणी का 'वेव एलियन्स' के लिये 'सर्टिफ़िकेट आॅफ़ मेरिट' पुरस्कार, जयपुर साहित्य पुरस्कार-2023 एवं 2024.

संरक्षक एवम वरिष्ठ परामर्शदाता मंडल

डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा एक उपन्यासकार, साहित्यकार एवं जापान से रजिस्टर्ड हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, एवं पंजाबी दी गूंज अंतर्राष्ट्रीय मैगज़ीन (ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਗੂੰਜ ਅੰਤਰ ਰਾਸ਼ਟਰੀ) ਮੈਗਜ਼ੀਨ की मुख्य संरक्षक, संपादक एवं जापान कल्चरल सोसायटी की अध्यक्ष हैं।

आपका जन्म जालंधर, पंजाब-भारत में हुआ हैं एवं आपकी शिक्षा दिल्ली से हुई है। विगत कई वर्षो से त्सुकुबा, टोक्यो-जापान में अपने परिवार संग निवास करती हैं। विदेशी धरती से भी आप हिंदी ,पंजाबी भाषा एवम भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में अनवरत लगी है । किन्नर समाज के सुधार और उद्धार के लिए आप विशेष रूप से सेवा प्रदान कर रही हैं।

आपकी लेखन विधाएं हैं कविता, कहानी, लेख, लघुकथा, उपन्यास एवं हाइकु । प्रमुख प्रकशित पुस्तकें हैं -जापान का सनातन धर्म शिंतो, आतप जीवनम्, मुरझाते फूल, बहते पानी के साथ बहना, दिल की बातें और देहरी पर दीपक ।

आपकी 30 साझा संग्रह पुस्तके प्रकाशित हैं तथा आपके द्वारा संपादित पुस्तकें हैं, अपनी-अपनी धरती, अपना-अपना आसमान, अपने-अपने सपने, 'नरेंद्र मोदी'-एक युग प्रवर्तक, प्रत्याशित सोच, गूंज उठी हिंदी, जज़्बात, अधूरी, प्रवासी हिंदी की गूंज । इसके अतिरिक्त अनगिनत कवितायें और लेख ,कहानियाँ समय समय पर देश विदेश की पुस्तकों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। आप अपनी साहित्यिक उपलब्धियाँ , सुनामी पीड़ित सेवा कार्य के लिए जापानी सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं साथ ही भारत में भी समय-समय पर पुरस्कृत होती रही हैं।

आपको कई अन्य सम्मान भी मिले हैं। वर्ल्ड कान्सिट्यूश्न एन्ड पार्लियामेंट (WCPA) द्वारा सम्मानित, बरमिंघम भारतीय दूतावास में सम्मानित, लंदन, बैंकाक, थाईलैण्ड, दोहा-क़तर में सम्मानित । भारत में भी कई सम्मानित विश्वविद्यालय एवं संस्थाओं द्वारा कई बार सम्मानित की गई हैं ।

डॉ. आरती 'लोकेश' दो दशकों से दुबई में निवास करती हैं। यू.ए.ई. के विद्यालय में वरिष्ठ मुख्याध्यापिका होने के अतिरिक्त शोध-निर्देशिका भी हैं। अंग्रेज़ी-हिन्दी दोनों विषयों में स्नातकोत्तर होने के साथ ही हिन्दी में गोल्ड मैडलिस्ट हैं। 'अनन्य यू.ए.ई.' पत्रिका की मुख्य संपादक हैं तथा अमेरिका, यू.ए.ई. व भारत की कई पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा शोध जर्नल की संपादक, सह-संपादक तथा उपसंपादक भी हैं। इनके 4 उपन्यास, 4 कविता-संग्रह, 2 कहानी-संग्रह, 1 लघुकथा संग्रह, 2 कथेतर गद्य, 1 यात्रा-संस्मरण, 1 शोध ग्रंथ, यू.ए.ई. के बालकों व वयस्कों की रचनाओं के संकलन की 5 संपादित मिलाकर 20 पुस्तकें प्रकाशित व 5 अन्य प्रकाशनाधीन हैं। इनके साहित्य पर पंजाब, हरियाणा, ओडिसा तथा यूक्रेन के विश्वविद्यालय में विद्यार्थी शोध कर रहे हैं तथा अनेक पुस्तकों पर अनुवाद किया जा रहा है। इनके साहित्य पर दो प्रवक्ताओं, डॉ. उर्मिला व डॉ. पूनम के सम्पादन में पुस्तक 'डॉ॰ आरती 'लोकेश' की साहित्य सुरभि' प्रकाशित हो चुकी है। इन्हें भारत व मॉरीशस सरकार द्वारा सर्वप्रतिष्ठित सम्मान 'आप्रवासी हिन्दी साहित्य सृजन सम्मान' $2000 राशि सहित, 'काव्य विभूषण', 'महाकवि प्रो॰ हरिशंकर आदेश साहित्य सम्मान', 'रंग राची सम्मान', 'शब्द शिल्पी भूषण सम्मान', 'प्रज्ञा सम्मान', 'निर्मला स्मृति हिन्दी साहित्य रत्न सम्मान', 'प्रवासी भारतीय समरस श्री साहित्य सम्मान', 'शिक्षा रत्न' से नवाज़ा गया है। रेडियो 'मेरी आवाज़' द्वारा विश्व की 101 प्रभावशाली महिलाओं में नाम सम्मिलित है।

डॉ. रमा शर्मा
जापान

'भोर'
संरक्षक

डॉ. आरती गोयल
'लोकेश'
दुबई - यू.ए.ई.

'भोर'
वरिष्ठ परामर्शदाता

वरिष्ठ परामर्शदाता मंडल

श्री विनोद दुबे सुप्रसिद्ध गायक, गीतकार, संगीतकार एवं 'मिट्टी-फोक म्यूजिक' संस्था के संस्थापक हैं। आपका जन्म दिनांक ८ मई १९६५ को कानपुर,भारत में हुआ है।

आपने कई टीवी चैनलों के साथ ही दूरदर्शन, ऑल इंडिया रेडियो पर भारतीयता की आत्मा लोक गीत-संगीत एवम भजन प्रस्तुति कर सबके मन को मिट्टी की खुशबू से जोड़े रखा है।

आप अपने यूट्यूब चैनल https://youtube.com/Channel द्वारा अपनी संगीतबद्ध गीतों और भजनों को प्रसारित करते हैं। आपने कई फिल्मों में अपनी सुमधुर उम्दा प्रस्तुति दी है और गीत भी लिखें हैं जिसमें सबसे प्रचलित फिल्म है - गुलाबो-सिताबो(२०२२), शेरदिल, द पीलीभीत सागा, नाम था कन्हैयालाल इत्यादि ।

हाल फिलहाल में आपके द्वारा लिखे और स्वरबद्ध किए गए गीत 'घर आओ मेरो रामा' ने सबको आत्मविभोर कर दिया है।

संपर्क सूत्र:
ईमेल - mittyraga@gmail.com

श्री विनोद दुबे
मुंबई - भारत
'भोर'
वरिष्ठ परामर्शदाता

डॉ. रामा तक्षक एक वरिष्ठ प्रख्यात साहित्यकार, उपन्यासकार, कवि, अनुवादक एवं नीदरलैंड में स्थापित उद्यमी हैं। आपकी हिंदी, अंग्रेजी के साथ साथ डच और इटालियन भाषाओं पर भी अच्छी पकड़ है। साथ ही भारतीय भाषा बोलियों में राजस्थानी, हरियाणवी, ऊर्दू, पंजाबी, बुंदेलखंडी एवम भोजपुरी का उत्तम ज्ञान प्राप्त हैं। आप एक अनुभवी उद्यमी हैं। आपने भारत के बाहर बरसों सेव्यापारिक प्रदर्शनियों में भी भाग लिया है। आपको अब तक तीस से अधिक देशों की यात्रा का अनुभव है। आप भारतीय साहित्य के कई नामचीन आयोजन एवम नीदरलैंडस राजदूतावास के मंचीय गतिविधियों में सम्मिलित हो चुके हैं । भारत प्रवास के दौरान आप स्वयं विश्वविद्यालय के छात्रों से मिलकर उन्हें प्रोत्साहित करते आए हैं ।

आप 'विश्वरंग' नीदरलैंड्स के निदेशक एवं 'साझा संसार' नीदरलैंड्स के अध्यक्ष हैं। साझा संसार, विश्व रंग, भारतीय ज्ञानपीठ, वनमाली सृजन पीठ के संयुक्त आयोजन 'साहित्य का विश्वरंग' के आयोजक हैं। साथ ही 'संस्कृत की वैश्विक विरासत', 'प्रवास मेरा नया जन्म', 'भारतीय मातृभाषाओं का भविष्य' के अंतर्गत आपने कई मंचीय कार्यक्रम द्वारा हिंदी साहित्य एवं भारतीय संस्कृति में अतुल्य योगदान दिया है।

आपकी प्रकाशित पुस्तकें, आलेख हैं - जब मां कुछ कहती मैं सुनता रहता (काव्य संग्रह), हीर हम्मो (उपन्यास), नीदरलैंड्स की चयनित रचनाएं (संपादन), यात्रा संस्मरण एवम कई आलेख, पत्र अनुवाद सम्मिलित है। खबर चुनरिया (उपन्यास) प्रकाशाधीन है।

हिंदी साहित्य एवम संस्कृति को प्रश्रय देने के लिए आप अनगिनत सम्मानों व पुरस्कारों से विभूषित हो चुके हैं। जिनमें, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा पुरस्कार, प्रवासी साहित्यकार सम्मान, हिंदी गौरव सम्मान, साहित्य संस्कृति सेवी सम्मान, विश्व रंग सम्मान इत्यादि अनेकों सम्मान सम्मिलित हैं। 'जब मां कुछ कहती मैं चुप रह सुनता' कविता राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरूणाचल प्रदेश के पाठ्यक्रम में शामिल है।

आप हालैंड से प्रकाशित वैश्विक साहित्य की समावेशी पत्रिका 'साहित्य का विश्व रंग' के सम्पादक हैं। आपके 'हीर हम्मो' उपन्यास को हाल ही में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा 'प्रभा खेतान' पुरस्कार मिला है।

रामा तक्षक
नीदरलैंड
'भोर'
वरिष्ठ परामर्शदाता

संपादक - मंडल

ग्वालियर के मूल निवासी श्री विश्वास दुबे, पिछले एक दशक से भी ज़्यादा समय से यूरोप के विभिन्न देशों में रहे हैं। गत ६ वर्षों से विश्वास जी का निवासस्थल नीदरलैंड्स है, जहाँ ये सॉफ्टवेयर कंपनी में वरिष्ठ पद पर कार्यरत हैं। आप किशोरावस्था से ही भावपूर्ण कविताएं लिख रहे हैं और हिंदी भाषा के प्रचार -प्रसार में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है। पिछले कुछ वर्षों में आपने अनेकानेक काव्य आयोजनों का सफल संचालन, समन्वय और काव्यपाठ कर कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है। कई अंतर्राष्ट्रीय काव्य गोष्ठियां भी आयोजित की हैं और अग्रणी प्रवासी साहित्यकार के रूप में खुद को स्थापित किया है ।

नीदरलैंड्स में 'भारतीय दूतावास, गाँधी केंद्र' द्वारा आपके प्रयासों के लिए आपको सम्मानित भी किया गया है । साथ ही आप 'हिंदी भूषण सम्मान' से भी अलंकृत किए गए हैं।

आपने प्रवासी भारतीयों के तीन काव्य-संग्रहों का संपादन किया है और आपका एकल कविता-कहानी संग्रह पिछले साल २०२३ में प्रकाशित हुई है। इसके अलावा आपकी हिंदी रचनाएँ कई अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं और काव्य संग्रहों में में भी प्रकाशित होती रही हैं। हाल ही में फ़िजी में आयोजित बारहवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की पत्रिका गगनांचल में आपका आलेख प्रकाशित हुआ है। हिंदी भाषा के प्रति आपके विशेष लगाव ने नए एवं उभरते कवियों को अपनी वेबसाइट काव्यांजलि (kaavyanjali.com) के माध्यम से मंच प्रदान करने की अभूतपूर्व शरुआत की है और साथ ही हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन से भी आप सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

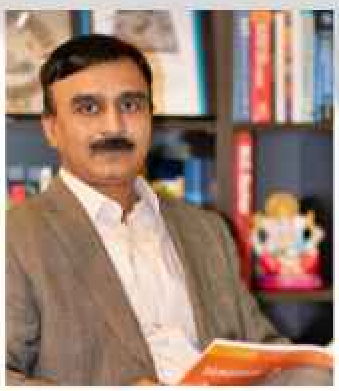

श्री विश्वास दुबे
नीदरलैंड

'भोर'
सह - संपादक

नमिता पाठक, भारतीय मूल की आस्ट्रेलियन नागरिक हैं । ये २००७ से सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) में अपने परिवार के साथ रह रही हैं। कम्युनिटी लीडर, नमिता पिछले १७ वर्ष से 'विजन फॅमिली डे केयर सर्विस" टीम के साथ आस्ट्रेलियन परिवार के बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा एवं देखभाल का महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। आप, एन एस डब्ल्यू सिडनी के डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन विभाग की प्राद्यापिका एवं कई विषयों की प्रशिक्षक भी हैं ।

२००७ से पहले आप आकाशवाणी पटना, भारत (बिहार) की प्रादेशिक समाचार वाचिका एवं साक्षात्कारकर्ता, दूरदर्शन पटना बिहार की भूमिका में रही हैं साथ ही आपने प्रिंट एवं डिजिटल मिडिया के क्षेत्र में, कई प्रतिष्ठित संस्थानों में वर्षों अपना योगदान दिया है । आप विद्यार्थी जीवन से ही सामाजिक कार्यों से जुड़कर बच्चों एवं महिलाओं के विकास का कार्य करती रही हैं, जैसे-स्त्रियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहयोग देना, गरीबी रेखा से नीचे के बच्चों का समूह बनाना और उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना ।

इनके कई उल्लेखनीय कार्य जो संस्मरणीय हैं वो हैं, पुलिस फ़ोर्स एवं यूथ कॉर्डिनेटर प्रशिक्षक (UNDP प्रोग्राम), विमेन एंड चाइल्ड ट्रैफ़िकिंग (यूनाइटेड नेशन डेवलपमेंट प्रोग्राम), आई एच ओ (इंटरनेशनल हेल्थ आर्गेनाईजेशन-वीमेन इम्पावरमेंट एवं कार्यकारिणी सदस्य, दीपयतन (पटना) एवं नेशनल बुक ट्रस्ट (नई दिल्ली)के लिए लेखन एवं अपने विश्वविद्यालय के लिए वाद-विवाद, निबंध, भाषण, अभिनय इत्यादि का सफल प्रतिनिधित्व। इनकी कविता, कहानी,आलेख, लेख, गीत ,संगीत, समीक्षा एवं साक्षातकार, वार्ता एवं व्यंग विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में इंग्लिश एवं हिंदी में प्रकाशित होते रहे हैं। फ़ैमिली डे केयर, ऑस्ट्रेलिया की प्रतिष्ठित पत्रिका (जिगसॉ) ने नवम्बर २०२३ में इनके कार्यक्षेत्र पर आधारित साक्षात्कार प्रकाशित किया है।

नमिता पाठक
ऑस्ट्रेलिया

'भोर'
सह - संपादक

संस्थान कार्यकारिणी मंडल

७१ वर्षीय श्री शिरीष विश्वनाथ तारे पूना, महाराष्ट्र (भारत) से हैं। आप 'शेयर योर ह्यूमैनिटी ग्लोबल प्लेटफार्म' की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं और अपने शब्दों के माध्यम से समूह के सदस्यों का हौसला बढ़ाते रहे हैं। आपने 1976 मे पुणे विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातकोत्तर (M.Sc.) की उपाधि, प्रथम श्रेणी मे हासिल की है। ततपश्चात पाँच साल रसायन विज्ञान में शोध कार्य किया है। सन १९८१ से २०१२ तक आपने 'भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे, महाराष्ट्र' के फिल्म प्रोसेसिंग लैबोरेटरी मे गुणवत्ता नियंत्रण पदाधिकारी के रूप में अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया है।

वर्तमान में आप सेवानिवृत्त ज्येष्ठ नागरिक का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अपने कार्यकाल के दौरान आपने बहुतेरे मराठी नाटक का मंचन किया है एवं छात्रों के विविध प्रोजेक्ट्स में भी अपने अभिनय का कौशल दिखाया है। एफ.टी.आई.आई. को आपने अपने कार्यक्षेत्र के रूप में इसलिए ही चुना था की यहाँ आपको अपनी अभिनय कला पर भी कार्य करने का अवसर मिले। सामाजिक कार्यों में आपने अपनी अभिरुचि को हमेशा महत्व दिया और यथासम्भव मदद करते रहे हैं। इसमें प्रमुख है, स्टाफ असोसिएशन का गठन, कामगार पंत-संस्था, त्यौहार, रक्तदान - शिविर इत्यादि।

पिछले तीन वर्षों से आप 'शेयर योर ह्यूमैनिटी ग्लोबल प्लेटफार्म' में परामर्शदाता के रूप में मंच के विविध कला, साहित्य, काव्य-पाठ, संगीत आदि कार्यक्रमों में इस संस्था की संस्थापिका, मोनी बिजय जी के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं।

श्री शिरीष तारे
पुणे - भारत

'SYH' एडमिन

सुश्री ऐश्वर्या संपन्ना का बचपन, राँची झारखण्ड में व्यतीत हुआ है आपने राँची के प्रतिष्ठित महाविद्यालय से गृहविज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि ली है। इसके अतिरिक्त आपने डिप्लोमा इन कैटरिंग (रांची), एन.टी.टी एवं पी.टी.टी की शिक्षा लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (नई दिल्ली) से प्राप्त की है। पिछले दो दशक से ज्यादा वर्षों में, आपको विवाहोपरांत भारतवर्ष के कई नामचीन राज्यों में अपने परिवार के साथ रहने का अवसर मिला है। इन तमाम खूबसूरत स्थानों से आपने वहाँ के लोगों की भाषा और संस्कृति को सीखने की कोशिश की जिसमें तमिल भाषा को अपनाना और नोएडा निवास के दौरान दिलवाली दिल्ली को मन में समाया भी। वर्तमान में आपका निवासस्थल मुंबई है। आपकी कई रचनाएँ भारत और विश्व स्तर की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। साथ ही आपकी एक साझा संकलन, जिनमे जापान से प्रकाशित 'गूंज उठी हिंदी' का नाम प्रमुख है।

स्वभाव से सौम्य, भावुक, ज्ञान में गंगा वाणी से मधुर ऐश्वर्या जी के सफल संचालन को 'शेयर योर ह्यूमैनिटी ग्लोबल प्लेटफार्म' के कार्यक्रमों में देखा और सुना जा सकता है। आप विशेष रूप से मोनी बिजय जी के मार्गदर्शन में मानवता के इस मंच पर साहित्य से जुड़े कार्यो की सूत्रधार की मुख्य भूमिका में हैं। शेष और विशेष हम इन्हे ई-पत्रिका 'भोर' के माध्यम से जानते रहेंगे।

सुश्री ऐश्वर्या संपन्ना
मुँबई - भारत

'भोर'
सामग्री समन्वयक,
'SYH' एडमिन

सुश्री सुप्रिया श्रीवास्तव मूल रूप से मोतीहारी, पूर्वी चंपारण बिहार - भारत से हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा मोतिहारी शहर से हुई है और आपने राजधानी दिल्ली से वाणिज्य में स्नातक डिग्री प्राप्त की है।

टीवी मीडिया में आपने असिस्टेंट के तौर पर कार्य किया है, साथ ही वित्तीय विभाग मे लेखाकार का कार्य भी किया है । आप गायकी और नृत्य में निपुण हैं और जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सम्मिलित और सम्मानित भी हुई है। आपने मार्शल आर्ट(ताइक्वांडो येलो बेल्ट -1) और कंप्यूटर शिक्षा में डिप्लोमा प्राप्त की है।

आपका स्थाई निवास दिल्ली है जहां आप अपने पति और दो प्यारे बच्चों के साथ रहती हैं । आप ईश्वर पर असीम विश्वास रखती है और उनकी कृपा से मानवतावादी कार्यों में रुचि रखती हैं।

विगत ५ वर्षो से आप शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच की संस्थापक मोनी बिजय के साथ मिलकर कई मानवतावादी कार्य (रक्तदान कार्यक्रम) और सेवा से जुड़े कई अनन्य कार्य, एवम अन्य मंचीय कार्य में भी अपना सहयोग देती आई है ।

हाल ही में आपने अपना यूट्यूब चैनल 'प्रयास' शुरू किया है, जिसके माध्यम से आप लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का प्रयास करती हैं ।

सुश्री सुप्रिया श्रीवास्तव
दिल्ली - भारत
'SYH & SYTC'
एडमिन

स्वभाव से ही मृदु एवं आध्यात्मिक भाव से भरी, संगीता गुहा ठाकुरता भारतवर्ष के कोलकाता राज्य की निवासी हैं। इन्होंने पंडित अजय चक्रवर्ती के मार्गदर्शन में भारतीय शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा ली है और स्वयं को एक गायिका के रूप में प्रतिष्ठापित भी किया है। आपने अपनी पहचान कोलकाता के कई एक प्रसिद्ध डिजिटल मिडिया में बंगाली सूत्रधार एवं स्वर कलाकार के रूप में भी स्थापित किया है । संगीत के प्रति समर्पित परिवार की, संगीत प्रेमी संगीता गुहा ठाकुरता जी ने स्नातक की शिक्षा कला एवं स्नातकोत्तर व्यवसाय प्रबन्धन (बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) में किया है, साथ ही आपने कंप्यूटर में डिप्लोमा और डिग्री लिया हैं।

आपने १४ वर्षों तक कोलकाता के एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में मानव संसाधन प्रबंधक के रूप में काम किया है और गत ४ वर्षों से आप अपने परिवार के व्यवसाय, 'इवेंट्स और एंटरटेनमेंट' से जुडी हुई हैं ।

आप 'शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच' से विगत ४ वर्षो से एडमिन रूप में जुड़कर सेवा और संगीत से जुड़े अनन्य कार्यों में मंच का साथ दे रही हैं ।

गीत और संगीत के अलावा आपके शौक हैं, मानवता के क्षेत्र में आगे आना,यात्रा करना, पुस्तकों को पढ़ना, नृत्य करना और विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाना ।

संगीता गुहा ठाकुरता
कोलकाता - भारत
'SYH & SYTC'
एडमिन

संपादकीय कलम से....

मोनी कहती है..

मोनी बिजय(मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
ललितपुर,काठमांडू-नेपाल
लेखिका, संस्थापक, संरक्षक ,प्रधान संपादक एवं पत्रिका डिजाइनर

भोर

अस्तित्व का उदय भोर की पहली किरण के साथ ही प्रारंभ होती है । युद्ध और अमानवीय कृत्यों के कोलाहल के बीच मानवता के माधुर्य प्रस्फुटित करता भोर, स्वार्थलत और कुबुद्धि मस्तिष्क के भीतर भी बहने को आतुर हो उठे ज्ञान-प्रकाश की भोर । साहित्य-संगीत-कला-संस्कृति के माध्यम से शुरु होता मन के मैल के धोने का आरंभ करता भोर । शिक्षित, सात्विकता, सुसंकृत और हृदय में उठते प्रेम के बोध का भोर । 'सुबह के पावन भोर' की तरह जब पूरा जग अपने मन को भी साफ करने लगेगा तो पूरा विश्व कितना सुहावन, पवित्र और पावन हो जाएगा।

आज के युग में जहाँ धन, शक्ति का उपयोग सिर्फ़ जीवन व्यवस्थित करने के लिए नही हो रहा बल्कि उसको ही अपना जीवन मान लेनेवाले के मस्तिष्क पर मोटी परत बनकर चढ़ चुका है, ऐसे में नैतिकता, सकारात्मकता , सफलता के सही मायने, मानव जीवन मे श्वास और प्रकाश बनकर स्पंदन कराने आया है --- भोर।

धन ज़रुरी है जीवन जीने के साधन जुटाने में , किंतु आपका जीवन सधा और सुव्यवस्थित तभी होगा जब आपका अंतर्मन प्रकाशित रहेगा।

कुछ इन्हीं कारणों से शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच का उद्भव हुआ और विगत 5 वर्षो से हमारे नन्हें कदम लगातार सेवा, साहित्य, संगीत, स्वास्थ्य-जागरुकता, पर्यावरण-संरक्षण, पशु-पक्षी, रचनात्मक कार्यों, बच्चें-बड़े, युवा, महिलाएं सबके साथ पुरे विश्व में अपने कार्यों द्वारा, संदेश द्वारा, सहयोग द्वारा, विभिन्न कार्यक्रमो द्वारा कोशिश कर रहा है, सुनहरी मानवता की भोर सबके साथ बांटने की ।

अब एक कदम और आगे बढ़कर हमने हिंदी ई पत्रिका 'भोर' का अनावरण किया है, ताकि इस शुभता और सात्विक कार्यों को पूरे विश्व में प्रसारित किया जाए। इस शुभ कार्य में मेरे साथ अनेकों हाथ जुड़े हैं और सभी समाज में होनेवाले गतिविधियों पर अपनी कलम चलाकर समाज को जागृत कर रहे हैं। जैसा हमारा मंच है- मानवता सर्वोपरि वैसे ही यहां भी हर वर्ग,धर्म, व्यक्ति, भाषा का समान आदर है। मातृभाषा हिंदी हमें बहुत ही सरल-सहज और मन के उदगार को अच्छे से व्यक्त करने में मदद करती है इसलिए हमने इस भाषा को माध्यम बनाया है। सभी लेखकों का आदर के साथ स्वागत है और हमारे सभी पाठको से अनुरोध है कि वह अपनी प्रतिक्रिया देकर भोर की रौशनी में किरण बनकर मदद करें। इस प्रवेशांक में जनवरी-फरवरी-मार्च माह के विशेष दिनों पर भी आपको आलेख, कहानी, कविता पढ़ने को मिलेंगे, साथ ही हमारे नन्हें पौधों (बाल-गुंजन) ने भी खिलकर इस भोर की रौशनी बढ़ाई है। इस अंक में हमने बहुत सारे विषयों को छुआ है, और अभी भी बहुत सारे विषय (मनोरंजन, हंसी का फव्वारा, रसोई, संवाद इत्यादि) प्रतीक्षारत हैं - भोर के अगले अंक के लिए।

आप सभी को इस तिमाही अंक में पड़ने वाले सभी पर्व-त्यौहार(गणतंत्र दिवस, शिवरात्रि, होली, रमजान मुबारक) तथा अन्य सभी धर्म के पर्व-त्यौहार के लिए अंनत शुभकामनाएँ !!

आशा है, आप सभी को यह अंक पसंद आएगा। हमें इंतजार है आपकी प्रतिक्रियाओं का।

धन्यवाद।

संरक्षक की अनुभवी नजर से...

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

वरिष्ठ साहित्यकार, सम्पादक, पत्रकार, संरक्षक ('भोर' ई-पत्रिका)

काश ऐसा कभी हो सके
आदमी आदमी हो सके..!

यूँ तो वर्तमान समय में दो बड़े युद्ध चल रहे हैं जिनमें एक युद्ध को 2 वर्ष से हो चुके हैं और सौ दो सो साल पीछे जाएं तो सैकड़ों युद्ध होने का का इतिहास मिलेगा। देश से देश का युद्ध, या एक ही देश में राज्यों के आपसी युद्ध ।

किंतु एक युद्ध ऐसा भी ही जो तब से लड़ा जा रहा है जब से मनुस्य इस धरती पर आया। और वो युद्ध ऐसा है जिसमें पूरे विश्व का प्रत्येक मनुष्य शामिल है और वो है मनुष्य के शरीर में जो मनुष्य दिखता है, उसका सचमुच मनुष्य होना --!

सचमुच मनुस्य होना यानी कि उसमें मानवीयता की उपस्थिति होना !

लाखों वर्षों से चले आ रहे इस युद्ध में एक ओर हैं लालच, घृणा, हिंसा, क्रूरता, दमन ,शोषण,अन्याय अत्याचार जैसी प्रवृतियां तथा एक ओर हैं प्रेम, करुणा, त्याग,बलिदान,परोपकार, सहयोग, सहिष्णुता जैसी प्रवृत्तियाँ ।

इस युद्ध में साहित्य की विशिष्ट भूमिका रहती है जो मनुष्य की मनुष्यता को सुरक्षित रखने में सहायक होता ही? 'भोर' पत्रिका भी अब मानवीयता के संरक्षण के लिए अनेक साहित्यिक विधाओं के अस्त्र शस्त्र लिए उसी युद्ध क्षेत्र में उतर रही है जहाँ पाठकों की भावनाओं, संवेदनाओं को जागृत कर, उनकी विचारशीलता और चेतना को विकसित कर हर प्रकार की नकारात्मक प्रवृत्तियों को पराजित करने का संघर्ष जारी है!

'भोर' पत्रिका अपनी यात्रा में बहुत दूर तक जाएगी ऐसी अपेक्षा है ।

डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ साहित्यकार, सम्पादक,
संस्थापक ' साक्षी है शब्द ',
संरक्षक एवं ('भोर' पत्रिका)

शुभकामना -पत्र

प्रिय मोनी,

तुम हमेशा चौंकाती हो. अपने कामों से, अपने नवाचारों से.... इस बार भी चौंकाया है। ये कोई नई बात नहीं है। तकरीबन तीन सालों से मैं तुम्हें इतना तो जान पाया ही हूं।

ई-पत्रिका 'भोर' तो न जाने कब से तुम्हारे ख़्वाबों में, ख़यालों में, सोते-जागते तुम्हारी आंखों में बसा था। इसकी उजास तुम्हारी बातों में तब दिखाई देती थी जब इस अवधारणा पर कुछ कहते हुए तुम्हारे शब्द पिघलने लगते थे। आसान नहीं है ये करना, पर तुम्हीं कर सकती हो। तुम्हारी जिजीविषा, तुम्हारी लगन, तुम्हारा धैर्य- इन सबने तुम्हें मज़बूत बनाया है; वरना एक पराये देश में दो-दो मासूम बच्चों के साथ, पति के हाथों को मज़बूत करते हुए, सालों बाद ये पता चले कि अब यहां, इस देश में कुछ नहीं रखा है, ये ज़मीन हमारी नहीं है, मकां हमारा नहीं है, ... और वहां से लौटकर, अपनी ज़मीन पर आकर नये सिरे से घर-गृहस्थी, रोज़ी-रोज़गार खड़ा करना कहीं से भी आसान नहीं था। पर तुमने किया, बहुत अच्छे से किया- पत्नी, मां, बहन, बेटी- सभी भूमिकाओं में तुम खरी उतरीं । ये तुम्हारे सच्चे और अच्छे मनुष्य होने का प्रमाण है।

इसीलिये तुमने अपने मंच का नाम रखा- 'शेयर योर ह्यूमैनिटी'- यानी अपने अंदर की मानवता को बाटें, लोगों तक पहुंचायें....। एक अच्छे उद्देश्य से शुरु हुआ तुम्हारा ये मंच आज समाज के सभी उम्र और वर्गों के लिये पूरी तरह समर्पित है। इस मंच के माध्यम से तुमने सबको आकाश छूने का मौक़ा दिया। उरूज़ पर रहने के बावजूद तुमने अपने क़दम मज़बूती से धरती पर टिकाये रखा। सबको भरपूर सम्मान, स्नेह और प्यार दिया।

तुमने अपने बहिनापे के जिस रेशमी डोर से मुझे बांध रखा है, उस नाते मैं अक्सर कुछ छूट ले लेता हूं। अब देखो न, तुमने 'संरक्षक की क़लम से...' कब मांगा था और मैं अकिंचन कब दे रहा हूं।

लिखना तो बहुत कुछ था, पर तुम्हारी 'भोर' की उजास को अपने व्यर्थ के शब्दों से भरकर कम नहीं करना चाहता। अंत में बस इतना ही कि 'भोर' लोगों की आंखों में रहे, इन्द्रधनुष-सा आकाश में चमके.... और मोनी विजय अपने इन्हीं तरह के नवाचारों से सबके दिलों में धड़कती रहे... चौंकाती रहे.... आमीन...।

संरक्षक की अनुभवी नज़र से...

डॉ. रमा शर्मा
बरिष्ठ साहित्यकार, सम्पादक,
संस्थापक 'हिंदी की गूंज',
संरक्षक ('भोर' पत्रिका)

शुभकामना -पत्र

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी की गूंज

शुभकामनाएँ

मोनीबिजय .. जो वर्षों तक दोहा क़तार में रहीं और अब अपने वतन नेपाल में आकर अपनी लगन और मेहनत से सब को अपने रंग में रंगती जा रहीं हैं, उन्हें भोर की शुरुआत करने की बहुत बहुत बधाई । मैं तो उन्हें दुर्गा माँ का साक्षात अवतार मानती हूँ और मेरी बात का प्रमाण आपको शेयर यूअर ह्यूमैनिटि SYH का मंच देख कर चल जायेगा और अब उनके कदम भोर की ओर बढ़े हैं । घर , बच्चे सभी की ज़िम्मेदारी को निभाते हुए मानवता के लिये इतना समर्पण होना ही अपने आप में कामयाबी का प्रतीक है ।

मोनी चाहे क़तार में रहे चाहे नेपाल में या भारत में लेकिन उसका मन सब की सहायता के लिये सदा ललकता है और वो अपने इस अल्हड़ मन की सुनतीं भी हैं , तभी तो भोर भी अब मोनी से निवेदन कर रही है कि मुझे आने की आज्ञा दें ।

हर रात के बाद भोर होती है, कितना सार्थक नाम दिया है पत्रिका को मोनी ने । मेरी तहेदिल से शुभकामनाएँ और आशीर्वाद है मोनी की भोर को ।

मोनी तुम्हें तुम्हारी साहित्यिक , समाजिक सभी उपलब्धियों पर बहुत बहुत बधाई ! मैं तो यह कहना चाहूँगी कि तुम्हारे शब्दों में, तुम्हारी अंदर की ताक़त की एक मनमोहक कशीदाकारी सी बुनी है, जो रचनात्मकता ने एक अमिट छाप छोड़ रही है दुनिया के हर कोने पर । तुमने SYH से बहुत लोगों को एक मंच दिया है और अब भोर से एक नई शुरुआत से अपनी मेहनत और लगन का नया बिगुल बजाया है। ईश्वर करे इस बिगुल की आवाज़ दुनिया के हर कोने में पहुँचे ।

दिल से शुभकामनाएँ और आशीर्वाद

रमा शर्मा, जापान

संरक्षक एवं मुख्य संपादक

हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

टोक्यो जापान

4 March 2024

Japan :- +81 8070067270

India :- +91 9289641577

hindikeegoonj@gmail.com
ramaajay.jp@gmail.com
Ramaajay Sharma
@ramaajay

ramaajays
Ramaajay Sharma
Tsukuba Shi Ibaraki
ken Japan 〒 305-0045

नमिता पाठक
सिडनी ऑस्ट्रेलिया

लेखिका, कवयित्री, कम्यूनिटी लीडर
(विजन फैमिली डे केयर सर्विस) ,
सह-संपादक (SYH - भोर, ई-पत्रिका)

विश्व मातृभाषा दिवस

माँ बोली बिहारी हिंदी, जी हाँ मेरी मातृभाषा बिहारी हिंदी है जो देवनागरी लिपी में लिखी जाने वाली और देववाणी के रूप में सुनी जानेवाली कभी अंगिका, मैथिली,भोजपुरी, मगही वज्जिका या फिर कहूँ की कभी बेगुसरैया हिंदी, मुँगेरिया, दरभंगिया तो कभी भोजपुरिया है और इन सभी का सार कहूँ , तो वो है अपनी पटनियां हिंदी।

जी अतिश्योक्ति नहीं है ये, किंचित मेरी और मेरे जैसियों की पहचान है, हमारी अपनी मातृभाषा । सोचती हूँ, वो कौन होंगे, जिन्हे अपनी मिट्टी से प्रेम नहीं होगा और अपनी संस्कृति पर गर्व नहीं ? वो कौन होंगे, जिनकी हथेली पर उनके अपने भगवान नहीं होंगे और जिनकी दंतपक्तियों में उनकी अपनी मातृभाषा की कटकटाहट नहीं होगी? वो सचमुच कौन लोग होते होंगे, जिन्होंने अपनी कला, भाषा, बोली, लोक और समाज के दु:ख- सुख को अपनी हथेली की थपथपाहट नहीं दी होगी और उस प्रेम के अलाव को अपने ह्रदय में जलता हुआ महसूस नहीं किया होगा? शायद कोई भी नहीं, क्योंकि मैं मानती हूँ की अपनी भाषा और संस्कृति से सभी को अविरल प्रेम होता है ।

क्या आप जानते हैं, की अपनी बोली और मातृभाषा के प्रति इसी लगाव ने विश्व पटल पर एक अलग देश को जन्म दिया और उस देश का नाम है 'बांग्लादेश'। १७ नवंबर, १९९९ को यूनेस्को (यूनाइटेड नेशन एजुकेशनल साइंटिफिक एंड कल्चरल आर्गेनाईजेशन) ने मातृभाषा के लिए हुए इस आंदोलन की महत्ता को स्वीकार किया एवं विश्वस्तर पर इसे मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने की अपनी स्वीकृति २१ फ़रवरी सन २००० को दे दी। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है, कि विश्वभर के लोग अपनी भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता को पहचानें, गर्व महसूस करें और अपनी विलुप्त होती भाषाई संस्कृति की धरोहर को अपने वचन एवं कर्म से बनाए एवं बचाए रखें ।

"किमप्यस्ति स्वभावेन सुन्दरं वाप्यसुन्दरम् , यदेव रोचते यस्मै तद्भवेत्तस्य सुन्दरम्।" हितोपदेश से उधृत इस श्लोक का अर्थ है, की किसी भी वस्तु की सुन्दरता का कारण उसका बाहरी आवरण नहीं बल्कि उसका आत्मीय एवं भावनात्मक रूप होता है, उसके इसी भाव से व्यक्ति को प्रेम होता है और वही उसको सुन्दर प्रतीत होती है। मातृभाषा से प्रेम भी बिलकुल इसी तरह से है जिसे बोलने, सुनने और समझने के लिए हमें किसी शब्दकोष की जरुरत नहीं होती, बस प्रेम से बोलना और धैर्य से सुनना आना चाहिए ।
इसी तरह एक लेखक की कलम के लिए,भाषा के आकार -विकार एवं व्याकरण का ज्ञान होना जरुरी है जैसे ,स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, एकवचन, द्विवचन, बहुवचन और नपुंसक वचन इत्यादि को जानना और उसे पाठकों की दृष्टि से स्वंय ही आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ना और फिर सम्प्रेषित करना ।
अब अगर आप अपनी मातृभाषा / राष्ट्रभाषा से प्रेम करते हैं तो नि:संदेह आपका अपनी संस्कृति से भी वही अनुराग होगा। आप स्वतंत्र होकर उसी विषय को चुनेंगे जिसपर आपकी गहरी पकड़ है और लिखेंगे अपने मन की बात जो दूर तक आपकी मातृभाषा के प्रेम का परचम लहरा सके।

आदरणीय मोनी जी की परिकल्पना और अंतरिम देखरेख में नेपाल से प्रकाशित यह 'पत्रिका भोर' आपकी अपनी पत्रिका है। आप पढ़े- पढ़ाएँ, सुने सुनाएँ और हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराते रहें, साथ ही अगर आप भी इस पत्रिका में अपना योगदान देना चाहते है तो हमें bhorsyh@gmail.com संपर्क करें ।

आप सभी से अनुरोध है की अपनी -अपनी मातृभाषा से स्नेह करें , उसे उपयोग में लाएं और दूसरों की मातृभाषा का भी आदर करें और एक -दूसरे को भरपूर सहयोग करें, अपनी भाषाई धरोहर को सहेजने में । इस अंक में बस इतना ही , शेष अगले अंक में।

सह - संपादक द्वारा 'आलेख' ...

विश्वास दुबे
नीदरलैंड्स
लेखक,संपादक, सॉफ्टवेयर प्रोफेशनल,
सह-संपादक (SYH-भोर, ई-पत्रिका)

सोशल मीडिया - समाज का आइना

सोशल मीडिया समाज का आईना है-जो व्यव्हार और परिवर्तन समाज में हो रहे हैं वही सोशल मीडिया पर देखने को मिलता है। यहां आपको तरह-तरह के किरदार और उनके अलग-अलग व्यवहार देखने को मिलते हैं और जितना आप इसको गौर से देखेंगे, समझेंगे उतने ही रोचक आयाम नज़र आएंगे।

इस लेख में मैं अपने कुछ अवलोकन और अनुभव साझा कर रहा हूँ जो शायद आपने भी देखा होगा और उससे जुड़ पाएंगे। यूँ तो सोशल मीडिया के कई प्लेटफार्म उपलब्ध हैं और उन सब में लगभग समान ही व्यवहार देखने को मिलते हैं, पर इस लेख के लिए हम फेसबुक और व्हाट्सएप का उदाहरण ले लेते हैं।

जिस तरह हम अपने जीवन के सफर में दोस्त-यार बनाते चलते हैं, उसी तरह सोशल मीडिया पर दोस्त बनते जाते हैं और फिर उन्ही दोस्तों की विभिन्न प्रकार और वर्ग - कुछ बिल्कुल जिगरी दोस्त होते हैं, आप कैसी भी पोस्ट डालें, कितनी भी साधारण या खराब क्यों ना हो उनके लाइक्स और कमेंट्स पक्का आते हैं ।

दूसरा समूह ऐसे मित्रों का है जो आपकी पोस्ट पर यदाकदा आकर अपनी उपस्थिति दर्ज करते रहते हैं ताकि व्यवहार बना रहे ।

इन सब से हटकर एक और वर्ग है जो अदले के बदले पर विश्वास करता है-अगर आपने उनकी पोस्ट लाइक करी या कमेंट किया तो वह तुरंत आपकी ताजी और पुरानी सभी पोस्ट पर प्रतिक्रिया दे जाते हैं और फिर गायब - अदले का बदला इससे ज्यादा और कुछ नहीं ।

इन सब से हटकर एक और वर्ग है जो सोशल मीडिया पर होकर भी नदारद हैं, ये खुद भी कोई पोस्ट नहीं करते और आपकी किसी भी पोस्ट पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देते। इनके लिए आप कई बार यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि वह क्यों हैं आपकी मित्र सूची में। यह वह लोग हैं जो आपके मित्र सूची में छिपे रहकर आपके जीवन में क्या हो रहा है, आप क्या बताना चाह रहे हैं, चुपचाप देखते रहते हैं । कभी प्रतिक्रिया नहीं देते बस उत्सुकता वश देखते रहते हैं । कभी सोचिएगा - जो आपकी पोस्ट पर प्रतिक्रिया ना दे शायद उन्हें आपकी पोस्ट अच्छी ना लगी हो, आपकी प्रोफाइल पिक्चर तक को लाइक ना करें शायद आपकी शक्ल पसंद नहीं और तो और आपके जन्मदिन पर आपको शुभकामना तक ना दे , उनका आपकी मित्र सूची में होने का क्या फायदा। यह समाज का वह वर्ग है जिसे पूरी पंचायत है, उत्सुकता है ये जानने की कि आपकी जिंदगी में क्या-क्या हो रहा है पर छुप कर...

अब जिक्र करते हैं सोशल मीडिया पर की जाने वाली पोस्ट की । अलग-अलग आयु वर्ग के लोगों की सोशल मीडिया पोस्ट भी अलग-अलग होती हैं, जरूर कुछ अपवादों के साथ । प्रायः बहिर्मुखी लोग सामाजिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से संलग्न होते हैं पर सोशल मीडिया पर कई अंतर्मुखी भी सक्रिय रहते हैं।

अधिकांश पोस्ट यहाँ वो है जिसके माध्यम से सभी बहुत सुंदर, प्रसन्न, संपन्न और समझदार नजर आना चाहते हैं - वे नयी नयी जगह घूम रहे हैं, लोग उन्हें पुरस्कार दे रहे हैं, पार्टियां हो रही हैं और समाज में उनकी प्रतिष्ठा प्रतिदिन बढ़ रही है ।

लोगों की पोस्ट से उनके बारे में आप काफी कुछ अंदाजा लगा सकते हैं - कुछ लोग सोशल मीडिया पर अपनी रोजमर्रा की हर छोटी-बड़ी बात को साझा करते हैं जैसे आज क्या खाया , क्या पहना, कहां गए, किससे मिले, क्या देखा इत्यादि। उन्हें यह अपनी ड्यूटी लगती है कि वह अपने जिंदगी की होने वाली हर छोटी-बड़ी बात को सोशल मीडिया पर साझा करें, जैसे उनके पाठकों के पास उनकी जिंदगी के बारे में जानने के अलावा कोई काम नहीं है। अधिकांश मामलों में ऐसे लोग निजी ज़िन्दगी में बहुत अकेले होते हैं।

फिर कुछ ऐसी पोस्ट करने वाले हैं जो सिर्फ तभी पोस्ट करते हैं जब वे किसी बड़ी हस्ती से या किसी नामचीन कलाकार, शख्सियत से मिले, सिर्फ वह खबरें साझा करने आते हैं और फिर गायब । यह वह लोग हैं जिनकी जिंदगी का हासिल यह है कि वह कुछ बड़े लोगों को जानते हैं। अब कुछ की तो सही पहचान होती है पर जिनकी नहीं होती वे भी जैसे तैसे फोटो खिंचवा कर पोस्ट डाल देते हैं कि फलां फलां से गहरी चर्चा हुई । सोशल दवाब के चलते कुछ लोग कहीं न कहीं से किसी प्रसिद्ध हस्ती के शुभकामना सन्देश का प्रबंध कर लेते हैं - आजकल तो कई सशुल्क सेवाएं हैं जहाँ कुछ सौ देकर फ़िल्मी सितारों से शुभकामना सन्देश लिए जा सकते हैं, ए.आई. के युग में और भी आसानी है। इनकी ऐसी पोस्ट पर इनके मित्रों के लाइक, कमेंट्स की बहार भी आ जाती है ।

कुछ यहां अपनी रुचि/कला प्रदर्शन करने आते हैं जैसे चित्रकारी, लेखन, संगीत-गीत इत्यादि। उनकी पोस्ट के एकमात्र ध्येय है ये सबको बताना कि वे कितने बड़े कलाकार या साहित्यकार है। अब सामाजिक व्यवहार के चलते उनके जो प्रिय मित्र हैं उनको तो हमेशा ही उनकी प्रस्तुति को लाइक-कमेंट-शेयर करना होता है फिर चाहे प्रस्तुति अच्छी हो या ना हो, और वैसे भी आप इस पर बहस नहीं कर सकते क्यूंकि अच्छा लगना व्यक्तिगत और निजी मामला है।

सोशल मीडिया - समाज का आइना

कुछ ऐसे हैं जिन्हे सिर्फ ये बताना है कि संसार के सबसे बड़े ज्ञानी वही हैं, वे कैसे सबसे अलग है - मान लीजिए सभी लोग एक दूसरे को 'विश्व पर्यावरण दिवस' या 'वैलेंटाइन डे' या 'विश्व हिंदी दिवस' इत्यादि की बधाई, शुभकामनाएं दे रहे होते हैं, तभी ये महानुभाव लीग से हटकर ऐसा कुछ लिख देते हैं कि पर्यावरण या प्रेम या हिंदी का कोई एक दिन नहीं हो सकता है इसके तो सारे ही दिन है। या ये किसी की पोस्ट पर बताते हैं कि कहाँ मात्रा की त्रुटि है या भाषा की गड़बड़ी है और इस तरह बुद्धिमत्ता झलकाने की कोशिश। ये है 'फूफा' केटेगरी जिनका एकमात्र ध्येय है रूठना, कमी निकाल कर समझदारी दिखाना।

पिछले कुछ सालों में सोशल मीडिया का प्रभाव डिजिटल दायरे से आगे बढ़ गया है और लोगों के दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, विशेषकर युवाओं में। ये लोग सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर हद से ज्यादा समय बिताते हैं। इनके लिए सोशल मीडिया ही असल ज़िन्दगी बन गया है। लोगों की इसी बढ़ती हुई प्रवृत्ति की वजह से सोशल मीडिया मार्केटिंग का एक बहुत सक्षम साधन बनता जा रहा है। अपने आप को, अपने विचारों को, अपनी कला या अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने, प्रचार करने के लिए सोशल मीडिया शक्तिशाली और सक्षम माध्यम बनता जा रहा है।

सोशल मीडिया ने एक समानांतर अलग दुनिया रच दी है जिसमें कई नए सेलिब्रिटीज उत्पन्न हो गए हैं। ऑनलाइन माध्यम होने के कारण विस्तार और पैठ यहां ज्यादा है तभी पारंपरिक सेलिब्रिटी से बढ़कर या उन्हें टक्कर देते हुए कई नए सोशल मीडिया सेलिब्रिटीज उत्पन्न हो गए हैं। प्रसिद्धि पाना यहाँ तुलनात्मक रूप से आसान भी है। जिन पारंपरिक प्रसिद्ध व्यक्तियों ने सोशल मीडिया चैनल को अपनाया वे इस दौड़ में अभी हैं पर जो सोशल मीडिया से दूर रहे, समय के साथ नहीं चल पाए वह अब इन सोशल मीडिया सेलिब्रिटी से पिछड़ते जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर इन्हें 'इनफ्लुएंसर' (प्रभावक) भी कहा जाता है। ज्यादा लोगों तक उनकी पहुंच है और वे अपनी प्रामाणिकता और पहुंच के माध्यम से दूसरों को समझाने के लिए जानकारी साझा कर सकते हैं। अतः यहां इनफ्लुएंसर बनने की होड़ लगी हुई है। इनफ्लुएंसर जताते हैं कि उनकी फलां पोस्ट कैसे हज़ारों-लाखों लोगों ने सराही है और ज्यादा लोग उनसे जुड़ रहे हैं। ये आपको लुभाते हैं, निवेदन करते हैं कि आप भी उनसे जुड़ें और उनके इनफ्लुएंसर बनने में आज सहयोग दें, ताकि कल वो आपके समझायेंगे और प्रोत्साहन देंगे कि ज़िन्दगी में क्या करना हैं और कैसे बड़ा बनाना है और शायद इसके आपसे वे पैसे भी लेंगे।

मार्केटिंग में कोई बुराई नहीं है पर कुछ लोग आकर्षक और भ्रामक समाचार प्रसारित करने, सामाजिक गतिशीलता को नियंत्रित करने और प्रभावित करने के लिए सोशल मीडिया में हेरफेर करते हैं, चाहे फिर वो दुर्भावनापूर्ण क्यों न हो। सोशल मीडिया ने ध्रुवीकरण को और आसान कर दिया है। अगर घर बैठे ऑनलाइन ऐसी जानकारी प्राप्त होगी जो लोगों की अपनी मान्यताओं को दोहराती है तो उनकी राय और अधिक चरम बन जाती है। परिणामस्वरूप, यह तर्कहीन निर्णय लेने की प्रक्रिया और प्रवृत्ति बढ़ती है और भ्रामक सामग्री का प्रसार, ध्रुवीकरण में योगदान देता है। लोगों में जानकारी खोजने और उसकी व्याख्या करने की स्वाभाविक आदत होती है। अगर सोशल मीडिया उनकी मौजूदा मान्यताओं को मान्य करता है तब पूर्वाग्रह और बढ़ जाता है। खासकर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर वे गुमनाम रह कर भी सक्रिय रूप से ऐसी सामग्री या लेख, खोज और बाँट सकते हैं।
सोशल मीडिया एक दोधारी तलवार है। एक ओर ज्यादा से ज्यादा लोगों से जुड़ना, लोगों तक अपनी बात पहुंचाना अब बहुत आसान हो गया है, नई-नई जानकारी साझा करने के लिए यह एक शक्तिशाली उपकरण हो गया है। वहीं दूसरी ओर अनैतिक व्यवहार, ध्रुवीकरण, ऑनलाइन उत्पीड़न और अभद्र भाषा को बढ़ावा भी इसने दिया है।

पर यह तो हमारे समाज में हमेशा से ही रहा है - सिक्के के दो पहलू। यह हम पर निर्भर है कि हम सजग रहते हुए इसके नकारात्मक परिणामों को कम करने के लिए इसकी सकारात्मक क्षमता का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

ऐश्वर्या संपन्ना
मुम्बई - भारत

लेखिका, समाज सेविका, SYH सचिव एवं भोर पत्रिका समन्वयक

यूं तो महिला दिवस मनाने की हमें कोई जरूरत नहीं है क्योंकि हर दिन महिलाओं का ही है । बिना इनके सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मुझे जैसा लगता है, क्या सिर्फ एक दिन महिला दिवस मनाना महिलाओं को सम्मान देने का प्रतीक है? आज की महिला किसी पहचान की मुहताज नहीं हैं।

भारतीय संस्कृति में तो हमेशा महिलाओं को देवी तुल्य माना गया है। कितनी ही विदूषी महिलाऐं जैसे रोमाला, घोषाल, सूर्या, अपाला, विलोमी, सावित्री, यमी, श्रद्धा, कामायनी, विश्वम्भरा, देवयानी आदि के नाम आते हैं जिन्होंने पुरूषों की भांति वेदों का ज्ञान प्राप्त किया और उन्हीं की तरह सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में प्रतिभागी बनीं ।

कालांतर में जब देश परतंत्र हो गया उस समय महिलाओं की स्थिति में काफी गिरावट आई, पर विषम परिस्थितियों में भी रानी दुर्गावती, बेगम समरू, जीजाबाई इत्यादि जैसी वीरांगनाएं हुई।

स्वतंत्रता के बाद महिलाओं में जागरूकता आई और समय के साथ-साथ उनकी स्थिति में सुधार आया। आज की महिला आत्मविश्वासी हैं और घर - बाहर दोनों बखूबी से संभाल रही हैं।

आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रहीं हैं, इसका ज्वलंत उदाहरण है -चंद्रयान 3 । इस मिशन में महिला वैज्ञानिकों ने इसकी सफलता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज की महिलाएं जागरूक हैं अपने अधिकार के लिए लड़ना जानती हैं । ये जागरूकता हम हर वर्ग में देख सकते हैं। महिलाओं के कार्य करने का दायरा बढ़ा है। अब कोई भी क्षेत्र महिलाओं से अछूता नहीं रह गया है। इन सब में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। एक शिक्षित महिला सिर्फ अपने परिवार के लिए ही रीढ़ की हड्डी नहीं होती बल्कि समाज और देश के लिए भी रीढ़ की हड्डी साबित होती है।

नारी तुम महान हो
सहनशीलता की मिसाल हो
विषम परिस्थितियाँ हों
या स्थिति अनुकूल हो
हर रंग में तुम बेमिसाल हो ।।

गीत एवम मुक्तक

श्री विनोद दूबे

सुप्रसिद्ध गायक,गीतकार (गुलाबों सिताबो फेम) , संगीतकार एवम "मिट्टी फ़ोक म्यूजिक" संस्था के संस्थापक और 'भोर' पत्रिका के वरिष्ठ परामर्शदाता
मुंबई महाराष्ट्र भारत

शूरवीर दृष्टि रख स्वयं की चाल पर..

शूरवीर दृष्टि रख स्वयं समय की चाल पर,,,,,,,,,,
शूरवीर दृष्टि रख स्वयं समय की चाल पर,
जीत लिख अमिट अनादि काल के कपाल पर।
ठान लेगा पाएगा ना कोई आड़े आएगा ,
मत उलझ तू आज जीत हार के सवाल पर।
शूरवीर दृष्टि रख स्वयं समय की चाल पर,
जीत लिख अमिट अनादि काल के कपाल पर।
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही सर्वयोग्य है,
वंदनीय वसुंधरा ना कायरों के भोग्य है।
साहस ही करेगा नृत्य तांडव की ताल पर।
शूरवीर दृष्टि रख स्वयं समय की चाल पर,
जीत लिख अमिट अनादि काल के कपाल पर।
अजेय बन तू आत्मन सत्य का वरन् करे ,
राम धनु कृष्ण चक्र उठ परशु फरस धरे।
खुल त्रिनेत्र बन त्रिकालजो स्वयंभू भाल पर।
शूरवीर दृष्टि रख स्वयं समय की चाल पर,
जीत लिख अमिट अनादि काल के कपाल पर।

विनोद दुबे मिट्टी फोक म्यूजिक

दरियाव सिंह राजपूत 'ब्रजकण'

कवि, लेखक, संपादक, समीक्षक
जन्म: वृंदाबन (मथुरा) उ.प्र.
वर्तमान: मोदीनगर. २०१ २०४.
शिक्षा: एम.ए. हिंदी, समाज शा.

सखियाँ रगड़ीं खूब

कान्हा तेरे मिलन की, सखी निहारें वाट।
लाल, हरी, पीरी करीं, मनूआ खाय उचाट।।
मनूआ खाय उचाट, टीस तुम दै गए भारी।
सखियाँ रगड़ीं खूब, विशाखा दै रही गारी।।
ग्वाल बाल छरछन्द, खेलिवे होरी आना।
दूध छटी कौ याद, तोय करवाइ दें कान्हा।।

२.

गोरे ते कारे भये, ऐसे रिगड़े गाल।
रँग, गुलाल ऐसे चटक, जमुना है गई लाल।।
जमुना है गई लाल, न छूटै साड़ी कौ रँग।
कसक रही है देह, पोरूआ,दूखै अंग अंग।।
कह "ब्रजकन" खाओ तुम हा हा करो निहोरे।
सपने में हू, गाल न छूऔ, गोरे गोरे।।

"ब्रजकन"

मुक्तक

नहीं रूँठन,नहीं मटकन, नहीं तक़रार है होली।
न कोई इर्ष्या, ना द्वेष का, त्योहार है होली।।
ये होली मस्त मौसम है, जो रूँठे हों मनाने का --
दिलों से जोड़ती है दिल, मोहब्बत,प्यार है होली।।

२.

पलक के पाँवड़े, अपने बिछादो, यार होली ।
हुए जो भी गिले शिक़वे, मिटादो यार होली में।।
ये होली मस्त मौसम है, जो रूँठे हों मनाने का--
उठाकर रँग तबियत से, लगादो यार होली में।।

"ब्रजकण"

ग़ज़लें

प्रज्ञान पुरूष पंडित सुरेश नीरव

मैक्समूलर सम्मान से विभूषित, वरिष्ठ साहित्यकार, व्यंगकार,
संस्थापक (अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति) एवं प्रधान संपादक प्रज्ञान विश्वम, नई दिल्ली
भारत

आर. पी. घायल

मशहूर शायर, सुप्रसिद्ध ग़जलकार, कवि एवं सेवानिवृत सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) भारतीय रिजर्व बैंक पटना (बिहार)

पराजित करने सूरज को अंधेरे आज आए हैं,
ये जुगनू धूप का जलवा मिटाने आज आए हैं।

ये अफ़वाहों के घर जन्मे इन्हें पाला है जुमलों ने,
ख़ुदा इनसे बचाए ये जो चमचे आज आए हैं।

भुलाकर नेवले रंजिश मिले हैं आज साँपों से,
दिखाने खेल बहुमत का सपेरे आज आए हैं।

सुबह होते ही ढूँढ़ेंगे ख़बर अख़बार टीवी में,
जो रहकर रात थाने में सवेरे आज आए हैं।

पुराने ही कथानक में नए संवाद ही लिखकर,
विदूषक फिर वही नाटक दिखाने आज आए हैं।

कि मुर्दा ख्वाब की सूनी पड़ी उजड़ी मजारों पर,
ये फिर से झूठ की चादर चढ़ाने आज आए हैं।

फरिश्ते आसमां वाले भी इनको सर झुकाते हैं
ये हैं कितने असाधारण बताने आज आए हैं।

यहाँ हर दोमुँहा इन्सा निकलता इच्छाधारी है,
सपोलों की इसी बस्ती में हर इन्साँ शिकारी है।

करे उम्मीद क्या कोई कभी इनसे शराफ़त की,
जिन्हें मां-बाप के साए में रहना लगता भारी है।

बड़ा बदकार मौसम है यहाँ पाखंडी दुनिया का,
हर इक चेहरा फ़रिश्ते-सा निकलता भ्रष्टाचारी है।

किया जाता है विज्ञापन यहाँ कंकर का कुछ ऐसे,
हिमालय से उसे ज़्यादा बताया जाता भारी है।

छिड़कता है नमक आकर वही जो ज़ख़्म देता है,
है खंजर दोस्ती का वार भी करता दुधारी है।

कमंडल हाथ का जिसके हमेशा ही रहा खाली,
हवस ने कैसे इन्साँ को बना डाला भिखारी है।

कभी फ़ुर्सत के लम्हों में जो मेरी याद आयेगी
भुला देने की हर कोशिश तेरी बेकार जायेगी

हवा का जब कोई झोंका हटा देगा तेरा दामन
नज़र तेरी तभी मेरे लिए आँसू बहायेगी

कभी जब आईना तेरा अचानक सामने होगा
वफ़ा मेरी निगाहों में तेरी तब झिलमिलायेगी

यूँ तेरे साथ होने का मज़ा कुछ और है लेकिन
तुझी से मीलों की दूरी मुझे कितना सतायेगी

मेरे हर शेर में है तू मेरे अल्फ़ाज़ में भी तू
कहूँगा जब ग़ज़ल कोई तो तेरी याद आयेगी

कभी जब शाम ढलने पर उदासी घेर ले घायल
ग़ज़ल मेरी मेरे दिल की तुझे धड़कन सुनायेगी

ग़ज़लें

अरशद मिर्ज़ा
दोहा क़तर

मशहूर शायर, कवि एवम इंजिनियर

राजेश प्रभाकर

राष्ट्रीय अध्यक्ष (स्वर साधना मंच), लेखक, कवि गीतकार एवं शिक्षा विभाग से सेवा निवृत)
गुरुग्राम हरियाणा भारत

डॉ. बैजनाथ शर्मा ' मिंटू '

वर्तमान पता- बिडला पब्लिक स्कूल, दोहा- क़तर, पोस्ट ब. न. २४६८६,

तकदीर

सुनो रब की अता की दास्ताँ ख़ुदसे,
सुनों तक़दीर की तुम दास्ताँ खुदसे।

लिखा क़िस्मत में जो भी हो मगर देखो,
बिना मेहनत के मिलता कुछ नहीं खुदसे।

मिलेगी मौत भी उसको वहीं जाकर,
करेगा पार जो रास्ता वही खुदसे

सुनो रब की अता की दास्ताँ ख़ुदसे,
सुनों तक़दीर की तुम दास्ताँ खुदसे।

फ़तह तेरी तुझे कितनी लगे लेकिन,
लिखी जिसकी करेगा वो फ़तह ख़ुदसे।

कभी दिल तोड़कर जाये अगर कोई,
समझ लेना ख़ुदा का फ़ासला ख़ुदसे।

सुनो रब की अता की दास्ताँ ख़ुदसे,
सुनों तक़दीर की तुम दास्ताँ खुदसे।

अता रब की मिली है ये सभी को तो,
चमकती है ये महनत की दुआ ख़ुदसे।

नयी अब सोच ऐसी तू बनाकर रख,
बदल दे तेरे ग़म खुशियों में जो ख़ुदसे।

जिसे चाहो भले क़िस्मत में ना भी हो,
लिखा अरशद बदल देगी दुआ खुदसे।

सुनो रब की अता की दास्ताँ ख़ुदसे,
सुनों तक़दीर की तुम दास्ताँ खुदसे।

सिसकते अल्फाज़

आंसू पीकर प्यास बुझाना कितना मुश्किल होता है।
यार लहू से दीप जलाना कितना मुश्किल होता है।।

इश्क गुमाने-बद होता है दुनिया की इफ़्ज़ाही में।
रस्मे-बद में फ़र्ज़ निभाना कितना मुश्किल होता है।।

बरबादी की राहों में आबाद चमन भी ख़ाक हुए।
लेकिन इसका दर्द जताना कितना मुश्किल होता है।।

कब और कैसे आस्तीन में सांप पले मालूम नहीं।
अब नज़रों से नज़र मिलाना कितना मुश्किल होता है।।

बेग़ैरत के हाथो से जो ग़ैरत के तम्कीन मिले।
रीझ रीझ उनपर इतराना कितना मुश्किल होता है।।

दिल के टुकड़े-टुकड़े कर जो चांदी की दीवार चढ़े।
उन्हे वफ़ा की याद दिलाना कितना मुश्किल होता है।।

फिरे ढूंढता "प्रभाकर" कहां अपनों में ही अपनों को।
दिल से दिल का मेल मिलाना कितना मुश्किल होता है।।

इफ़्ज़ाही- बदनामी, निंदा तम्कीन-सम्मान

सच को झूठ बतलाना नही आता

मुझे सच को कभी भी झूठ बतलाना नहीं आता।
तभी तो मेरे घर भी यार नज़राना नहीं आता।

अगर तुम प्यार से कह दो लुटा दूँ जान भी अपनी,
मगर परछाइयों से मुझको टकराना नहीं आता।

तड़पकर भूख से मरना मुझे हर पल गवारा है,
मगर आगे किसी के हाथ फैलाना नहीं आता।

रूकावट लाख आई है अभी तक मेरे जीवन में,
मगर घबरा के पथ में मुझको रूक जाना नहीं आता।

तू कर दे सर कलम मेरा मगर है बेबसी मेरी,
मुझे दिन को कभी भी रात बतलाना नहीं आता।

अगर है शौक पीने का तो ख़ुद जाना तू मयखाने,
किसी के घर तलक चलकर ये मयखाना नहीं आता।

कविताएं

होली

--उनको प्रणाम

उनको प्रणाम जो बन उल्का टूटे कायर [illegible]
उनको प्रणाम जो लेट गये भालों पर [illegible]
उनको प्रणाम जिनके डर से थर-थर-थर कांप [illegible]
उनको प्रणाम जिनके भय से कर उठे फिरंगी [illegible]
उनको प्रणाम जो गहन तिमिर में जले [illegible]
उनको प्रणाम जिनके गुस्से से सिहर उठे [illegible]
हाथों में शीश लिये अपने,वे चढे वतन के [illegible]
दुश्मन पर ऐसे झपटे वे ज्यों सिंह झपटता हिरणों पर
उनको प्रणाम अर्पित करते तन-मन [illegible] होती है
जडता कपूर सी उड जाती स्फुरण बाहें में होता है
अनगिनत दृश्य,अनगिनत चित्र,अनगि[illegible] जाग रही
वह देखो वीरों से डरकर अंग्रेजी फौजें भाग रही
बैरकपुर से मेरठ तक मंगल पांडे हुंकार उठे
गुस्से से लाल रूद्र मानो तप बिसरा कर जाग उठे
जागे नाना तात्या जागे जागी भारत [illegible]
जागा है बूढा शहंशाह , जागी रानी [illegible]
जागा है अवध ,रूहेलखंड दिल्ली भी जागी है भाई
थके -आहत भारत में फिर से नई ऊर्जा [illegible]
बेगम हजरत के गुस्से को सह सकी [illegible]
फोर्ट विलियम में छटपटा रहे वह देखो [illegible]
वो भाग रहा है मेटकाफ बुरका ओढे औरत बनकर
पूरा भारत है जाग उठा ,वह खडा हो गया है [illegible]
है उधर सिंधिया भाग रहा सह सका नहीं रानी का वार
जा छिपा आगरे में कायर लेकर निज -हिय पर गहन भार
भूखा -प्यासा लारेंस मरा , मर गया केज़ गोली खाकर
मर गये बसानो ,मैक्लीन मौलवी के डर से घबराकर
नरपत नाहर बनकर टूटा उड गये होप के तुच्छ प्राण
ले कुमुक पहुंच पाता कोलिन ज़नरल पेनी का हुआ काम
सिब्बाल्ड ,ऐलेक्ज़ेंडर भागे, लो भाग गया है मैकेज़ी
रूहेलखंड की धरती से मिट गया राज सब अंगरेजी
आरा में बाबू कुंअर सिंह ललकार रहे ,हुंकार रहे
वो उधर रिवाडी में तुलाराम गिन -गिन के फिरंगी मार रहे
दिल्ली में लडते बख्त खान ,बैसवारा में बेनीमाधो
कह रहे कानपुर में नाना अंग्रेजों अब बिस्तर बांधो
हर तरफ जल रही क्रांति ज्वाल,इस प्रखर ज्वाल को शत प्रणाम
इन लपटों को निज़ प्राणों से प्रज्जवलित कर गये शत अनाम
इस महायुद्द के साक्षी उस बेबस दरवाजे को प्रणाम
बर्बरता नील [illegible] झेल गये उन वृक्षों गांवों को प्रणाम
इन प्रणाम के बोलों में पीढी कृतज्ञता बोल रही
जो रक्त से तुमने सींची थी आज़ाद सभ्यता बोल रही
लहराता तिरंगा कहता है, ना भूले हैं, ना भूलेंगे
तव प्रेरणा से हम प्रगति शिखर शीघ्रातिशीघ्र ही छू लेंगे
[illegible] को शत प्रणाम

अन्नदा पाटनी
अमेरिका

प्रतिष्ठित साहित्यकार, उपन्यासकार ,संपादक, कला (सितार,नृत्य एवं पेंटिंग)में निपुण

होली पर कहमुकरी

चेहरे पर रंग है लाता,
बड़े प्यार से गले लगाता,
मीठे पकवान खिलाता,
खुशी लुटाता अपरंपार
क्या सखि साजन?
न सखि, होली का त्यौहार।

असली खूबसूरती

शिखा पोरवाल
'मनस्विनी'
वैंकूवर कनाडा

प्रतिष्ठित कवयित्री, संस्थापक 'मनस्विनी' साहित्यिक मंच

चेहरे का नूर
दिल पर छाने लगा
खूबसूरती स्वयं अपनी
कहानी गढ़ने लगी
उम्र के साथ-साथ
निखार बढ़ता गया
तन पर मन की निर्मल
सुंदरता भारी हो गई
मैं समय के थपेड़ों संग
ऊबरकर निखरती
चली गई
जमाने के सवालों को
उड़ा हवा में
उड़ान भरती गई
खुद ही आत्मविश्वास से
ख्यालों की मशाल जलाएं
अदब से अपनी चाँदनी
बिखेरती रही
चेहरे का नूर
दिल पर छाने लगा
खूबसूरती स्वयं अपनी
कहानी गढ़ने लगी
कठिन डगर पर
अडिग हो
कदमताल से चलती रही
मुस्कानों के पिछे छिपी
चालाकियों को पढ़ने लगी
छुपा के सारे गम
मुखौटा लगा हँसने
खिलखिलाने लगी
जिंदगी की बारीश में
भीगकर मजे लेने लगी
चेहरे का नूर
दिल पर छाने लगा
सोने की तरह तपकर
कुंदन होती गई

पत्थर की भांति कट
कटकर हीरा बन
शोभा पाती गई
हेम के साथ जड़ित
हीरे के मानिंद
घिस, कट, पिटकर
मिसाल बन गजालों
कहानी गढ़ने लगी
चेहरे का नूर
खूबसूरती स्वयं अपनी
दिल पर छाने लगा..

कविताएं

एक मन है खो जाने को

आज सुबह से मैं था निकला घर से
कहूँ कि सब से मैं खो गया हूँ
और दिन भर करूँ जो जी में आए
लेकिन मन है कि शाम को घर ही पहुँच जाऊँ।
भूला सुबह का शाम आए तो भूला कहते नहीं
नहीं तो घरवाले इस बदहवासी को सहते नहीं ।

जान बूझ के दिन में अगर खुद खो जाऊँ
और शाम को अपने आप में अगर मिल जाऊँ
दिन तो मेरा ही रहेगा,
पहचान वालों के झिकझिक से दूर
मन है ऐसा कि खुद खो जाऊँ सब से
और खुद शाम को मैं मिल भी जाऊँ ।

कुछ तो मैं टोपी में सज
दुआ सलाम करता रहा
कुछ भाषण और
कुछ पंडाल या शामियाने हो कर बोला
कुछ दीवार के अन्दर से बोला
कुछ उस के बाहर रह कर भी बोला
सर झुका के भी मैं बोला
सर उठा के भी मैं बोला
मै जिस से बोला, वे पहुँच गये दूर
देखता रह गया,
मै जहाँ का तहाँ रहकर बोला ।

देखता हूँ कि मेरा कोई परिचय है नहीं
तो मैं किसी से क्यो 'मैं' हो कर मिलूँ
मैं अगर खो जाऊँ तो क्या हर्ज है
अब तो मन है
कि मैं इस कदर खो जाऊँ
कि ढूंढने वाले भी थक जायें
और मैं अपने आप में खो जाऊँ ।
अखबार में दी जानेवाली
इश्तहार भी खुद लिख के जाऊँ
सचमुच आज मुझे खो जाने का मन है ।

खुद को ढूंढते ढूंढते अब
थक गया हूं मैं
मै कहाँ हूँ ?
क्या यूनिवर्सिटी की कक्षा में हूँ
क्या अखबार की पंक्तियों मे हूँ
क्या कोई रूपसी की श्रृंगार में अटक गया हूं
या अनुप्रास की खोज में
तीसरी पंक्ति की उधेड़बुन मे
इक कविता मे ही उलझ गया हूँ ।
कहाँ हूँ मैं
ढूंढता हूँ अपने आप को
क्या मैं मिल गया हूँ तुमको ?

अगर मिला हूँ तुमको तो मुझे बताना ।
मै भी अपने को पाना चाहता हूँ
जैसे कि दूसरे लोग चाहते हैं मुझे पाने की
मैं पहले खुद खो जाना
और बाद मे मिल जाना चाहता हूँ
तुम मेरी मदद करो
मुझे खो जाने में भी मदद करो
और मुझे अपने आप में
मिल जाने में भी मदद करो ।
करोगे न ?

विधान आचार्य
ललितपुर
काठमांडू,नेपाल

प्रतिष्ठित साहित्यकार, यूनिवर्सिटी से रिटायर्ड पर आगंतुक प्रोफ़ेसर रूप में कार्यरत। कहानी कविता व अन्य विधाओं में १९७४ से सक्रिय। पांच कविता संग्रह एवं एक लघु कथा संग्रह प्रकाशित।

नारी श्रृंगार

हर पल अपना दूसरे को दिये जाती हूं मैं,
रोम-रोम से दुनिया सजाती हूं मैं,

इंसान हूं, तो दिल भी है और खवाहिशें भी,
लेकिन अकसर किसी अपनो के लिए
समझौते किए जाती हूं मैं!!!

बच्चों की चमकती आँखो को खूबसूरत
सपने दिखाती हूं मैं,
कोमल पौधौ (बच्चे) को सींचकर मज़बूत
दरख़्त (पेड़) बनाती हूँ मैं,

पेट ही नहीं, मन भी भर जाए, ऐसा खाना
बनाती हूं मैं,
कभी जो दिल दुख जाए किसी बात से तो,
आँखो मे आँसू और दिल के दर्द के साथ भी
मुस्कुराती हूँ मैं,

कोई अफ़सोस नहीं, अपनी मंज़िलों को न
पाने का,
दिल के इस कसक के साथ ही बीत जाती है
रात, और उगते सूरज की रौशनी से फिर से
चमक जाती हूँ मैं,

दूसरों के दर्द से बिखर जाती हूँ मैं, और झूठी
तारीफ़ से भी निखर जाती हूँ मैं,

कहते हैं माँ-बाप हमारे, जब छोटी थी, नन्हें-
नन्हें क़दमों से रुन-झुन पायल छनकाती थी
मैं,

घर-आँगन को अपनी तोतली बोली, और
किलकारीयों से महकाती थी मैं,

आज बेटी के रूप में ख़ुशियाँ और
बेटों के रुप में वंश बढ़ाती हूँ मैं,
ठीक ही तो कहते हैं बुजुर्ग हमारे,
की बेटियां तो जीवन का श्रृंगार हैं,
तभी तो किसी और का घर (ससुराल)
को अपना बनाती हूँ मैं, और दिल से सजाती हूँ मैं,
हर पल अपना दूसरे को दिए जाती हूँ मैं !

रूपम कुमारी यादव
ललितपुर काठमांडू
नेपाल

प्रतिष्ठित कवयित्री, टेक्सटाइल डिजाइनर

कविताएं एवम दोहे

एक्यूप्रेशर चिकित्सक, रेकी विशेषज्ञ, साहित्य-सेवी, समाज-सेवी, स्वतंत्र पत्रकार, पूर्व समाचार वाचिका

माधुरी तिवारी भट्ट
देहरादून - भारत

मूलत; लखनऊ, भारत की वर्तमान निवास वर्जिनिया अमेरिका है। कवयित्री, हिंदी एवं अंग्रेज़ी लेखिका।

मधु खरे
वर्जिनिया - अमेरिका

अरुण एन गुप्ता 'हीर '
लंदन - यू.के.
लेखिका, कवयित्री एवं शिक्षिका

होली

आई है होली निकल पड़ी देखो दिल वालों की टोली,
बजने लगे ढोल मंजीरे, मचल रहे हैं ख़्वाब रसीले।

धड़कने मचल रही हैं, कब पधारेंगे प्रियतम मेरे,
बाट जोह रही हूँ कब से ,अब तो आ जाओ साजन मेरे

सरहद पर तो सदा ही खेलते हो दुश्मनों से आँखमिचोली,
अबकी बार आ जाओ सजना, सजी है मेरे अरमानों की होली

रंग -बिरंगे फूलों की ख़ुशबू ने किया है मदहोश
कोयल की कुहू - कुहू कर रही प्रिय मिलन का उदघोष।

अमियां की मंजर पर झूम -झूम भौंरे कर रहे गुंजार,
हरे-भरे खेत पीला दुशाला ओढ़ कर रहे पिया का इंतज़ार

होली के रंग में रंग मिला देंगे सबको यह संदेश
मुश्किल से है मिलता मानव जीवन,
करें इसे सफल सार्थक
न रहे धरा पर दुश्मन कोई, बन जाएँ सब मित्रवर

एक -दूजे सङ्ग बाँट सुख -दुख की रस्में,
प्यार बाँटने की मिलकर खाएँगे कसमे।

दिल के अरमानों के रंगों से भरी पिचकारी,
प्रियतम मेरे रंग दो अपने प्यार के रंग से
मेरे जीवन की क्यारी

देखो आई है होली लेकर
सङ्ग प्यार बाँटने वालों की टोली

नफ़रत न रहे कहीं छिपी दिलों में ऐसे रँगना साजन मेरे
कड़वाहट को मिले न जगह किसी कोने में
ऐसी प्रीत जगा कर जाना सरहद पर प्रियतम मेरे

अनुपम प्रकृति (दोहे) -

हो गुलाब की पंखुड़ी,
या गेंद का फूल।
बगिया सुरभित हो गई,
फूल खिले जब धूल॥

फूल, ईश अर्पित किया,
हर्षित आसमाँ नील।
देख प्रेम आराधना,
चाँद चमकता झील॥

तितली प्यार गुलाब से,
रिश्ता न्यारा एक।
आयें जब रस पान को,
फैला पंख अनेक॥

रंग बिरंगी तितलियाँ,
छुप जातीं जब फूल।
मानव धोखा खा गए,
तितली लागे फूल॥

तारे अवलोकन करें,
तितली रानी स्नेह।
उतरे धरती देखने,
बन जुगनू की देह॥

बीच धरा औ' आसमाँ,
अमिट प्रगाढ़ स्नेह।
क्षणभंगुर इस ग्लोब में,
करो ईश सस्नेह॥

कला की परिभाषा

कला तो उन पत्तों में है जो शाख़ों से गिर कर, उन्हीं शाख़ों को फिर से जीवन दान देते हैं

कला तो उन परवानों में है जो शमां की मोहब्बत में, अपने ही पंखों को जला कर राख कर देते हैं

कला तो उन भँवरों में है जो फूल-फूल पर मंडराते हैं, उन फूलों की ख़ुशबू से सारी बगियाँ को महकाते हैं

कला तो उन नदियों में है जो मीलो बहकर, अपने ही अस्तित्व को समुद्र की आग़ोश में मिटा देती हैं

कला तो उस शायर की शायरी में है, जिसे पढ़कर दिल की धड़कन बढ़ जाती है और साँस थम सी जाती है

कला तो वो नायाब तोहफ़ा है क़ुदरत का जो सभी में कहीं ना कहीं छुपा होता है, बस उसे खोज कर तराशने की हिम्मत और जुनून होना चाहिए

कविताएं

अनु बाफना
दुबई - यू.ए.ई.

पेशे से कॉर्पोरेट ट्रेनर अनु बाफना दुबई में प्रवास करती हैं। हिंदी व अंग्रेज़ी-दोनों भाषाओं में निर्बाध लिखती हैं। हिंदी में दो संग्रह आ चुके हैं और कई साझा संकलनों का भी हिस्सा रही हैं।

अनमोल सौगातें

(विधाता छन्द)

अचानक एक दिन यों ही, खुली संदूक यादों की।
परत दर हर परत लगती, घुली रसखान बातों की।
सँजोए अनगिनत किस्से, मिले कुछ रंग अलबेले।
कहीं गुमनाम थी धड़कन, ठिठोली के कहीं मेले।

मिली इक डायरी जिसको,सहेजा था,छुपाया था।
कि लिखकर नाम पेंसिल से,फटाफट ही मिटाया था।
किसी को भी खबर ना हो, दबाकर राज रखते थे।
बचा कर आंख दुनिया से, उन्हें चुपचाप तकते थे।

छतों को टाप कर कूदे, कि घुटने पर निशानी है।
पुरानी सायकिल इक थी, अलग उसकी कहानी है।
फिकर ना रात-दिन की थी, बड़ी खुशहाल संगत थी।
सही थे यार बचपन के, उन्हीं से खूब रंगत थी।

लड़कपन के सुहाने दिन, लिए अनमोल सौगातें।
रखी संदूक यादों की, समेटे है सभी यादें।
पिटारा जादुई लगता, बिखेरे रोशनी ऐसी।
जलें दीपक हज़ारों यों, लगे त्योहार के जैसी।

सुनहरी सुबह

सुबह हमें जगाती है, काम की याद दिलाती है,
सुबह हमें सबसे पहले, प्रभु की याद कराती है,
रोज़ सवेरे सबसे पहले, सूरज से मिलवाती है,
सुबह की शोभा हम सबको, मन ही मन भाती है।
सुबह देख चंदा भी देखों ,मन ही मन शर्माता है,
पक्षीगण का कलरव भी, हम सबको हर्षाता है,
सुबह उठकर मुर्गा देखों, पहली बांग लगाता है,
सुप्त शांत से जीवन में, आशा की ज्योत जगाता है।
सुबह-सुबह अम्बर में भी, लालिमा छा जाती है,
सुबह-सुबह ही चिड़िया भी, दाना चुगकर लाती है,
सुबह-सुबह ही निर्धन को, भूख बहुत सताती है,
सुबह-सुबह ही धनवानों की गाड़ी चमचमाती है।

डॉ .नितेश शाह

डॉ.नितेश शाह राजस्थान की राजधानी जयपुर के निवासी है। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की है। आप विगत 22 सालों से हिंदी अध्यापन से जुड़े है। वर्तमान में दिल्ली प्राइवेट स्कूल शारजाह में हिंदी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत है। आप कवि, एंकर,आध्यात्मिक वक्ता और योग के अध्यापक है।

निधि दवे
दुबई, यू.ए.ई.

परेशान बहुत है।

नींद कम सपने बहुत है.

खुशियाँ कम और अरमान बहुत है।
उल्लास कम अफसोस बहुत है।

प्रेम कम टकराव बहुत है,
जिसे देखो वह परेशान बहुत है।

दौड़ में हैं शामिल सभी,
लेकिन मंजिल से अनजान बहुत है।

दूर से जिसकी शान बहुत है,
करीब से वे खोखले बहुत है।

आन कम ,शान बहुत है।
जहाँ देखो वहाँ नाराजगियों का
प्रभाव बहुत है।

यूँ तो शामिल हैं लोग सभी ,
लेकिन इंसान बहुत कम है।
इंसान बहुत कम है।

कविताएं

दायित्व पथ

कुछ विरले होते हैं जग में, जिनके कंधों पे भार सदा।
बचपन से निभाते रहते हैं , दायित्वों का जो बोझ लदा।

भगवान बनाता है कम ही , ऐसे लोगों को दुनिया में।
जो पूरी करते हैं सबके , मन के अंदर की अभिलाषा।

अभिलाषा से दायित्व बड़ा, जो ले आता जिम्मेदारी।
पूरी करने को उसको ही , वो उम्र लगाते हैं सारी।

सीमा पर प्रहरी सहते हैं , हँसते हँसते वो कष्टों को।
जीवन से प्यारा जिनको है ,भू रक्षा का दायित्व कड़ा।

लक्ष्मण जो पूजे जाते हैं , भाई की भक्ति जीने को।
हैं भरत लाल सर माथे पर , कुटिया में ही दायित्व निभा।

वो हरिश्चंद्र ना भूलेंगे , माँगा जिसने मरघट का कर।
अपने बालक के शव पे भी ,दायित्व बोध ना कभी डिगा।

इतिहास उन्हें करता है नमन, जो डिगे कभी ना काँटों से।
चाहे आये बाधाएं बड़ी , दायित्व रहा बस प्रथम सदा।

टिप्पणी---
दायित्व बोध को समझने वाले विरले ही होते हैं परन्तु इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवा जाते हैं।

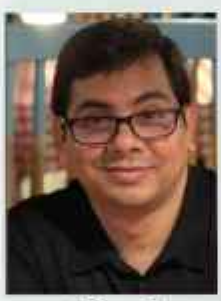

शिवमोहन
दुबई - यू.ए.ई.

मूल रूप से उत्तरप्रदेश कन्नौज भारत निवासी । विगत 17 वर्षों से दुबई में रेलवे क्षेत्र में कार्यरत , पेशे से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर हैं।

एक ख़्वाब

वो उनींदी सी पलकों पर
पलते कुछ ख्वाब
न जमीं की न फलक की
कुछ अलहदा अंदाज।
सपनों के उस जहान में
न दानव, न परियां,
इंसानों की बस्ती में
झिलमलाती खुशियां।
चैन -ओ-अमन के जहां में
न कोई शिकवा, न गिला
खुशियां सब की अपनी
जिसको जो भी मिला।
न लालच, न बेइमानी
न कहीं खींचातानी
हर शख़्श बा-अदब
हर सांस भी रुहानी।
ख़्वाब जो ये मुकम्मल हो जाए
ये जहां स्वर्ग ही बन जाए
खिल जाएं फूल हर चमन में
दुनिया ये गुलशन बन जाए...।

श्वेता सिन्हा
बैंगलोर, भारत

लेखिका, कवयित्री एवम सहायक निदेशक राजभाषा कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बेंगलुरु में कार्यरत हैं।

संस्कृति - वाहक

हम तो सँस्कृति के वाहक
घर-घर अलख जगायेंगे,
जहाँ घोर फैला अंधियारा,
मिलकर ज्योति जलाएंगे,
जो कर्तव्य हमारा है हम
वह कर्तव्य निभाएंगे,
पाप पुण्य की वो परिभाषा,
जन - जन को समझाएंगे,
निकल पड़े जब क्या हम
देखे पड़े थे कंकड़ पत्थर,
चुन - चुन कर उन पत्थर को
हम राह से उन्हें हटाएंगे ।
हम तो सँस्कृति के वाहक ,
घर - घर अलख जगायेंगे ।
भारत की पावन भूमि में
हम सबने जन्म लिया,
सच कहता हूँ पूर्व जन्म में ,
सबने सुंदर पुण्य किया,
जन्म लिया पावन भूमि में
अब कर्तव्य निभाना है ।
तुम सब भी कर्तव्य निभाओ,
यह सबको समझाएंगे ।
हम तो सँस्कृति के वाहक,
घर - घर अलख जगायेंगे ।
व्यसन मुक्त हो जीवन अपना,
सब मिलकर संकल्प करो,
व्यसन युक्त यदि रहे हमेशा ,
तो फिर उसका पाप भरो ।
पाप-पुण्य की यह परिभाषा,
तुम यदि समझ ना पाये तो,
परिभाषा समझाने को फिर ,
द्वार तुम्हारे आएंगे।
हम तो सँस्कृति के वाहक ,
घर - घर अलख जगायेंगे।

गोविंद गुप्ता
लखीमपुर, यूपी
भारत

कवि, लेखक एवम संस्थापक 'कथाकुंज' मंच
देश विदेश के अनेको मंच पर प्रतिभा को सम्मान दिलवा चुके हैं ।

ध्रुव गुप्त

स्वतंत्र लेखक, कवि ,चिंतक तथा
सेवा निवृत आईपीएस अधिकारी
पटना, बिहार-भारत

प्रेम दुनिया की सबसे खूबसूरत, सबसे प्रबल, सबसे अद्भुत भावना है। एक जादू, एक अतीन्द्रिय एहसास। दो व्यक्तिओं के बीच एक ऐसा अदृश्य बंधन जिसमें मुक्ति की तमाम संभावनाएं छिपी हैं। दुनिया के सभी धर्म और संस्कृतियां प्रेम की बुनियाद पर ही खड़ी हैं। दुनिया के सारे मानवीय व्यवहार, तमाम साहित्य और सभी कलाओं के मूल में प्रेम ही है। हमारी दुनिया में जितना कुछ हिंसक, अमानवीय और अवांछित है वह प्रेम के अभाव के कारण है। प्रेम महज़ स्त्री-पुरूष के बीच का स्वाभाविक यौन आकर्षण नही। यह उस तड़प, उस बेचैनी, उस आतंरिक खूशबू का नाम है जो दो लोग एक दूसरे के साथ रहकर या अलग होकर भी जीवन भर महसूस करते हैं। प्रेम के साथ सबसे अद्भुत बात यह है कि इसे सीखने की जरूरत नहीं होती। यह हमारे भीतर हमेशा ही मौजूद है। इसे बस कुरेदकर जगा देना भर होता है।

प्रेम को परिभाषित करने की कोशिशें अनंत काल से होती रही है। प्रेम के बारे में बहुतों ने लिखा लेकिन इस विलक्षण अनुभूति को शब्दों में कोई भी ठीक-ठीक नहीं बांध पाया। शायद इसलिए कि प्रेम जान लेने की चीज नहीं है। उसे जीना और महसूस करना होता है। हमारे पुराणों में एक कथा है जो कुछ हद तक प्रेम के मर्म तक पहुंचती है। कहा गया है कि सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा ने अपनी देह को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया था। पहला हिस्सा 'का' हुआ और दूसरा 'या'। दोनों को मिलकर काया बनना था। पुरुष हिस्से का नाम स्वयंभु मनु पड़ा और स्त्री हिस्से का नाम शतरूपा। उन्हीं दोनों के मेल से पृथ्वी पर मनुष्यों की उत्पति हुई। एकदम काल्पनिक-सी लगने वाली इस कथा के अर्थ बहुत गहरे हैं। अपने आप में संपूर्ण न पुरुष है और न स्त्री। अपनी रचना के बाद पुरुष और स्त्री दोनों ही अपने-अपने आधे हिस्से की तलाश में भटक रहे हैं। टुकड़ों में उस आधे की उपलब्धि का सुख कभी प्रेम में मिलता है, कभी विपरीत लिंगी मित्रों में, कभी दांपत्य में और कभी-कभी कल्पनाओं में बनी स्त्री या पुरुष छवियों में भी। अधूरेपन के इस शाश्वत एहसास और अपने खोए हुए हिस्से को खोज लेने की बेचैनी का नाम ही शायद प्रेम है। हमारी भारतीय संस्कृति में अर्द्धनारीश्वर की कल्पना यूं ही नहीं की गई थी।

वैसे तो प्रेम के लिए कोई दिन या मौसम मुक़र्रर नहीं होता, लेकिन हमारी संस्कृति और साहित्य में वसंत को प्रेम के लिए सबसे अनुकूल मौसम माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार यह कामदेव के जागने का मौसम है। गीता में कृष्ण ने स्वयं को ऋतुओं में वसंत कहा है। यह ऐसा मौसम है जब प्रकृति का सौन्दर्य अपने चरम पर होता है। मनोविज्ञान मानता है कि वसंत में लगभग सभी प्राणियों में दैहिक, मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन होते हैं। मनुष्यों और पक्षियों में यह परिवर्तन सबसे ज्यादा देखा गया है। दुनिया की लगभग तमाम संस्कृतियां अपने युवाओं को इस मौसम में प्रेम की अभिव्यक्ति का अवसर देती हैं। प्राचीन भारत में वसंत उत्सव और मदनोत्सव की हजारों साल लंबी परंपरा रही थी जिसमें प्रेमी जोड़े एक दूसरे के प्रति अपने प्रेम और आकर्षण का सार्वजनिक इज़हार करते थे। वह एक स्वस्थ और कुंठा रहित समाज की निशानी है। प्रकृति से हमारे रिश्ते कमजोर होने और जीवन में जटिलताएं बढ़ने के साथ हमारे यहां प्रेम का विरोध भी बढ़ा है। अब सिर्फ कुछ आदिवासी संस्कृतियां ही हैं जो वसंत में अपने युवाओं को प्रेम प्रकट करने का अवसर देती है। प्रेम की अभिव्यक्ति का ऐसा ही एक अवसर पश्चिम से आयातित वैलेंटाइन डे देता है। बाज़ार ने इसका विस्तार कर अब 'वैलेंटाइन वीक' बना डाला है। प्रेम का संदेश चाहे दुनिया के किसी भी कोने से आए, नफरतों से सहमें इस दौर में ताज़ा हवा के झोंके की तरह ही है। आप जितने भी अवरोध खड़े कर लें, प्रेम अगर है तो वह हर हाल में प्रकट होगा। आप इसे बांधने की कोशिशें करेंगे तो यह असंख्य विकृतियों में सामने आएगा। प्रेम की असंख्य वर्जनाओं की वजह से आज हमारा समाज कुंठाओं और हिंसा से भर गया है। प्रेम की तमाम वर्जनाएं और बंदिशें हम मनुष्यों द्वारा निर्मित हैं। ईश्वर या प्रकृति ने तो बस प्रेम, स्वप्न और उड़ने की अनंत इच्छाओं का ही सृजन किया है। इन इच्छाओं और सपनों को बांध देना किसी के लिए भी संभव नहीं है।

प्रेम को स्त्री-पुरुष के बीच के दैहिक आकर्षण का पर्याय मान लिया जाता है। प्रेम में कुछ हद तक दैहिक आकर्षण की भूमिका होती जरूर है, लेकिन हर दैहिक आकर्षण प्रेम नहीं होता। आकर्षण की उम्र छोटी होती है। यौन आवेग उतर जाने के बाद यह धीरे-धीरे लुप्त होने लगता है। शारीरिक आकर्षक बांधता है। इस आकर्षण से भावनाओं का उपनिवेश निर्मित होता है। आपको जो आकर्षित करता है, आप चाहते हैं कि वह सदा आपके साथ रहे। आपकी संपत्ति बनकर। आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप चले। आपके अहंकार को सहलाए और आपको विशिष्ट होने का गौरव दे। इच्छाओं की पूर्ति न होने की स्थिति में यह आकर्षण हिंसा का रूप भी धर ले सकता है। इसके विपरीत प्रेम दो व्यक्तियों के मिलने से उपजी एक आंतरिक ख़ुशबू है जो उनके बिछड़ जाने के बाद भी उनके व्यक्तित्व में सदा के लिए बची रह जाती है। प्रेम बेड़ियां नहीं, मुक्ति देता है। वह एकाधिकार नहीं मांगता। किसी ने आपको दो घड़ी, दो दिन भी प्रेम और आत्मीयता के अनुभव दिए तो आप सदा के लिए उसके कृतज्ञ हो जाते हैं। प्रेम की सफलता पा लेने में नहीं, फ़ासलों और अतृप्तियों में है। दांपत्य में नहीं, उन नाज़ुक़ और बेशकीमती संवेदनाओं में है जिन्हें आपके व्यक्तितव में भरकर आपके महबूब ने आपको अनमोल कर दिया।

प्रेम हमारा स्वभाव है। इसे कुरेदकर जगाने में सबसे बड़ी भूमिका हमारे जीवन में विपरीत सेक्स की होती है। एक पुरुष का स्त्री से या स्त्री का पुरुष से प्रेम बहुत स्वाभाविक है। लेकिन यह प्रेम के उत्कर्ष तक पहुंचने का रास्ता भर है। मंज़िल नहीं। एक बार प्रेम में पड़ जाने के बाद प्रेम व्यक्ति-केंद्रित नहीं रह जाता। हमारी मनःस्थिति बन जाता है। एक बार आप प्रेम में हैं तो आप हमेशा के लिए प्रेम में हैं। आप एक के प्रेम में पड़े तो आप सबके प्रेम में पड़ जाते हैं। समूची मानवता के प्रेम में। सृष्टि के तमाम जीव-जंतुओं के प्रेम में। प्रकृति के प्रेम में। ज़मीन से आकाश तक आपको प्रेम ही प्रेम नज़र आएगा। ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता कि आप किसी एक से प्रेम करें और कुछ दूसरों से नफरत। प्रेम विस्तार मांगता है। प्रेम की इस प्रकृति के बारे में शायर जिगर मुरादाबादी ने क्या खूब कहा है - इक लफ्ज़-ए-मोहब्बत का अदना ये फ़साना है / सिमटे तो दिल-ए-आशिक़ फैले तो ज़माना है ! प्रेम ने आपको बदला है तो आप इस प्रेम से अपने आसपास की दुनिया को बदलने की कोशिश में लग जाएं। यही प्रेम की सार्थकता है। यही प्रेम का गंतव्य।

जीवन में बढ़ती जटिलताओं के कारण हमारे देश में मनाए जाने वाले प्रेम के तमाम उत्सव आज दम तोड़ चुके हैं। सिर्फ पश्चिम से आयातित प्रेम का एक उत्सव वैलेंटाइन डे ही प्रचलन में है। हमारे देश में इस तर्क के साथ इसका विरोध होता रहा है कि प्रेम का ऐसा कोई उत्सव हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं हैं। यह मूर्खतापूर्ण सोच है। दुनिया में ऐसी भी कोई संस्कृति है जो प्रेम के विरोध की बुनियाद पर खड़ी हैं ? जिस संस्कृति में राधा-कृष्ण के परकीया प्रेम तक को प्रेम का आदर्श माना गया है उसमें प्रेम का ऐसा प्रतिरोध हैरान करता है। प्रेम का विरोध प्रेम से वंचित अभागे लोग ही कर सकते है। इस दिन का इस आधार पर भी मज़ाक उड़ाया जाता है कि प्रेम किसी खास दिन का मोहताज नहीं होता। बात तो सही है। प्रेम जैसी नैसर्गिक, शाश्वत भावना की अभिव्यक्ति के लिए कोई खास समय निश्चित नहीं किया जाना चाहिए। अगर प्रेम है तो वह हर दिन, हर अवसर पर और हर मौसम में व्यक्त होगा। लेकिन यह भी सही है कि जीवन की लगातार बढ़ती आपाधापी में हम बहुत कुछ भूलते भी जा रहे हैं। हम सब बहुत जल्दी में है। व्यक्तिगत संबंध भी अब ज़रूरतों और सुविधाओं के हिसाब से बनते और बिगड़ते हैं। जीवन में प्रेम जैसी निष्कलुष और उदात्त चीजें इस जटिल होते समय में हमारी प्राथमिकताओं की सूची से बाहर हैं। वैलेंटाइन डे जैसे आयोजनों की सार्थकता इतना तो है ही कि वे हमें याद दिलाते हैं कि हमारे जीवन में कुछ वांछित, कुछ श्रेष्ठ, कुछ मुलायम भी है जो हमसे लगातार छूटता जा रहा है।

ऋतु वसंत!

डॉ उर्मिला सिन्हा,
शिक्षाविद, साहित्यकार एवं कवयित्री
रांची, झारखंड - भारत

असतो मां सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
"जय मां शारदे "----इन पंक्तियों का आह्वान करते हुए करूणामयी माता सरस्वती की चरण वंदना ।

कंपकंपाती भीषण ठंढ में उत्तरायण होता सूर्य का प्रवेश राहत देता है। ठंडी हवा वासंती पवन में परिवर्तित होने लगी है। कोट, स्वेटर, रजाई से लोग निकल गुलाबी ठंड का आनन्द ले रहे हैं। हेमंत के शुष्कता के पश्चात रंग बिरंगे गेंदा,गुलाब, चमेली , गुलदाऊदी आदि फूलों की खुशबू। माघ महीने के शुक्ल पक्ष के पंचमी को ही वसंत पंचमी और सरस्वती पूजा का आयोजन होता है।रंग अबीर की शुरुआत उसी दिन से होती है .... अर्थात फाल्गुण का आगाज।

ऐसे में स्कूल के दिनों की याद आती है। सरस्वती पूजा के एक दिन पहले ही पंडाल सज जाता था। हलवाई बैठाया जाता था। बूंदिया, लड्डू, गाजा, बताशा, जलेबी आदि मिठाईयां विशेष तौर पर बनती थी। फलों में बेर, केला, गाजर, शकरकंद, केसर , मकोय, मटर इत्यादि मुख्य प्रसाद होता था।

उन दिनों हाई स्कूल में सहशिक्षा थी। हम छात्राएं अपने लम्बे रेशमी बालों को लहराते एवं पीले रंग के परिधान में प्रात: नौ बजे तक स्कूल पहुंच जातीं। वहां स्कूल प्रबंधन और छात्र पूजा की तैयारी में व्यस्त रहते। सादगी, उत्साह, विद्या-बुद्धि का त्यौहार। एक अलौकिक पवित्रता का अहसास होता।

पण्डित जी जोर-जोर से मंत्र उच्चारित करते, शंख फूंकते । हम लड़के - लड़कियाँ , शिक्षक, स्टाफ , उपस्थित जनसमूह श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़ खड़े रहते। फिर हमारा भजन होता

"वीणा वादिनी वर दे....!"
तदोपरान्त लड़कें अपने सधे हुए कंठ से हाथ जोड़े भजन गाते ,
"मां शारदे कहां तू वीणा बजा रही है
किस मंजुल गान से तू जग को लुभा रही है।।

सुनने वाले शांत चित्त भक्ति मय दोनों हाथ जोड़े खड़े रहते थे । मानों मां सरस्वती साक्षात अपने वरद-हस्त से हमें आशीर्वाद दे रही हों।

प्रसाद वितरण के पश्चात भी धूप-दीप जलता रहता। दूसरे दिन गाजे-बाजे के साथ विद्यार्थीगण पूर्ण निष्ठा ,विधि-विधान पूर्वक मूर्ति विसर्जन करते ...अबीर गुलाल एक दूसरे को लगा, "सरस्वती माता की जय, वीणापाणि की जय- जय" करते स्थानीय तालाब या नदी में विसर्जन कर देते। मां शारदे की विदाई... हम किशोर वय के विद्यार्थी भावुक हो जाते... अगले वर्ष की प्रतीक्षा रहती। वहीं हमने प्रबंधन के गुण सीखे।

हमारे जीवन दर्शन की व्यापकता, सांस्कृतिक निष्ठा, आध्यात्मिक चिंतन से परिपूर्ण सौंदर्यमयी विद्यावाहिनी मां शारदे की आराधना, मानवता के प्रति सहज सहानुभूति एवं प्रेम बंधुत्व के प्रति सहज स्नेह आज भी वसंत-पंचमी की गरिमा हृदय में बसा हुआ है।

मुंशी प्रेमचंद की कहानी: स्त्री और पुरुष

मुंशी प्रेमचंद को हिंदी का कथा-सम्राट कहा जाता है। मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस के निकट एक सुदूर कस्बे लमही में हुआ था। प्रेमचंद एक साधारण पृष्ठभूमि और छोटे परिवार से थे। उनके दादा गुरु सहाय राय एक पटवारी थें, और पिता अजायब राय एक पोस्टमास्टर थे। उन्होंने इनसे पूर्व हिंदी में कहानियां और उपन्यास लिखे थे। सबसे पहले प्रेमचंद ने ही हिंदी कथा-साहित्य का संबंध जीवन और संसार जोड़ा और हिंदी कथा-साहित्य को नई दिशा दी। आज उनकी रचित एक कहानी के माध्यम से 'भोर' पत्रिका उन्हें श्रद्धांजलि और नमन अर्पण करता है।

विपिन बाबू एक कवि थे, जिन्हें दुनिया में सबसे ज्यादा सुंदर रचना महिलाएं ही लगती थीं। इनकी कविताओं में भी सिर्फ महिलाओं के रूप, सुंदरता और यौवन की ही तारीफ हुआ करती थी। जैसे ही किसी महिला का जिक्र होता, तो ये अलग और सुंदर सी कल्पना की दुनिया में चले जाते थे। इन्होंने अपने जीवन में भी एक ऐसी ही सुंदर महिला की कल्पना की थी। विपिन बाबू के मन में था कि उनकी पत्नी फूल सी कोमल, सूरज जैसी चमक, कोयल सी आवाज और सुबह की लाली से शोभित हो।

अब विपिन बाबू के कॉलेज की परीक्षा भी खत्म हो गई थी। विपिन के लिए कई सारे रिश्ते आ रहे थे। एक दिन विपिन के मामा ने उसकी शादी भी तय कर दी। विपिन का मन लड़की देखने का था। उसे देखना था कि जैसी पत्नी की वो कल्पना करता है, वो वैसी है या नहीं। विपिन ने मामा से अपनी होने वाली पत्नी को देखने का निवेदन दिया, लेकिन मामा ने उसे कहा कि वो बहुत ही सुंदर है उन्होंने उसे खुद देखा है। मामा की बातों पर भरोसा करके विपिन ने शादी के लिए हाँ कर दी। शादी का दिन भी आ गया। मंडप के पास बैठा विपिन अपनी पत्नी को देखने के लिए उतावला था। होने वाली पत्नी को उसने गहनों से सजा हुआ देखा। चेहरे पर घूंघट, हाथों और पैरों की सुंदर उंगलियां देखकर उसके मन को थोड़ी राहत मिली। दूसरे दिन विदाई के बाद जैसे ही डोली विपिन के घर पहुंची, तो वो तुरंत अपनी पत्नी को देखने के लिए दौड़ा। तब उसकी पत्नी पालकी से बाहर घूंघट उठाकर देख रही थी। जैसे ही विपिन की निगाहें उसपर पड़ीं उसे बहुत दुख हुआ।

विपिन ने जैसी पत्नी के सपने देखे थे, वो बिल्कुल भी वैसी नहीं थी। चौड़ा सा मुंह, चपटी नाक, फूले से गाल विपिन को बिल्कुल पसंद नहीं आए । रंग भले ही उजला था, लेकिन उसके अलावा विपिन के सपनों की दुल्हन से वो एकदम अलग थी। विपिन की सारी खुशी गुम हो गई । उसे मामा पर काफी गुस्सा आया, जिन्होंने लड़की की तारीफों के पुल बांधे थे । सबसे पहले उसने मामा से लड़ाई की । उसके बाद ससुराल वालों से और फिर अपने घर वालों से। विपिन के मन में हुआ कि इस महिला के साथ किस तरह से पूरा जीवन बिताऊंगा। इसके साथ पूरा जीवन मुझे कांटों भरा लगेगा। मैं सोच भी नहीं सकता कि ऐसी महिला से मेरी शादी हो गई है। मेरे क्या ख्वाब थे और क्या हो गया। भगवान को मेरे साथ ही ऐसा करना था। फिर उसके मन में हुआ कि शादी मैंने जबरदस्ती तो की नहीं थी। अब इस लड़की को क्या पता था कि पत्नी को लेकर मेरे क्या सपने थे। इसमें इसका क्या दोष है?

इस सोच के बाद भी विपिन का दिल उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं था। वो घंटों शृंगार करती थी, अपने बाल संवारती थी, लेकिन विपिन के मन को बिल्कुल भी नहीं भाती। विपिन हरदम उससे दूर भागता था और उसकी पत्नी पूरे भाव के साथ उसकी सेवा करना चाहती थी। होते-होते विपिन घर में पल भर भी नहीं टिकता था। जब भी विपिन की पत्नी आशा उससे कुछ बात करने की कोशिश करती, वो उसे दो खरी-खोटी सुना देता।

विपिन रोज दोस्तों के साथ बाहर जाता और पत्नी घर में उसका इंतजार करती रह जाती। काफी दिनों के बाद जब विपिन घर खाना खाने के लिए आया, तो आशा ने कहा कि आप मेरी वजह से घर में रहना ही छोड़ देंगे क्या?

विपिन ने मुंह मोड़ते हुए जवाब दिया, "घर में ही तो रहता हूं। बस आजकल नौकरी ढूंढने के लिए ज्यादा दौड़-भाग करनी पड़ रही है।"

आशा ने कहा, "मैं खूब जानती हूं कि आप घर में क्यों नहीं टिकते हैं। आप किसी डॉक्टर से बात करके मेरा चेहरा वैसा क्यों नहीं बना देते जैसा आप चाहते हैं।"

विपिन से चिढ़ते हुए कहा, "क्यों तुम बेवजह फिजूल की बातें कर रही हो। तुम्हें यहां आने के लिए किसने कहा?"

उसकी पत्नी ने पूछा, "जब आपको किसी चीज से परेशानी है, तो उसका इलाज भी करना होगा न?"

........>

मुंशी प्रेमचंद की कहानी: स्त्री और पुरुष

विपिन बोला, "भगवान जिस काम को नहीं कर पाया, उसे मैं कैसे कर दूंगा?"

गुस्से में आशा कहने लगी, "इसके बारे में आपको सोचना चाहिए कि भगवान ने जो किया है उसके लिए मुझे सजा क्यों मिले? हर तरह की सूरत वाले लोग दुनिया में हैं, लेकिन उनके पति ऐसा व्यवहार उनसे नहीं करते।" विपिन ने झल्लाते हुए जवाब दिया कि क्या मैं तुमसे कोई गलत व्यवहार करता हूं। क्या कभी मैंने तुमसे लड़ाई की है? तुम ही मेरे सामने आकर मुझसे बहस करने लगती हो।

ये सब सुनकर आशा वापस चली गई। उसे लगा कि इन्होंने मेरे प्रति अपना दिल पत्थर का बना लिया है। अब ये मेरी एक नहीं सुनेंगे ।इधर, विपिन का ऐसा रैवया देखते-देखते आशा बीमार हो गई। वो अपनी जिंदगी से निराश थी। उधर, बीमार आशा को देखने विपिन एक बार भी नहीं गया। उसके मन में था कि इसे कुछ हो जाए, तो इस बार अपनी पसंद की लड़की से शादी कर लूंगा। अब तो विपिन को और भी छूट मिल गई थी। पहले कभी-कभी आशा रोकती-टोकती और बाहर जाने की वजह पूछ लेती, लेकिन अब विपिन पूरी तरह आजाद था। गलत आदतों में पड़कर विपिन सिर्फ अपने पैसे ही बर्बाद नहीं कर रहा था, बल्कि सेहत और चरित्र सबकुछ खो रहा था। होते-होते विपिन का पूरा शरीर पीला और कमजोर पड़ने लगा। शरीर में सिर्फ हड्डियां ही नजर आ रहीं थीं और आखों के आसपास काले घेरे व गड्ढे पड़ गए थे। अपने चेहरे को देखकर रोज विपिन उसे संवारने की कोशिश करता, लेकिन कुछ हो नहीं पाता। एक दिन महीनों से बीमार पड़ी आशा बरामदे के पास चारपाई पर लेटी थी। उसने विपिन को काफी समय से नहीं देखा था, इसलिए किसी से विपिन को बुलावा भेजा। आशा के मन में था कि बुलावा, तो भेज दिया है, लेकिन वो आएंगे नहीं। आशा का बुलावा मिलने पर आज विपिन पहले की तरह झल्लाया नहीं। वो बिना संकोच किए आज आशा के पास जाकर खड़ा हो गया। जैसे ही आशा ने उसे देखा तो हैरान हो गई।

उसने पूछा, "क्या आप बीमार हैं? बहुत दुबले हो गए हैं और पहचान में भी नहीं आ रहे हैं।"

विपिन ने कहा, "जिंदा रहकर भी अब क्या करना है।"

आशा ने नाराज होते हुए विपिन का हाथ पकड़कर चारपाई पर बैठा दिया और बोली, "दवाई क्यों नहीं करते?"

आज आशा के इस तरह उसे खींचने पर विपिन नाराज नहीं हुआ। उसके व्यवहार में वो कड़वाहट नहीं थी। उसका गुस्सा जैसे पिघल गया था। चारपाई में बैठते ही विपिन ने जवाब दिया, "अब दवाई से मेरा कुछ नहीं होगा। मौत ही मुझे अपने साथ लेकर जाएगी। मैं ऐसा तुम्हें दुख देने के लिए नहीं कह रहा हूं। मैं भयंकर रोग से ग्रस्त हूं और अब मैं बच नहीं सकता।"

इतना कहते ही विपिन चारपाई पर बेहोश होकर गिर गया। उसका पूरा शरीर कांपने लगा और पसीना-पसीना हो गया। विपिन की ये हालत देखकर महीनों से बीमार पड़ी आशा झट से बिस्तर से उठ गई। वो पानी लाकर विपिन के चेहरे पर मारने लगी, लेकिन उसे होश नहीं आया। शाम तक विपिन का मुंह टेढ़ा हो गया और शरीर में कोई हरकत नहीं थी। यह लकवा था, जिसकी चपेट में विपिन आ गया था।

मुंशी प्रेमचंद की कहानी: स्त्री और पुरुष

इस रोग में बीमार आशा ने विपिन की खूब सेवा की। लगातार 15 दिन तक विपिन की स्थिति नाजुक बनी रही। दिन-रात एक करके आशा द्वारा की गई मेहनत रंग लाने लगी। विपिन की हालत कुछ संभली, लेकिन अभी भी आशा अपनी गोद में सुलाकर ही विपिन को दवाई पिलाती और खाना खिलाती थी। इन सबमें वो अपनी तबीयत को जैसे भूल ही गई थी। शरीर बुखार से तपता था, लेकिन उसे विपिन की स्थिति के सामने खुद की सेहत कुछ भी नहीं लगती था।

अब विपिन के दोनों पैरों में थोड़ी ताकत आने लगी थी। होते-होते चार-पांच महीने में वो अपने पैरों पर खड़ा होने लगा, लेकिन उसका मुंह टेढ़े का टेढ़ा ही रहा। उसके चेहरे पर पहले जैसी रोनक भी नहीं रही। एक दिन अपना चेहरा शीशे में देखने के बाद विपिन ने कहा कि मुझे भगवान ने अपने किये की सजा दी है। आशा मैंने तुम्हें सुंदर नहीं माना और आज देखो मैं कितना कुरूप हो गया हूं। अब तुम भी मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा मैं तुम्हारे साथ किया करता था।

आशा ने हंसते हुए पति से कहा, "आप मेरी आंखों से देखेंगे, तो पता चलेगा कि आपमें कोई अंतर नहीं आया है। आप पहले जैसे थे, अब भी वैसे ही हैं।"

विपिन बोला, "अच्छा, बंदर जैसा मुंह दिख रहा है और तुम कहती हो कोई अंतर नहीं आया है। तुम्हें मालूम है न भगवान ने मुझे मेरी करनी की सजा दी है।"

सबने खूब जतन किए, लेकिन विपिन का मुंह सीधा नहीं हो पाया।

पति के पैर पर खड़े के कुछ समय बाद ही आशा ने घर में पूजा रखी, क्योंकि उसने भगवान से विपिन के लिए मन्नत मांगी थी। पूरे मोहल्ले के लोग विपिन के घर में जमा थे। भजन-संगीत चल रहा था।
तभी आशा की एक दोस्त ने उससे पूछा, "अब तो तुझे अपने पति का चेहरा देखने की इच्छा नहीं होती होगी। कैसा टेढ़ा हो गया है मुंह?"
गंभीर आवाज में आशा बोली, " मुझे तो कुछ फर्क नजर नहीं आता है।
फिर आशा कहने लगी, "सच कह रही हूं। मुझे उनकी आत्मा मिली है, जो उनके रूप से बढ़कर है और मैं हमेशा उनकी आत्मा को ही देखती हूं।"
विपिन कमरे में दोस्ते के साथ बैठा था। तभी उसके एक दोस्त ने बरामदे की तरफ खुलने वाली खिड़की खोल दी।

उसने विपिन से पूछा, "आज तो यहां कई खूबसूरत लड़की हैं। बता तुझे कौन सी अच्छी लग रही है।"

विपिन ने कहा, "खिड़की बंद कर दो और जहां तक रही पसंद की बात तो मुझे वही पसंद है, जिसके हाथ में फूल की थाली है।"

दोस्त ने पूछा, "तेरे चेहरे के साथ पसंद भी खराब हो गई है क्या? मुझे तो वो दूसरों से कम खूबसूरत लगती है।"

विपिन बोला, "मैं उसकी आत्मा को देख रहा हूं, वो हर किसी की सूरत से ज्यादा सुंदर है।"

तब उसने पूछा, "अच्छा, यही तुम्हारी पत्नी है क्या?"

विपिन ने कहा, "हां बिल्कुल, यही वो देवी तुल्य महिला है।"

सकारात्मक सीख : व्यक्ति की बाहरी सुंदरता नहीं, बल्कि मन की सुंदरता देखनी चाहिए। बाहरी सुंदरता कभी भी फीकी पड़ सकती है, लेकिन जिसका मन सुंदर है, वो व्यक्ति हमेशा ही सुंदर रहता है।

मंजु तिवारी कुमार, (दुबई) यू. ए. ई.
राजनीति शास्त्र में एम.ए.,कहानी, कविता लेखन में सक्रिय हूँ ।
सरिता, गृह शोभा, मुक्ता और चंपक में कई रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं
पत्रिका सरिता में सालों तक संपादन कार्य किया है ।

चुनाव

"हम तो बहुत आधुनिक विचारों वाले हैं बहू को बेटी बनाकर रखेंगे, धीरेन बाबू ने मोतीचूर का लड्डू मुँह में लगभग ठूँसते हुए कहा ।
"और बेटा बस पढ़ाई ही करती रही या फिर माँ ने कुछ खाना वाना बनाना भी सिखाया है", मालती देवी भी कहाँ कम थी ।

"आंटी जी थोड़ा बहुत बना लेती हूँ ",आत्मविश्वास से भरी बीनू ने जवाब देते ही साथ में सवाल भी किया ।
"खाना बनाना तो अनुराग को भी आता होगा "?
आख़िरकार आपके इकलौते बेटे हैं, इतना तो आपने उन्हें सिखाया ही होगा ?
"अरे, कहाँ बेटा अनु ने तो एक कप भी नहीं उठाया आज तक , अपने इकलौते बेटे से कौन सी माँ भला काम कराएगी । हमने बिलकुल राजकुमार की तरह परवरिश की है अनुराग की, तभी तो हम अनु के लिये एक मिडल क्लास सर्वगुण संपन्न लड़की देख रहे हैं ।
इसे खाने पीने का भी बहुत शौक़ है । तुम हमें इसलिए पसंद आयी । सरकारी नौकरी भी है तुम्हारी, घर और दफ़्तर दोनों आराम से संभल जाएँगे ।
हमारा क्या है आज हैं कल नहीं" ! मालती देवी ने अपनी प्लेट का समोसा ख़त्म करते हुए कहा ।

"क्या, मैं दो मिनट आपके बेटे से अकेले में बात कर सकती हूँ" ? बीनू ने अपने माता पिता को देखते हुए कहा !

"हाँ -हाँ क्यों नहीं आख़िरकार शादी तो तुम दोनों को ही करनी है" । धीरेन बाबू ने ठहाका लगाते हुए कहा ।

टैरेस पर खड़े अनुराग को सिगरेट का धुआँ उड़ाता देख बीनू को थोड़ा अजीब लगा ।

चुनाव...

"यू स्मोक "?अनुराग ने सिगरेट बीनू की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा ।

"आई डोंट",।

बीनू कुछ बोलती उससे पहले ही अनुराग बोल पड़ा, "आजकल की लड़की होकर भी तुम स्मोक नहीं करती" !

"आईएम स्योर तुम्हारा कोई एक्स भी नहीं होगा ! ना ही कभी किसी के साथ यू नो ..."!

डैम सो मिडल क्लास, "पूछो क्या पूछना चाहती थी " ? धुएँ के छल्ले हवा में उड़ाते हुए अनुराग ने उसे सवालिया निगाहों से देखा !

"बस ज्यादा कुछ नहीं, बस एक सवाल, महिलाओं के आत्मनिर्भर होने और उनके मौलिक अधिकारों को लेकर तुम्हारी क्या राय है"

"व्हाट मौलिक अधिकार यार, महिला कुछ भी कर के आदमी की बराबरी नहीं कर सकती और रही बात आत्मनिर्भर होने की तो अच्छी बात है लेकिन शादी के बाद अगर जॉब करनी है तो फिर घर के लोगों से ये एक्स्पेक्ट न करे कि वो उनके हिस्से का काम करे "।

"मैं तुम्हें जॉब करने से नहीं रोकने वाला... बट , हाँ डोंट एक्स्पेक्ट कि मैं तुम्हारे लिए घर के काम करने लगूँगा ।
मेरा अपना एक लाइफस्टाइल है । जिसके साथ में कोई कोम्प्रोमाईज़ नहीं कर सकता" ।

"थैंक्यू अनुराग,अब नीचे चलें", बीनू ने अनुराग से आग्रह किया ।

"थैट्स इट !!, और कुछ नहीं पूछना तुम्हें ? और थैंक यू किसलिए"?

"तुमने मेरे सारे डाउट क्लियर कर दिये,थैंक यू इसलिए "।

"लगता है बात बन गई", बीनू और अनुराग को सामने से आता देख मालती देवी ने मुस्कुराते हुए कहा ।

"नहीं आंटी जी बात नहीं बनी, मुझे आपका इकलौता राजकुमार बेटा पसंद नहीं आया " । बीनू हाथ जोड़कर खड़ी हो गई ।

"लेकिन..."!

"प्लीज़... आप लोग अपना और मेरा समय और बर्बाद न करें," हाथ जोड़े हुए बीनू ने दृढ़ता से कहा ।

"पता नहीं बेटी को कैसे संस्कार दिये हैं ,ऐसे कोई किसी की बेइज़्ज़ती करता है क्या"

"चल बेटा, इसके जैसी तो तेरे लिये दस मिल जायेंगी ," बड़बड़ाते हुए धीरेन बाबू और मालती देवी ने बेटे का हाथ पकड़ा और वहाँ से निकल लिये ।

मेहर

वन्दना खुराना 'रूही'
लंदन - यू. के.
लेखिका, कवयित्री, रेडियो एंकर 'कुछ दिल ने कहा' एवम अध्यक्ष (वैदिक कल्चरल सोसायटी ऑफ ईस्ट एंग्लिया)

"बस अब जल्दी करो और कितनी देर लगाओगी" देव ने अखबार से नजर उठाकर मेरी तरफ कहा।
"रास्ता यहाँ से आधे-पौने घंटे का है और सभी इंतजार भी कर रहे होंगे।"
"बस 2 मिनट" और अपने बालों को पिन करते हुए और साड़ी की फॉल को ठीक करते हुए मैंने कहा।
यूरोप की छुट्टियों में ये हमारा आखिरी दिन था और हमारे मेजबान के निमंत्रण पर हम शहर के प्रसिद्ध रेस्टोरेंट में डिनर के लिए जा रहे थे। मैं हमेशा अपने ट्रिप में साड़ी रखती हूँ और मौके की तलाश में रहती हूँ जब अपने सांस्कृतिक परिवेश के ऐसे सभा में शामिल हो सकूँ। हर साल ओवर्सीस डॉक्टर्स की कॉन्फ्रेंस यूरोप के एक सुन्दर डेस्टिनेशन पर आयोजित की जाती है ताकि काम की साथ- साथ घूमना-फिरना भी हो जाए।
अपना हैंडबैग लेकर कार की सीट पर बैठ कर हम अपने गंतव्य के लिए निकल पड़े। स्विट्जरलैंड की खूबसूरत पहाड़ियों और दिलकश फिजाओं के बीच शहर की भागदौड़ से दूर ये रेस्टोरेंट बहुत ही मशहूर था। दिल आकस्मिक ही किसी फिल्मी गाने को याद करने लगा और इन सुंदर वादियों से गुजरते हुए सफ़र का पता ही न चला। देव ने गाड़ी को कार पार्क मे लगाते हुए कहा "आइए मेहरबां आपकी डेस्टिनेशन आ गई है"।
और जैसे ही मैंने दरवाजे से एंटर किया तो सबकी निगाहें हमारी तरफ मुड़ने लगी। बाद में मुझे पता चला कि बॉलीवुड फिल्मों का और हिन्दुस्तानी परिवेश का यहाँ पर बहुत आदर और सम्मान किया जाता है। मेरी साड़ी के कारण सब की नज़रें मेरी तरफ़ मुड़ रही थी। अपनी संस्कृति और तहज़ीब पर मुझे हमेशा ही गर्व रहा लेकिन आज इस अंजान शहर में कुछ ज्यादा ही महसूस हो रहा था।
हम अपने मेजबान को ढूंढ़ते हुए टेबल पर मिले और बातचीत में मशगूल हो गए। पीछे हल्का सा स्विट्ज़रलैंड का लोक गीत और क्लासिक म्यूजिक बज रहा था और वेटर्स बहुत खूबसूरत मुस्कान के साथ अपने सभी गेस्ट से ऑर्डर्स ले रहे थे और खाना सर्व कर रहे थे। तरह- तरह के ग्लास में ड्रिंक्स की खनखनाहट हल्की सी संगीत के तरंग जैसी हवा में अपना सरूर डाल रही थी।
" मैम व्हाट वुड यू लाइक टु ऑर्डर" किसी ने मुझे मेन्यू देते हुए पूछा। आवाज कुछ जानी पहचानी महसूस हुई तो नजरें उठाकर उस चेहरे को देखना चाहा- मेरी आंखें जैसे जड़वत हो गयी। सामने खड़ी वेट्रेस की ड्रेस में मेरी बचपन की वो दोस्त मेहर जो कि जमाने की भागदौड़ में मुझसे बिछड़ गई और बहुत तलाशने पर भी उससे संपर्क नहीं हो पाया था। आज नियति का खेल देखें कि एक विदेश के छोटे से शहर में किस परिस्थिति में हमारा आमना सामना हुआ। मैं बहुत कुछ पूछना चाहती थी। लेकिन शायद मेरी आवाज गले में ही कैद हो गई और हजारों सवाल आंखो में उभर आए। उसके हाथ से भी ट्रे गिर गए और सकपका कर वह अंदर चली गई। पीछे जाती उसकी छवि के पीछे मेरे हजारों अनगिनत सवाल भी एक कारवां बन कर चल दिए। मेडिकल की पढ़ाई के लिए जब मुझे हॉस्टल के लिए जाना था तो आज भी मेहर का मुझसे लिपटकर स्टेशन पर विदाई का वह लम्हा मेरे मनस्थल पर अविचल छवि के रूप में एक सुंदर एहसास के रूप में कैद है। कुछ समय तो हॉस्टल में खतों के द्वारा हमारी बातचीत जारी रही लेकिन फिर पत्र का आदान - प्रदान बंद हो गया। आज कल की तरह संपर्क करने की सुविधाएँ भी बहुत कम थी। फ़ोन करने के लिए भी ट्रंक कॉल बुक करना पड़ता था। उसके जन्मदिन पर जब मैंने फ़ोन किया तो आंटी ने ये कहकर फ़ोन काट दिया की "मेहर तो मर गई"। उसके बाद से कभी भी संपर्क नहीं हो पाया। परीक्षा के उपरांत जब मैं घर आई तो पता चला वे सपरिवार गांव से जा चुके थे। मेहर ने घर से भागकर एक क्रिस्चन टूरिस्ट के साथ शादी कर ली थी। फिर वह कहाँ चली गई किसी को पता नहीं था और अंकल आंटी ने भी अपनी दूसरी बेटी के भविष्य को लेकर कही दूसरे शहर मैं बसेरा करना ही उचित समझा।
धीरे धीरे हमारे मेज पर सुंदर सुगंधित पकवानों को सजाया जा रहा था। अब मेरा मन खाने से ज्यादा मेहर से बात करने को छटपटा रहा था। मैं एक मौके की तलाश में थी जब मैं उससे मिलने के लिए समय निश्चित कर सकूँ। आज भी किस्मत ने हमें इस मोड़ पर मिलाया जब हम अगली सुबह भारत के लिए फ्लाइट पकड़ रहे थे। कुदरत आज शायद हमारी दोस्ती पर मेहरबान थे, मेहर की शिफ्ट आधे घंटे में खत्म हो रही थी और मैं बहाना करके बाहर कार पार्क में उसके पीछे चल पड़ी। पांव मानो आज उड़ जाना चाहता था। शरीर में एक कंपन थी , आंखो में नमी और आवाज में एक अजीब सी पीड़ा का क्रंदन था। बिना कुछ बोले मैंने उसको आलिंगन में ले लिया और अचानक हम दोनों बाहों की गिरफ्त में लिपटे।
आंखो से आंसुओं की गुफ्तगू सुनने लगे। खुदा का शुक्र था कि आज हम दोनों आमने - सामने एक दूसरे के हाथ पकड़ कर अपनी दोस्ती को पुनः जीवनदान देने की कोशिश कर रहे थे। पता चला कि मेरे हॉस्टल जाने के बाद एक एनजीओ के साथ काम करने के लिए रॉबर्ट हमारे गांव में आया और मेहर की सादगी पर मोहित हो गया। मेहर के माता पिता की रजामंदी न होने पर उसने भाग कर रॉबर्ट के साथ स्विट्जरलैंड आने का निर्णय किया जिससे कि माता पिता ने उसके साथ सभी संबंध काट दिए। जिंदगी की खुशियां चुनने के लिए उसे अपने एक हिस्से की खुशियों को न्योछावर करना पड़ा। अपने सपनों को जीने के लिए उसे सभी संबंधों से अपने आप से काटना पड़ा था। इस बात का उसे बहुत दुख था लेकिन शायद प्यार का जादू ऐसा ही होता है कि वे इस तरह के फैसले लेने का हौसला दे देता है। अपने जीवनसाथी के साथ उसने देश से दूर विदेश में अपना घरौंदा बनाने के लिए उड़ान भरी।

.........>

मेहर...

भाग्य की रेखा में ये खुशियाँ शायद बहुत छोटी उम्र लेकर आई थी। छह महीने के अंदर ही रॉबर्ट एक सड़क दुर्घटना में इस दुनिया से विदा हो गया, साथ ही मेहर के गर्भ में एक प्रेम उपहार स्वरुप आखिरी निशानी देकर अंतिम सांस लिया।

मेहर ने अपने गर्भ में पलते रॉबर्ट की प्रेम की निशानी को जीवन का धन मान कर फिर से जिंदगी को संभालने की कोशिश की। भारत वापस लौटने के लिए उसके पास कोई विकल्प न था, इसलिए इसी जगह रहने का निश्चय करके उसने अपने बच्चे के जन्म की तैयारी शुरू की। ईश्वर मानो एक के बाद एक उसके लिए चुनौतियां खड़ी कर रहा था। बच्चे के जन्म के समय उसे मालूम हुआ वह स्पेशल चाइल्ड है।

हालात का मुकाबला करते हुए उसने अपने निर्वाह के लिए नौकरी कर ली। जैसे ही बच्ची बड़ी हुई उसे स्टेट रेजिडेंशियल होम में दाखिल करवाना पड़ा, क्योंकि उसकी देखभाल करना अब मेहर के बस में नहीं था। अब अपने जीवन से उसने रंगों को निकालकर बस नौकरी और अपनी ईवा की देखभाल में ही झोंक दिया था। सारा वीकेंड वह रेजिडेंशियल होम में बिताती। उसे मालूम था कि ईवा भी कुछ साल में उसे छोड़कर रॉबर्ट के पास चली जाएगी। उसने तय कर लिया था कि ईवा के जाते ही वह अपने जीवन को भी समाप्त कर देगी। अपनी जिंदगी में उसने किसी और को शामिल करने की गुंजाइश नहीं छोड़ी थी।

मैं निशब्द उसकी दर्दभरी जीवनी के साथ अपने भावों को सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर रही थी।

ये समय भावुकता में बहने का समय नहीं था। न जाने कहाँ से मुझे ये हौसला मिला की मैं उसके सामने एक सच्चे दोस्त बनकर अपना हाथ आगे बढ़ा दी,

"सुनो ये ईश्वर का संकेत है की आज हम मिले हैं। तुम्हारे जीवन में बहुत चुनौतियां रही है लेकिन अब हम मिलकर इसका सामना करेंगे"

न जाने कैसे ये शब्द मेरे मुँह से निकले और मेहर फफक कर रो पड़ीं। गले लगाते हुए मैंने उसे हर दिन मेरे साथ संपर्क में रहने का वादा लिया।

मुझे ढूंढ़ते मेरे पति और हमारे मेजबान आए तो मैंने उनका परिचय अपने दोस्त से कराते हुए कहा- "मिस्टर एडवर्ड योर हॉस्पिटलिटी एंड सिटी एस एक्सेप्शनल ब्यूटीफुल। कैन यू प्लीज़ लुक आफ्टर माइ फ्रेन्ड"

एअरपोर्ट के रास्ते में मैंने ईवा से मेरी वाट्सएप वीडियो द्वारा बातचीत की। जिंदगी में बहुत सारे कॉन्फ्रेंस और अचीवमेंट्स देश विदेश में हासिल किए लेकिन जो आज मैं एक चीज़ वापस लेकर जा रही थी वो एक नायाब तोहफा था!

दोस्ती का! ज़िंदगी का!

ज़िंदगी की सफलता का।

डॉ. मीनू पाराशर 'मानसी'
दोहा क़तर

लेखिका, कवयित्री, पूर्व अध्यक्ष (हिंदी टोस्ट मास्टर)

सोच बदलें (लघुकथा)

आज एक फोटो देखकर दस साल पुरानी बात याद आ गई जब किसी ने पड़ोस में रहने आई नई विवाहिता स्त्री पर आक्षेप लगाते हुए कहा था - "ज़रा उनकी बहू को तो देखो.... न बिंदी, न साड़ी... लगता ही नहीं कि शादी शुदा है।"

ये चुभते हुए शब्द कुछ समय बाद उस विवाहिता स्त्री 'कनक' तक भी पंहुचे और उसके दिल को आघात भी लगा कि मेरे परिवार को जिस बात पर आपत्ति नहीं है, उस पर पड़ोसियों को क्यूँ आपत्ति हो रही है। पर अपनी शालीन छवि को कनक ने कभी धूमिल न होने दिया।

आज कहीं से उन्हीं पड़ोसियों की बहू 'संध्या' की फोटो कनक को देखने को मिली तो उसे एक टीस सी उठी... अब क्या हुआ उन भारतीय संस्कारों का, जिनका ज़िक्र अक्सर उन तथाकथित संस्कारी पड़ोसियों के ज़ुबान पर रहता था। दूसरों की बहू बेटियों को संस्कार सिखाने वाले आज अपनी बहू की आधुनिक छवि को क्यूँ नहीं सुधारते ? दूसरों पर उंगली उठाना बहुत आसान होता है , परंतु एक बार स्वयं को भी आईने में देख लेना चाहिए।

यही हाल आज कल हमारे समाज का हो गया है। अपने घर में चाहे कुछ भी हो पर दूसरों पर कीचड़ उछालना कोई नहीं छोड़ता। अगर हम सभी अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए एक सकारात्मक व्यवहार अपना लें और दूसरों की कमियां निकालना छोड़ दें तो ये समाज हर बुराई से मुक्त हो जाएगा।

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी , नई दिल्ली

वरिष्ठ साहित्यकार, कमेंटेटर, संपादक, मीडिया विशेषज्ञ,
एवम संरक्षक (SYH भोर ई पत्रिका)

सोनू की बंदूक

सोनू की बंदूक उस तरह की बंदूक नहीं थी जैसी घर-घर मे बच्चे प्लास्टिक या लोहे की बंदूक से खेलते रहते हैं। दरअसल सोनू अपनी दोनों हथेलियों को आपस मे गूंथ कर दो उंगलियां बंदूक की नाल की तरह सामने रखकर जब ठाँय करता तो देखने वाला उसकी इस अदा को देखता ही रह जाता। उसकी इसी प्यारी अदा को देखने के लिए उसके चाचा और दूसरे घरवाले सोनू को जानबूझकर छेड़ते ताकि सोनू अपनी बंदूक से ठायँ करे। जब ठायँ करने पर सामने वाला अपने सीने या पेट पर हाथ रखकर हाय करता या लड़खड़ाता तो सोनू अपनी जीत पर खूब खिलखिलाकर हंसता । सोनू की बंदूक की प्रतिष्ठा अड़ोस पड़ोस और मोहल्ले में भी पहुंच गयी थी। सोनू चबूतरे पर होता तो मोहल्ले वाले भी उसे छेड़ कर ठॉयँ का मज़ा लेते और लड़खड़ाकर गिरने का नाटक करते। अब सोनू को अपनी बंदूक की मारक क्षमता पर पूरा भरोसा हो गया था।

उस दिन चीख-पुकार सुन कर सोनू नींद से उठकर आंगन मे आ गया था। दंगाइयों ने सोनू के पापा को घेर रखा था।पूरे घर के लोग चीख-चीख कर रो रहे थे, दंगाइयों के आगे रहम की भीख मांग रहे थे, पर दंगाई बेरहमी से सोनू के पिता को पीट रहे थे । अब सोनू को अपनी बंदूक याद आई.. उसने तुरंत दोनों हथेलियां गूंथकर बंदूक बनाई और अपनी बंदूक से दंगाइयों पर ठायँ-ठायँ करने लगा ..वो पूरी ताकत से लगातार ठायँ-ठायँ करता जा रहा था..!

सोनू समझ नहीं पा रहा था कि आज उसकी बंदूक बे-असर क्यों हो रही है...!

सैलाब !

पिता की मृत्यु के बाद के सारे कार्य संपन्न हो चुके थे।अब तेरहवीं होनी थी और अगले दिन मुझे नौकरी पर वापस ग्वालियर रवाना हो जाना था। बस एक ही डर बार-बार मुझे बुरी तरह परेशान कर रहा था और उस दृश्य की कल्पना मात्र से सहम उठता था मैं, और ये दृश्य था मेरी इस बार की विदाई का । जब दुख का पहाड़ टूट पड़ा हो । हर बार ग्वालियर रवाना होने के वक्त मां फूटफूटकर रोने लगती थीं, और मैं दो तीन दिन अवसाद मे रहता था। मोबाइल भी नहीं थे उन दिनों..। यूं भी कोई भी रिश्तेदार आता तो बातचीत के दौरान मां के आंसू ज़रूर निकलते। दरअसल मेरे एक भाई की अचानक मौत ने उन्हें हमेशा के लिए बेहद आहत कर दिया था और भाई भी ऐसा जो ध्रुव या प्रहलाद का अवतार था जिसे पूरी गीता और लगभग पूरा रामचरित मानस कंठस्थ था और अंताक्षरी विजेता के रूप मे पूरे ज़िले मे जिसकी प्रतिष्ठा थी। मां यूं भी बहुत भावुक थीं और आंसू उनके जीवन का हिस्सा बन गए थे।

तेरहवीं संपन्न हो गई थी, कल मेरी ट्रेन थी और मेरे मन मस्तिष्क मे वही विदाई...और मां के आंसुओं का सैलाब उमड़ रहा था।

आखिर विदाई के कठिन पल आ गए थे, बड़े भाई साहब रिक्शा ले आए थे, मैं अटैची लेकर सीढ़ियां उतरने लगा था। मां साथ -साथ थीं, भाभीजी और बहनें पीछे-पीछे थीं। सीढ़ियाँ उतरते ही गलियारे मे अचानक मां ने कंधे पर हाथ रखा था.."होनी को जो मंजूर था.. हो गया.. जानती हूं तुम भी बहुत भावुक हो..ज़रा भी दुख न करना.. मन लगा कर काम करना.. किसी बात की भी चिंता मत करना.."

न चाहते हुए भी मैं रुआंसा हो गया था, मैंने कातर दृष्टि से मां को देखा था।

मां की आंखों मे एक भी आंसू नहीं था..!!!

डॉ. रमा शर्मा, जापान
संरक्षक एवं मुख्य संपादक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान, संरक्षक (भोर, ई-पत्रिका (SYH)

निश्छल प्यार

नीलू दी और मै बचपन से ही अल्बर्ट अंकल के साथ रहते थे उनके घर में । अल्बर्ट अंकल हमारे पडोसी और बिज़नस पार्टनर थे पापा के लन्दन में। एक दिन अचानक कार एक्सीडेंट में चल बसे थे और हम दोनों बहनें तब सिर्फ दस औंर पाँच वर्ष की थी। अल्बर्ट अंकल हमें अपने घर ले गए ,लेकिन उनकी पत्नी मारिया आंटी बहुत गन्दी थी ,हमें बहुत मारती थी और घर का काम भी करवाती थी ,नीलू दी मुझे काम नहीं करने देती थी । और मेरे फूल तोड़ लेने पर मारिया आंटी के बेंत से मार भी नीलू दी खाती थी । अल्बर्ट अंकल के मुँह से रात को बड़ी गन्दी बास आती थी जब वो ऑफिस से आ कर मुझे ज़ोर से जकड़ कर किस करते थे। अंकल किस करने के बाद मेरे पूरे शरीर पर हाथ फेरते थे और बाद में मुझे टॉफ़ी देते थे । टॉफी तो मुझे अच्छी लगती थी पर उनका ज़ोर से किस करना और हाथ फेरना बिलकुल पसंद नहीं था। नीलू दी मुझे उनके सामने नहीं जाने देती थी ,मुझे समझ नहीं आता था कि क्यों नीलू दी अंकल के आते ही मुझे इधर-उधर छुपाने की नाकाम कोशिश करती हैं।

एक दिन कुछ लोग आये और नीलू दी को ले गए। दी बहुत रोई ,लेकिन किसी ने नहीं सुनी। मैं बाथरूम में जा कर सबसे छुप कर रोती रह गई, बाद में किसी ने बताया की नीलू दी की शादी कर दी गई है लेकिन किसी अमीर बूढ़े से , और अब वो किसी से मिल नहीं सकती, क्योंकि उनके पति नहीं चाहते । उस दिन पहली बार मैं चर्च गयी और माँ मरियम को घूर कर देखती रही फिर फफक कर रो पड़ी, लेकिन वहाँ मेरे आँसू देखने वाला कोई नहीं था।

एक दिन अचानक ही मुझे लेने भी कुछ लोग आ गए अलबर्ट अंकल के घर ! मेरे रोने का किसी पर कोई असर नहीं पड़ा और मारिया आँटी ने उनके साथ भेज दिया। रास्ते में उन लोगो की बातों से पता चला की मम्मी-पापा के कार का एक्सीडेंट भी उन्हीं लोगो ने किया था अल्बर्ट अंकल के कहने पर और नीलू दी को भी अंकल ने बेच दिया था , क्योकि वो बूढ़ा नीलू दी के लिए अंकल और मारिया आंटी को बहुरत सारे पैसे दे कर गया था । पापा ने सारा बिज़नस मेरे नाम किया था इस लिए मुझे उन लोगों ने अपने घर में रखा हुआ था और मेरे 18 वर्ष की होते ही मुझे बताये बिना प्रॉपर्टी के काग़ज़ात पर मेरे से साइन करवाए और गुंडों के हाथ मुझे मरवाने के लिए भेज दिया। मैं हैरान हो कर सब बातें सुन रही थी। मुँह हैरानी से खुला हुआ था और आँखों से अविरल आँसू बह रहे थे ये बातें सब सुन कर। मैं तो अल्बर्ट अंकल और मारिया आंटी को अपने माँ पापा जैसा समझती थी, लेकिन उनका ये घृणित रूप देख कर जैसे मुझे पूरी दुनिया से ही नफ़रत हो गयी थी । मैं अवाक् सी सब बातें सुन रही थी । ज़िंदगी से विश्वास उठ गया था उस क्षण। मुझे मारने के लिए जिन लोगों के साथ भेजा गया था, उन में एक आदमी ने गिड़गिड़ाते हुए सबसे मुझे न मारने की विनती की। उसने बताया कि उसकी बेटी मुझ जैसी थी जो मर चुकी थी , वो मुझे मारना नहीं चाहता था। सबने आपस में बात की और मुझे उस इंसान के साथ कहीं दूर जाने के लिये सौंप दिया। भावुक हो कर भरे गले से उसने मुझे सीने से लगा लिया, उसके गले से लग कर मुझे एक अजीब सा सुकून मिला जब कि अलबर्ट अंकल के छूने से मुझे घिन्न सी आती थी । उसने बताया वो सालों से छिपकर मुझे रोज़ देखने आता था और मुझ में अपनी बेटी को देखता था। मैं भावुक हो कर उस के गले लग गयी । पैसे वालो से तो गरीब ही अच्छें हैं, जिनके दिल में दर्द तो है ।

अब न जाने कितने वर्ष बीत चुकें हैं, लेकिन अब भी मैं अपने उस गरीब पापा की उसी टूटे-फूटे घर में रहती हूँ उन की बेटी बन कर । अब मेरे मुँहबोले पापा बहुत बूढ़े हो चुके हैं। मुझे उन्होंने वो प्यार दिया जिसे मैं बचपन में ही खो चुकी थी। नीलू दी की तस्वीर मेरे पास है, जब भी ये तस्वीर देखती हूँ तो सारी बाते आँखों के आगे ऐसे घूम जाती हैं जैसे कल की बात हो । मैं तस्वीर देखते हुए चुपचाप अपनी आँखों की कोर साफ कर लेती हूँ और चेहरा घुमा कर चारपाई की ओर देखती हूँ तो एक बूढ़ा इंसान, जो हिल नहीं सकता, मात्र हड्डियों का ढाँचा है, जिसकी आँखें आधा इंच गड्ढों में धँस चुकी है । लेकिन मेरी ओर देखते हुए उन बूढ़ी कमज़ोर आँखों से हज़ारों वॉट के बल्ब जैसी रौशनी निकल रही है , चेहरे पर एक बहुत प्यारी मासूम सी मुस्कान है। मैं निश्चिंत हो कर आराम कुर्सी पर सर टिका कर आँखें बंद कर लेती हूँ। बंद आँखों में भी उनके निश्छल प्यार के हाथों को अपने माथे पर महसूस कर सकती हूँ ।

ई. अंकिता बाहेती
दोहा क़तर
इंजिनियर, कवयित्री, मंच संचालक

दिल का रिश्ता

रौनक बचपन में दयनीय हालत में मुझे मिली थी। एक बच्चा जो अपने ही जीवन की आपाधापी से जूझ रहा था, उस पर दर-दर के धक्के खा रहा था। मैं अपने बेटे को स्कूल से लेकर घर आई ही थी कि एक मासूम डरा-सहमा, लहूलुहान बच्चा मेरे आंचल से चिपक कर छिपने की कोशिश कर रहा था।

उसकी हालात देख मैं भी डर गई थी। अचानक कुछ लोग उसे ढूंढते आए। तब तक मैंने उसे घर में छुपा लिया था, और कह दिया "यहां कोई नहीं आया।"

उस बच्चे ने बताया कि घर वाले उसे पहले समझाते थे, फिर पीर फकीर के यहां झाड़ा लगवाया, डॉ से बिजली के झटके भी दिलाए और अब मारपीट कर उसे बताना चाहते हैं कि वो एक लड़का है, लड़की नहीं। मुझे समझते देर ना लगी कि वो किन्नर है, और घरवालों ये बात समझना नहीं चाहते।

शाम को पति घर आए तो उन्हें मैंने सब बताया। वो भी बोले "उफ्फ, मां बाप क्यों नहीं समझते? समाज तब ही अपनाएगा, जब अपने अपनाएंगे?"

हमने तय किया, उसे साथ रखकर, आगे पढ़ाने का और उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का। मैंने उसे नया नाम दिया "रौनक", और दिल का रिश्ता सदा के लिए जुड़ गया।

आज "रौनक" घर आई और मेरे पैर छू बोली "देखो, मां जी, आज मेरे इस जीवन और इस सम्मान की हकदार आप हैं।" पीछे पत्रकारों, फोटो लेने और पुलिसकर्मियों की फौज थी। रौनक आज क्षेत्र का चुनाव जीत, विधायक बन गई। उसे खुश देख, हम सब भी खुश थे।

मंजू श्रीवास्तव 'मन'
वर्जीनिया - अमेरिका
लेखिका, कवयित्री एवम संस्थापक "सृजन" साहित्यिक मंच

अर्धांग

शन्नो भाभी की टनटनाती ढोलक के साथ 'बन्नो तेरी अंखियां सुरमेदानी' गाने से जुगलबंदी करती राधा बुआ की मधुर सुरलहरी सुनकर घर की लड़कियां कमर मटकाने से अपने को रोक नहीं सकी। कुर्सियों पर सजधज कर जमे बैठे पाहुने ऐसा समां बांध रहे थे जैसे इन्द्र सभा सजी हो। तभी मुन्ना चाचा ने आवाज़ लगाई - "भाई इतनी देर से हलुआ पकौड़ी की खुशबु सूंघ रहे हैं खिलाओगे कब ? लाओ भाई।"

जी हाँ, शादी हो रही है लालता प्रसाद जीऔर संगीता की सुपुत्री सलोनी की। शादी की चहल पहल हो और काना फूसी न हो, बातों में तड़का ना लगे ऐसा कैसे हो सकता है भला। जैसे ही माधुरी बुआ ने पूछा "अरे भाई अभी तक बन्नो का इकलौता भाई, घर का लाड़ला सुयश नहीं आया। शादी के दिन ही आएगा क्या ?" तपाक से बिल्लो चाची बोली "हाय दैया आपको पता नहीं कि उसने शादी कर ली और भाई साहब ने उसे घर से निकल दिया।"

"क्या बात करती हो , लड़की दूसरी जाति की है क्या ?"

"अरे दूसरी जाति की नहीं आदमी जात की है। मतलब लड़का है।लड़के ने लड़के से शादी कर ली।"

" हे राम क्या जमाना आ गया है। खानदान की नाक कटवा दी।"

इधर बातें बनाई जा रही थी उधर एक कमरे में मातम पसरा था ,संगीता के आंसू ही नहीं थम रहे थे। भाई गोपाल बोला -"दीदी रोना बंद करो ,मैंने जुगाड़ कर लिया है।मैं जीजा जी को समझाता हूँ।"

तभी उसे लालता प्रसाद दिखे , उसने बांह पकड़ कर उन्हें कमरे में खींच लिया और बोला -"जीजाजी कम से कम दो दिन के लिए ही सही गुस्सा थूक कर सुयश को घर बुला लीजिये। सलोनी के ससुराल वाले क्या कहेंगे की इकलौता भाई शादी में नहीं आया तब भी तो आपकी इज़्ज़त जायेगी।"

लालता प्रसाद भड़क कर बोले -"इज़्ज़त तो ऐसे भी जानी है वैसे भी जानी है। सुयश घर आया तो उसके साथ क्या कहते हैं, वे उसका अर्द्धनारीश्वर भी आएगा। सारी दुनिया मेरे मुँह पर हँसेगी ,मैं झेल नहीं पाऊंगा।मेरे लिए तो वो मर गया।"

" जीजा जी जमाना बदल गया है। लड़की की लड़की से ,लड़के की लड़के से कितनी ही शादियां हो रही हैं। अब तो इसे कानूनी मान्यता भी मिल गई है फिर काहे की शर्म।अपने जिगर के टुकड़े को दूर रख कर आप खुश है क्या दीदी का हाल देखो आँख के आंसू ही नहीं रुक रहे। अरे आपको तो दो बेटे मिल गए।बस अब आप हाँ कहो मैं बुलाता हूँ उसे।"

" अरे पहले तो हमने दोनो को चप्पल मार कर भगा दिया अब ऐन मौके पर बुलाएँगे तो आएगा क्या ?"

"अरे आयेगा कैसे नहीं।" मामा ने पिछवाड़े का दरवाज़ा खोल कर आवाज दी तो दौड़ता हुआ सुयश आकर पिता के गले लग गया।उसका दोस्त या कहें उसका अर्धांग दरवाज़े पर खड़ा था।संगीता ने उसे हाथ से पकड़ कर अंदर खींच लिया और गले से लगा लिया। सारे गिले-शिकवे आँसुओं के रास्ते धुल गये ,समझ के ताले खुल गए ,रिश्ते सुलझ गए ,लोंगों के मुंह बंद हो गए और पकवानों के स्वाद बढ़ गये।

बाल - मंच
किड्स वर्ल्ड (शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी)

मोनी विजय (संस्थापक)

शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच ने बच्चों की प्रतिभाओं को नया विस्तृत आकाश देने के लिए एक अलग और नई दुनियाँ बनाई है, जिसका नाम है 'किड्स वर्ल्ड - शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी' । इस मंच के जरिए बच्चें खेल-खेल में ही कई रचनात्मक कार्य कर लेते हैं, जिसमें लेखन, पेंटिंग, ज्ञान-विज्ञान, रसोई, सेवा कार्य , नैतिकता से जुड़े किस्से-कहानी, ज्ञानवर्धक बातें एवं उन्हें मंच देना। इसके अलावा मस्ती की पाठशाला के साथ-साथ उनके हुनर को तराशना जैसे अनगिनत कार्यो को SYTC करती आई हैं। अब 'भोर', ई -पत्रिका में भी बच्चों की प्यारी दुनियाँ को उतना ही समान अधिकार मिला है इससे उनकी रचनात्मकता और साहित्य प्रेम को बढ़ावा मिलेगा । बच्चों ने प्रथम अंक में भी अपना जमकर प्यार उड़ेला है । अगले अंक में उनकी कहानी ,लघुकथा तथा अन्य विषयों को भी जोड़ा जायेगा। पाठको से अनुरोध है बच्चों की मासूमियत और रचनाओं को अपना भरपूर प्यार दें।

धन्यवाद।

सुप्रिया श्रीवास्तव
दिल्ली
(एडमिन)

संगीता गुहा
ठाकुरता (एडमिन)

"बाल-गुंजन"

कविताएं

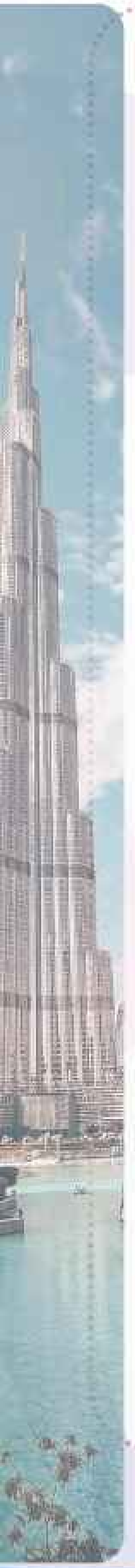

प्रवासी नागरिक

आँखों में है कुछ सपने
सांसो में है कुछ अपने
मिल जाये थोड़ी खुशी उन्हें
घर में सब को त्यौहार सा लगे
बस इस खातिर प्रवासी मै बन गया।

जाना कहाँ है सपनो के ख़ातिर
यह मुझे पता न था
वक्त ने मजबूर किया और छोड़ दी अपनी गलियाँ
बस इस खातिर प्रवासी मै बन गया।

हाथों की लकीरों को देख,
रो पड़ा में जोर से
जिम्मेदारीयों के बोझ ने दूर किया मुझे अपनों से
बस इस खातिर प्रवासी मैं बन गया।
देखता हूँ आसमान को
अपना सा ना लगे
सबकुछ है यहाँ
पर फिर भी बेगाना सा लगे
बस इस खातिर प्रवासी मै बन गया।

जीना इतना आसान नही
पर जब आई मै यू.ए.ई मानों मन ही संभल गया
सबमें अपनापन सा लगा
बस इस खातिर प्रवासी मैं बन गया।
बस इस खातिर प्रवासी मैं बन गया।
बस इस खातिर प्रवासी मैं बन गया।

वंशिका हरवानी
कक्षा -6 -C ,अवर ओन इंग्लिश हाई स्कूल,
शारजाह , यू.ए.ई. {लड़की शाखा}

होली- निबंध

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने, वाला हिन्दुओं का एक प्रमुख त्यौहार है। यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। बुराई पर अच्छाई की जीत को व्यक्त करने के लिए होली की पूर्व संध्या पर होलिका दहन की परंपरा निभाई जाती है। होली हमारे अंदर के अहंकार और बुराई को मिटाकर , सभी के साथ मिलकर रहने का संदेश है। इस त्यौहार के कारण लोगो में सामाजिक एकता की भावना प्रबल होता है। अगली सुबह लोग सारे गिले-शिकवे भूल कर गले मिलते है और एक-दूसरो को रंग-गुलाल लगाते हैं। होली एक ऐसा त्योहार है जिसे हर धर्म और जाति के लोग मनाते हैं।

प्रकृति नयन सिन्हा
कक्षा : 4 G
डॉन बॉस्को स्कूल
पटना

होली आई,होली आई

होली आई होली आई,
धूम मचाती होली आई,
रंगो का त्योहार है होली
खुशियों का त्योहार है होली।

लाल - गुलाबी, पीले रंगों की बहार लाई, प्यार भरा इंतजार लाई।
पिचकारी - भर-भर लाई, हर चेहरे पर आज गुलाल' की बौछार लाई।

मिलकर खेले हम, हर दिल की प्यार लाई
रंगो का मिलन, खुशियों का संगम लाई ।
बुराई को हराने, अच्छाई को बढ़ाने आई।
होली का यह त्योहार, जीवन को सजाने का संदेश लाई ।

नमन सिन्हा
कक्षा -8 A
सेंट केरेंस स्कूल
पटना

शौर्य नारायण
कक्षा - 4
न्यू पुलिस लाइन
लोदीपुर, पटना

होली है..

आया होली का त्योहार
आया, खुशियों का मौहाल
लाया। रंग-बिरंगे फूल
खिले है,
रंग बिरंगे रंग लगे हैं।

सब कहते हैं होली है।
लेकिन यह रंगों की गोली
है। रंगो की बरसात हुई है
देखो होली की शुरुआत
हुई है।

साल में एक बार आता है
पर्व, रंगों से भर देता है यह
पर्व । खुशियों की टोली
लाता है यह पर्व
मिल जुल कर रहना
सिखलाता है यह पर्व
आया होली का त्योहार
आया, खुशियों का माहौल
लाया ।

आओ तस्वीर बनाएं...

प्राची सिंह
कक्षा - 3
संत केरेंस हाई स्कूल
पटना

श्रेयांश कुंडू,
कोलकाता
उम्र - 6, कक्षा-2,
स्कूल-डीपीएस
रूबी पार्क
कोलकाता

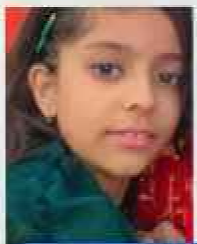

आद्या श्रीवास्तव
उम्र - 8+, कक्षा - 4
स्कूल - बाल भारती
पब्लिक स्कूल, दिल्ली

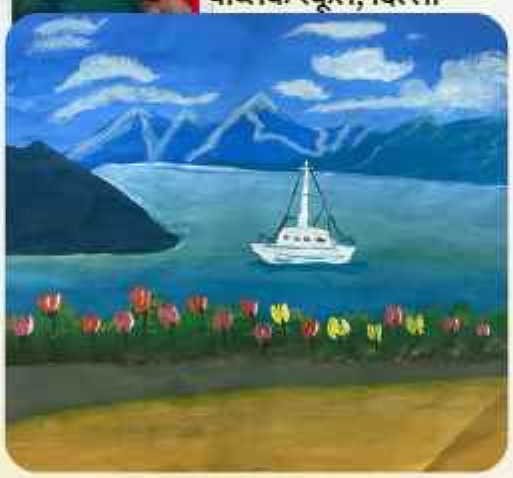

शौर्य कोइराला
उम्र - 6, कक्षा -
यू.के.जी.
स्कूल - मॉडर्न
इंडियन स्कूल,
काठमांडू
ललितपुर नेपाल

श्रेया शालिनी
पता - न्यू पुलिस लाइन
लोदीपुर, पटना

अगस्त्य अनय
रांची झारखंड
सेंट जेवियर्स स्कूल

"बाल-गुंजन"

कविताएं

वसंत ऋतु

श्रेया शालिनी
कक्षा - 8
न्यू पुलिस लाइन
लोदीपुर, पटना

वसंत ऋतु.....
आयी वसंत ऋतु आयी, खेतों में
हरियाली छाई।'
गूंज उठी है, पक्षियों की बोली खुशियों
का मौसम लाया ये टोली।

पीली सरसों लहरा रही है,
फसलों की शुरुआत हुई है।
बागों में कलियाँ छाई,
किसानों की मुस्कान उठी।

रंग-बिरंगे फूल खिले,
पक्षी पहक - महक उठे।
फूल-फूल पर बैठे भँवरे,
आमों में भी बौर है आये।

सबके मन का प्रेम है वसंत
ज्ञान की देवी को है पसंद।
कोयल कूकेगी अब बगिया में
नजारा कुछ ऐसा होगा जैसे
बिछा हो कोई बिछौना।

होली

अथर्व सिन्हा

कक्षा - 7G
डी.पी.एस
रांची

होली
होली है भाई होली है
प्यार भरी रंगोली है

आओ मिलकर साथ चले
सबसे जाकर गले मिले

लो अपनी होली निकली
धूम मची है गली-गली

पीला, हरा, गुलाबी, लाल
चलो हाथ में लिए गुलाल

सबसे अपनी यारी है
रंग बिरंगी पिचकारी है

नाच रहे हैं खड़े -खड़े
झूम रहे हैं बड़े -बड़े

रंगों का त्यौहार है न्यारा
हमको है ये सबसे प्यारा।

मेरी माँ

जो हमको अपनी कोख से दुनियां दिखाए,
जो हमको अपनी हाथों से खाना खिलाए,
हमारी रक्षा के खातिर कवच बन जाए,
हमारी खुशियों के खातिर ख़ुद जोकर बन जाए
ऐसे लोग बहुत कम मिलते होंगे,
पर उनमें से है एक मेरी माँ।

सफ़ल कोइराला
कक्षा - 8
मॉडर्न इंडियन स्कूल
काठमांडू ललितपुर
नेपाल

जो हमारी आदतों पर ध्यान दें,
जो हमको सही राह दिखाए,
जो हमारी मुश्किलों में साथ दें,
जो हमें नित्य कुछ नया सिखाए,
ऐसे लोग बहुत कम मिलते होंगे
पर उनमें से है एक मेरी माँ।

हमारी शरारतों पर दूसरो से डांट खाए,
हमारी गलती पर हमें सुधारे,
मां नहीं हो तो पूरा परिवार साथ न हो पाएगा,
हम उनके नज़र से जो ओझल हो जाए,
तो जो आंसू बहाए,
ऐसे लोग बहुत कम मिलते होंगे
पर, उनमें से है एक मेरी माँ।

ताली

उपन्यास (पहला खंड)

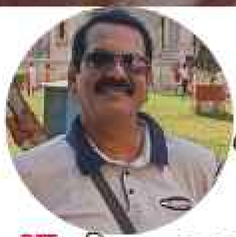

डॉ. किशोर सिन्हा

(वरिष्ठ साहित्यकार, उपन्यासकार, रंगमंच कलाकार, संपादक एवम संरक्षक (भोर, ई-पत्रिका)

आज फिर एक लाश गिरी है।

पिछले पन्द्रह दिनों में ऐसा दूसरी बार हुआ है।

चौराहे पर ये लाश पता नहीं कितने घंटों से पड़ी है। ख़बर मिलते ही श्रुति को फ़ोन किया कि ब्रेकिंग न्यूज़ चला दे और मैं भागा डाकबंगले चौराहे की तरफ़।

जैसा कि ऐसे मामलों में होता है, लाश को घेरकर एक भीड़ खड़ी थी। पुलिस का एक अफ़सर उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा था, पर वे मानने को तैयार नहीं थीं। अपने अंदाज़ में ताली बजा-बजाकर उनका प्रतिरोध जारी था।

निकट पहुंचकर मैं कैमरा लेकर तैयार हो गया। भीड़ में मुझे कुछ परिचित चेहरे नज़र आये- रंजू, सोनिका, तान्या.... इनके अलावा, मीडिया के कुछ साथी...। वे सब ज़ोर-ज़ोर से नारे लगा रही थीं, "पुलिस प्रशासन.... हाय... हाय..."; "पुलिस प्रशासन.. हाय.. हाय..."; "ज़ुल्म का बदला लेके रहेंगे.... लेके रहेंगे.... लेके रहेंगे...."

सोनिका, तान्या, रंजू.... और इनके साथ एक और नाम था रंजीता का। इनसे मेरी भेंट चार साल पहले बिहार दिवस के समारोह में हुई थी। इनकी संस्था का एक स्टॉल वहां लगा था। हालांकि तबतक मुझे ये पता चल चुका था कि उनके ये नाम असली नहीं हैं। फिर भी मैं इनके हर समारोह को कवर करता आ रहा था। एकाध दफ़े मैंने उनसे कहा भी कि मेरे यू-ट्यूब चैनल के लिए इंटरव्यू दे दें, पर "हां, सर जी... हम ज़रूर देंगी इंटरव्यू..." से बात कभी आगे नहीं बढ़ पायी थी।

तबतक सोनिका मुझे देख आगे बढ़ आई थी, "देखो न सर जी, हमारी अंशु को पता नहीं किसने मार डाला...." उसकी आंखें गुस्से से उबल रही थीं।

"कलतक तो बिल्कुल ठीक थी... पता नहीं, ये कैसे हो गया... हमारी क़िस्मत में ऐसे ही मरना लिखा है सर जी....." कहते-कहते सोनिका की आंखें भर गईं, आवाज़ रुंध गई।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूं, कैसे कहूं... सांत्वना के शब्द कहीं खो से गए थे।

उस वक़्त तो मेरा पत्रकार-धर्म ही पूरी तरह जाग्रत था, सो मैं अपने काम में लग गया। मैं सिर्फ़ इतना ही कह पाया कि समय मिलते ही उसे फ़ोन करूंगा।

इस घटना को हुए लगभग माह-भर बीत चुके थे। मैं भी काम के सिलसिले में बहुत दिनों तक बाहर रहा। लौटने पर याद आया कि मैंने सोनिका को फ़ोन करने का वादा किया था।

मैंने मोबाइल से उसका नंबर लगाया और जैसे ही उधर रिंग हुआ उसने फटाक से उठा लिया, मानो वो मेरे फ़ोन का ही इंतज़ार कर रही हो।

मेरे कुछ बोलने से पहले ही उधर से आवाज़ आई, "हैलो सर जी, कैसे हैं आप....!"

"मैं ठीक हूं.... आप लोगों का मसला सुलझा या नहीं... कुछ पता चला कि आपके साथी.... क्या नाम था.... रंजू..... का क़त्ल....."

"अंशु.... अंशु नाम था उसका....", मेरी बात बीच में ही काटकर उसने सुधारा।

"अरे, सॉरी... हां.... हां.... अंशु...." मैंने थोड़ा झेंपते हुए कहा।

"नहीं सर जी, सॉरी की कोई बात नहीं... क़त्ल तो हुआ है, पर किया किसने ये तो पुलिस पता लगा सकती है या आप-जैसे पत्रकार लोग... हम क्या कर सकती हैं..."

एकबारगी तो मुझे लगा कि कहीं ये मुझपर तंज़ तो नहीं कर रही कि किया-धरा कुछ नहीं और अब महीने-भर बाद पूछ रहे हैं कि क़ातिल का पता चला कि नहीं...।

पर तबतक मेरी क्षणांश की चुप्पी को तोड़ते हुए उधर से सोनिका की आवाज़ सुनाई दी, "जाने दो साहब, हमारी ज़िन्दगानी की यही कहानी है, न आंचल में है दूध, न आंखों में पानी है..."

कोई दूसरा अवसर होता तो मैं उसकी इस तुकबन्दी और प्रसिद्ध कवि की पंक्तियों को अपने जीवन से इतने सुंदर ढंग से उपालम्भ देने पर बधाई देता या कम-से-कम 'वाह... वाह..." ज़रूर करता, पर यहां मैं पूरी तरह ख़ामोश हो गया था।

शायद सोनिका ने इस भारीपन को महसूस किया था, तभी तुरंत उसने बात बदली, "छोड़िए साहब जी.... आप बताइये.... आप तो मेरा इंटरव्यू करने वाले थे न..... कब करेंगे.... वैसे मेरी मानिये तो मेरा ही नहीं, मेरी जैसी कई हैं संस्था में, आप उनसे भी बात कीजिए.... आपको नई-नई कहानियां मिलेंगी.... दिल में जमे हुए दर्द की कहानियां... सूखे हुए आंसुओं की कहानियां....."

वो एक सांस में बोलती चली गई थी। मुझे लगा उसके अन्दर एक आग धधक रही है। पर मैं कुछ कहता उससे पहले उसकी आवाज़ आई, "सर जी, आप कल ही आ जाओ.... हम सब इकट्ठा रहेंगी यहां.... हमारी जिंदगानी का भी क्या ठिकाना...."

उसके वाक्य के आख़िरी हिस्से ने मुझे झकझोर दिया। मैं कुछ कहता कि दूसरी तरफ़ से कातर-सी ऐसी आवाज़ आई, "आप आ जाओ साहब...." कि मैं उसके आगे कुछ कह न सका।
मुझे लगा कि चलो, वर्षों से जो मैं करना चाह रहा था, वो अब संभव होने जा रहा है।
मैंने श्रुति को फ़ोन लगाकर बताया कि एक स्पेशल प्रोजेक्ट है। वो कल मेरे घर आ जाये और मेरे साथ चले। मैं बातचीत करूंगा तो कैमरा चलानेवाला भी तो कोई होना चाहिए और मुझे पता है कि इस काम के लिए श्रुति से बेहतर कोई हो नहीं सकता।

Ú Ú Ú

हम जब सोनिका की संस्था में पहुंचे तो उसने सारा इंतज़ाम कर रखा था। करीने से लगी कुर्सियां, बीच में टेबुल... सफ़ेद रंग के कवर से ढंका हुआ..... पानी के दो-तीन बोतल.... और टेबुल के ठीक बीच में शीशे के एक बड़े से गिलास में अटाये गए गुलाब और डालिया के ताज़ा फूल....। उसके ठीक सामने बड़ी-सी दरी बिछाई गई थी, जिसपर सोनिका और उसके साथ संस्था में काम करने वाली दूसरी किन्नरें थीं।
हमें देख सोनिका उठ खड़ी हुई और उसकी ऐसी तैयारी देख मैं हंस पड़ा था। वह मेरे हंसने पर प्रश्नवाचक मुद्रा में मेरी ओर देखने लगी।
"अरे भाई, इतनी साज-सज्जा की ज़रूरत नहीं थी... हम कोई मीटिंग या सेमीनार करने नहीं जा रहे.. इसे हटाना पड़ेगा..." मैंने टेबुल की ओर इशारा किया।
तबतक श्रुति आगे बढ़ आई थी और जल्दी ही उसने सबकुछ मेरे मन मुताबिक सेट करा दिया।
इंटरव्यू से पहले मैंने सोनिका और बाक़ी सबसे सिर्फ़ इतना ही पूछा कि वे घबड़ा तो नहीं रही हैं... जब उन्होंने 'ना' में सिर हिलाया तो मैंने श्रुति को इशारा किया कि वो सबको 'कॉर्डलेस माइक' लगा दे।

अब मैं आप सभी पाठकों को ये बता देना उचित समझता हूं कि यहां से हमारा इंटरव्यू शुरू होगा। इस इंटरव्यू में ही वो सारी कहानी या कहानियां छिपी हुई हैं, जिनके बारे में लोग बहुत कम जानते हैं। इन कहानियों का न कोई आदि है, न अन्त। बस, ये जीवन के गुंजल्क हैं, जिन्हें इन कहानियों के माध्यम से खोलने की मेरी कोशिश है। इसके ज़रिये एक नहीं, कई ज़िंदगियों के अक्स और आंसू आपको दिखेंगे.... मैं यही दुआ करता हूं कि इन ज़िदगियों को एक बेहतर पहचान और स्थान मिल जाये.... और इनके ऊपर कभी कोई तिरस्कार की ताली न बजाये, आमीन....!

सोनिका

++++++++++++

सोनिका, ये बताइये कि आपके जीवन में क्या-क्या घटित हुआ और कब आपको पता चला कि आप ट्रांसजेंडर हैं...!

मैं पैदा हुई तो मेरे स्ट्रक्चर में यह कहा गया कि लड़का हुआ है। फैमिली में बहुत सारी ख़ुशियां थीं। लड़का होने से एक फ़ैमिली को अलग ही ख़ुशी होती है। पर जब पता चला कि नहीं बेटा नहीं है, यह ट्रांसजेंडर पैदा हुआ है, तो समाज से छुपा के रखना बहुत ज़रूरी था; क्योंकि समाज में 1983 में वह एक्सेप्टेन्स नहीं था- एक किन्नर पैदा होना किसी के घर में। तो अपनी फैमिली से बिलॉन्ग करते हुए बहुत सारी चीज़ों को 'सैक्रिफ़ाइस' करना पड़ा एजुकेशन के लिए। उसी बीच में जैसे-जैसे बढ़ती गई मेरे अंदर की जो लड़की थी वह धीरे-धीरे जवानी की तरफ मुड़ गई। एक लड़की की जब मैच्योरिटी आती है, उसी तरह मेरी ज़िंदगी में भी मैच्योरिटी अंदर से आना शुरू हुई। मुझे आइब्रोज करना पसंद था, आईने के सामने खड़े रहकर लिपस्टिक लगाना.... ये, वो.... लड़कियों के कपड़े पहनना पसंद था....। उसके लिए बहुत बार मेरी फैमिली ने मुझे मारा-पीटा। ये सब घर में मेरे को फ़ेस करना पड़ा। पर एक टर्न आया कि नहीं, अब अपने अंदर की नारी को उसका हक़ दिलाऊंगी। तब उम्र के सोलह साल में मुझे अपनी फ़ैमिली से अलग होना पड़ा, यही कहते हुए कि अलविदा, क्योंकि ये मेरा समाज नहीं है। यह समाज मुझे कभी नहीं अपनाएगा, इसलिए मुझे अपने समाज के पास जाना चाहिए जो किन्नर समुदाय है।

तान्या

****

जब मेरा जन्म हुआ, तो एक लड़के की तरह ही हुआ। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे उम्र बढ़ती गई, हमारे में फ़िज़िकल चेंजेज़ आने लगे, जो एक तरह से लड़कियों वाले थे। मैं जब नाइंथ क्लास में पहुंची, तबतक यह मेरा पूरा खुल के आ चुका था। उस वक्त मुझे नवीं क्लास में ही मेरे घर वालों ने मेरा स्कूल छुड़वा दिया और घर में ही रहने लगी। मैंने फिर से अपनी पढ़ाई शुरू की, आगे की, सब से लड़ के, घर से लड़ के, समाज से लड़कर मैंने पोस्ट ग्रेजुएशन तक किया।

आमतौर से जो बचपन होता है..... बचपन में बहुत सारे खेल होते हैं.... बहुत सारे दोस्त होते हैं.... लड़का है तो उसके लड़के दोस्त होते हैं.... लड़की है तो लड़कियां दोस्त होती हैं...... बचपन में आपकी दोस्ती किसके साथ रहती थी.....

हमारी फीलिंग थी कि हम लोग ज़्यादातर लड़कियों के साथ कंफ़र्टेबल रहते थे। जैसे लड़कों वाला खेल होता है ना कि अभी अगर हमारे यहां कोई बच्चा है, जो लड़का है तो वह बैट-बॉल की तरफ ज़्यादा आकर्षित होता है कि नहीं, मुझे बैट-बॉल चाहिए। लेकिन हम लोग का शुरू से था कि नहीं, हमें गुड़िया चाहिए खेलने के लिए... हमें बहुत अच्छा लगता था। फिर हम गुड़िया की शादी करते थे।

सोनिका

यह सब अच्छा लगता था। खाना बनाना, फ्रेंड्स के साथ बैठकर, वह भी लड़कियों के ग्रुप में हम खेलते थे- सर पर दुपट्टा लेकर बैठना, शर्माना, चलते वक़्त कमर में लचक लाना। यह अलग ही बचपन था। पर जो बचपन हम जी रहे थे तो इस समाज ने भी कुछ ऐसे ताने कसे... "ए गुड़..... ए मामू.... ए छक्का...." ऐसे ताने सुनते हुए हमारा बचपन एक तरह से छिन गया। बचपन की यादें बहुत आती हैं। जब हम दूसरे बच्चों को खेलते हुए देखते हैं.... लड़कियों को, लड़कों को.... तो हम कभी-कभी सोचते हैं कि हमारा बचपन भी एक था, जिसको आज हम ढूंढ़ते हैं। जब हम अपनी कम्युनिटी के बीच में बैठते हैं तो बचपन को जीने की पूरी कोशिश करते हैं, हम उस बचपन को याद करते हैं और उसको अच्छे पॉजिटिव ढंग से मिलाकर सोचते हैं, उसके साथ जीने का अधिकार हमको भी है और बच्चों की तरह।

आपके कई दोस्त होते हैं, बचपन की सहेलियां होती हैं.... ऐसे दोस्त, जो ट्रांसजेंडर नहीं हैं और जिन्होंने आपका साथ दिया है....**

मेरी लाइफ में तो स्कूल टाइम के फ़्रैन हैं। अब जब उनको पता चला कि जो हमारे साथ पढ़ता था- वो आज एक मीडिया पर्सनैलिटी है तब उससे मेरा संबंध टूट चुका था, क्योंकि मैं एक किन्नर हूं। आज मैं हूं, मेरा एक नाम है। तब मेरा एक्सेप्टेंस नहीं था, क्योंकि मैं किन्नर हूं और उसकी सोच का क्या। उसकी फैमिली उसको कहती थी कि उसके साथ मत घूमो.... कहीं उसके साथ मन मिल जाये तो तुम भी उसके जैसा ना बन जाओ। तो वह डर था जिससे वह हमसे खुल कर बात नहीं कर पाते थे। एक समय भारत आज़ादी के लिए लड़ रहा था; वैसे ही हम अपनी आज़ादी के लिए लड़ रहे थे कि हमें भी आज़ादी चाहिए, हम भी आज़ादी से जीना चाहते हैं। जब भारत का संविधान सब को आज़ादी से जीने का हक़ देता है... चाहे वो औरत हो या मर्द हो, जब वे जी सकते हैं तो किन्नर क्यों नहीं।.....

तान्या

मेरे बचपन के जो दोस्त थे, उनसे मेरा कनेक्शन पूरी तरह से टूट चुका है। जब ये बात सामने आयी कि मैं एक किन्नर समाज से बिलॉन्ग करती हूं तो अपने परिवार के दबाव के कारण वे चाह कर भी मुझसे जुड़ नहीं पाये।

आपलोगों ने उच्च शिक्षा हासिल की है। तो आप जहां भी पढ़ने गये, वहां आपके प्रति सहपाठियों का रवैया कैसा था?

लोग.... उनका क्या होता है... वे क्या सोचते हैं .... हां कभी-कभी तानेबाज़ी हो जाती है... हां देखो... देखो.... वो जा रहा है.... वही है.... वही है.... बस, यही बातें हो जाती हैं। पर टीचर- लोग को-ओपरेट भी करते हैं। हालांकि अब जब से मैं अपने पैर पर खड़ी हुई हूं, इंडिपेंडेंट हो गई हूं, आज जॉब कर रही हूं, पढ़ाई कर रही हूं तो अब मुझे इन सब बातों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कौन क्या बोल रहा है। मुझे बस एक ही चीज़ लगती है कि बस आगे बढ़ना है, जैसे एक पुरुष आगे बढ़ सकता है, एक महिला बढ़ सकती है, वैसे मैं भी बढ़ सकती हूं... बस यही सोच लेकर मैं आगे बढ़ी।

सोनिका

हम लोग हमेशा कहते हैं कि 'गुरु ब्रह्मा... गुरु विष्णु....', पर मेरे केस में ये 'गुरु ब्रह्मा... गुरु विष्णु....' नहीं रहा। पोस्ट ग्रेजुएशन के टाइम में वही गुरु लोग थे जो क़दम-क़दम पर मुझे नोच रहे थे कि आपको अगर पढ़ाई करनी है तो बेटा शाम को हमारे घर में आकर हमारा दिल बहलाओ। जब लोगों का दिल बहला सकती हो, ट्रेन में जा सकती हो तो हमारा दिल क्यों नहीं बहला सकती। हम भी पैसे देंगे। जिस प्रोफेसर को मैं गुरु मानती थी, वह जब मेरे शरीर का मज़ा ले रहा था, तब मैं सोचने लगी कि क्या मैं ग़लत हूं.... क्या मैं ग़लत चीज़ कर रही हूं.... क्या मैं ग़लत इंसान हूं या मेरी ग़लती है कि मैं पढ़ाई कर रही हूं। सोचती थी कि मुझे आज ज़िंदगी में कुछ बनना है और एक अलग पहचान बनानी है तो हम आपके शारीरिक सुख के साधन ना बन के हम आपके समाज की मुख्यधारा में आ सकें। समाज में ही मुझे एक स्त्री-पुरुष ने जन्म दिया है। एक स्त्री-पुरुष मेरे मां-बाप हैं। उन्हीं की कोख से निकली हूं और उन्हीं के आंगन की मिट्टी हूं, तो उस मिट्टी की तुलसी की एक स्त्री को नोचा जा सकता है तो मैं तो एक किन्नर हूं। मुझे नोच रहे हैं तो कुछ ग़लत नहीं कर रहा जब एक स्त्री को नोचा जा सकता है तो मैं तो एक किन्नर हूं। मुझे नोच रहे हैं तो कुछ ग़लत नहीं कर रहे....। मैं तो कुछ ग़लत नहीं कर रही, क्योंकि मेरे अंदर भी एक नारी-शरीर ही तो है।

आज आपका अपने परिवार से संबंध है या नहीं?

परिवार से हम पूरी तरह से अलग हो चुके हैं। मेरे रियल पेरेंट्स की डेथ हो चुकी है। बट, हां, जिन्होंने मुझे बेटी माना है, वह आज भी मेरे संपर्क में हैं। आज वह समाज में मेरे साथ चलते हैं और आज वही मेरा परिवार है; क्योंकि मेरे जो रियल पेरेंट्स थे, जिन्होंने मुझे जन्म दिया, उन्होंने अपने संस्कार के साथ मुझे पाल-पोस के दसवीं तक साथ दिया। मेरे पापा की यही कम्प्लेन्ट थी कि मेरा बेटा किन्नर कैसे हो गया और मेरे मम्मी को हमेशा ब्लेम किया जाता था कि यह मेरी औलाद नहीं है, यह किसी और की औलाद है। पता नहीं किसका यह ले आई है हमारे घर में।

तान्या

तान्या, आपके साथ क्या स्थिति है.... आपके पैरेंट्स

परिवार में मेरे से बड़े चार भाई और दो बहनें हैं। मेरे पिता जी एक्सपायर कर गए थे 1990 में। जनवरी में मेरा जन्म हुआ था और जुलाई में मेरे पिता जी एक्सपायर कर गए। तब से मेरी मां ने हम सबका ख़याल रखा, सब को पढ़ाया-लिखाया सबकुछ; लेकिन अपने बाक़ी बच्चों से अलग, मुझे नवीं क्लास में ही स्कूल छुड़वा दिया गया। कहा गया कि अब फ़िज़िकली सबकुछ पता चल रहा है, अब तुम घर में रहो। हम नहीं चाहते कि तुम्हारे कारण तुम्हारे भाइयों को बदनामी झेलनी पड़े.... तुम्हारी बहनों की शादी ना हो अच्छे घरों में। इन सब बातों को लेकर मुझे घर पर ही बैठाना शुरू कर दिया। लेकिन फिर भी मैंने बहुत संघर्ष किया। बहुत तरह की चीज़ें हुई, जैसे घर पर मारपीट.... फिर भी मैं आगे बढ़ती गई। पर आज के डेट में देखें तो भाइयों को मुझसे कोई परेशानी नहीं है। आज सबलोग अलग-अलग रह रहे हैं, लेकिन मेरी मां.... उनको मैं अपने साथ लेकर रह रही हूं। मां की मैं सेवा करती हूं। मेरी मां मुझे एक्सेप्ट कर चुकी है, और लोग भी धीरे-धीरे एक्सेप्ट कर रहे हैं; पर भाइयों में अभी एक्सेप्टेंस की कमी है। वह नहीं चाहते। वह तो बताते भी नहीं कि उनका एक ऐसा .... 'भाई'/'बहन'- जो भी है....

*सोनिका

अच्छा ये बताइये, किन्नर समाज में शादियां कैसे होती हैं.... मेरा मतलब है, आपके रस्मो-रिवाज़...?

किन्नर समाज में दो टाइप की शादी होती है। पहली शादी जब हम इस समाज में आते हैं तो बहुचरा माता से होती है, जहां पर हमें यह सिखाया जाता है कि यही हमारा सब कुछ है। बहुचरा माता मुर्गे पर बैठी हुई हैं जो किन्नर समाज की माता हैं। हमारा एक ट्रेडिशन होता है कि कम्युनिटी में आने के बाद चालीस दिन तक हमें उस एक रूम में रहना पड़ता है जहां पर कम्युनिटी के बारे में.... हर चीज.... कैसे हमें अपने कपड़ों का ख़याल रखना है.... जो एक मां अपनी बेटी को सिखाती है दुल्हन बनकर जाते वक्त.... कि बेटा आपको अपना पल्लू कैसे रखना है.... आपके बाल कैसे होने चाहिए.... आपकी चाल कैसी होनी चाहिए.... इन सब चीजों पर ध्यान दिया जाता है। फिर चालीस दिनों के बाद पूरे रस्मो-रिवाज़ से हल्दी लगाकर शादी होती है माता के साथ और उसके बाद हमारे गुरु हमारे माता-पिता बन जाते हैं। हमारा अपना एक परिवार बन जाता है। जैसे मैं पंजाब से हूं.... वहां मेरी मां हैं जिनकी मैं बेटी हूं। पर मेरी गुरु हैं जो मुंबई से हैं। अब मेरा सबकुछ मेरी कम्युनिटी है। आज मेरी फ़ैमिली पूरी है.... मेरे पास मेरी बहनें हैं जो किन्नर समाज से बिलॉन्ग करती हैं। हमारे यहां शादी होती है, दहेज दिया जाता है। उसी तरह से, रीति-रिवाज़ से विदा करके मुझे मेरे गुरु के घर भेजा गया। मेरे गुरु का घर ही मेरी ससुराल है। अब शादी हुई तो समाज में चल रही हूं, समाज के सब काम कर रही हूं, पढ़ाई-लिखाई कर रही हूं।

आपने कैसे शादी की...?

मैं बताती हूं। मेरी लाइफ़ में कुछ ऐसा हुआ..... मैं कभी भूल नहीं सकती। ये तब की बात है जब मेरे पास कोई जॉब नहीं था और मुझे 'ट्रेन मांगना' पड़ता था। उस वक्त वे मेरी लाइफ़ में आए.... एजुकेशन होते हुए भी ट्रेन में जाकर वह करना पड़ता था.... कहते थे लोगों से कि 'दे दे भैया'... 'दे दे मामा'... लोगों से प्यार से जो भी मिलता था वह लेकर हम लोग चले आते थे, तो उस वक्त ये वहां पर बैठे हुए थे ऊपर.... और उनके पास पैसा नहीं था। तो उन्होंने मेरे लोगों को बोला, "हम तीन दिन से भूखे हैं.... कुछ पैसे दो...।" मेरे चेले ने मुझे आवाज़ दिया कि गुरु देखिए, ये पैसा मांग रहे हैं। मैं गई, उन्हें देखा। उनसे पूछा कि क्यों मांग रहे हो पैसा.... तो उनका आन्सर था कि हम घर से भाग कर आये हैं.... अभी हमारे पास कोई सपोर्ट नहीं है.... हमको भूख लगी है और हमारे पास पैसा भी नहीं है....। उस वक्त मैंने उनको सपोर्ट किया.... खाना खिलाया। फिर वे बोले कि खाना खिला दिया तो एक छत का इंतजाम करा दो.... और मेरे लिए कोई जॉब भी दिला दो। मैं सोच में पड़ गई। सोचा, इनको कहीं शिफ़्ट करा देंगे.... सपोर्ट करेंगे....। मैं उन्हें घर ले आई। दो-तीन दिन मेरे घर में रहे। मैंने अपने एक फरेंड, जो एमबीए में मेरे साथ थे, उनसे बात की कि कुछ हो सकता है क्या.... किसी कॉल सेंटर में। मैंने उसके सीवी भी फॉरवर्ड कर दी। कुछ ही दिन में उसको कस्टमर-केयर में जॉब मिल गई। मैंने कहा, "अब तेरे को जॉब मिल गई है.... सब कुछ मिल गया.... तू कहीं पर भी कमरा लेकर रह सकता है...." तो उसका आंसर था कि बाहर कहीं किराया देने से अच्छा कि मैं आपको दूंगा.... क्योंकि अभी मेरे हाथ में पैसा नहीं कि मैं अलग रह सकूं.....।

मैं क्या कहती....। फिर हम साथ-साथ रहने लगे। थोड़े दिनों में हममें ऐसी अंडरस्टैंडिंग आ गई कि हम एक-दूसरे को अच्छे से जानने लगे। हममें एक बॉन्डिंग आ गई।

मेरे किन्नर होने से उन्हें कोई प्रॉब्लम नहीं थी। वह मेरे साथ रहते.... बिंदास घूमने जाते....। हमलोगों में सब कुछ था, सिर्फ सेक्सुअल रिलेशनशिप नहीं थे। वैलेंटाइन डे पर उन्होंने मुझे प्रपोज किया कि मैं आपसे अलग नहीं होना चाहता.... आप ही के साथ रहना चाहता हूं.... आपसे शादी करना चाहता हूं....। मैंने कहा, ठीक है....। फिर हमने एक मंदिर में जाके शादी कर ली। अपनी फ़ैमिली में उन्होंने बताया कि हां, मैंने शादी की है। उसकी फ़ैमिली ने उस वक़्त एक्सेप्ट किया मुझे.... मैं तब अच्छा-ख़ासा हज़ार-पांच सौ रोज़ कमा के ला रही थी। उनके बेटे की पूरी सैलरी उनके पास जाती थी..... उसका ख़र्चा तो कुछ था ही नहीं।

बाद में उनकी बेटी की शादी आई तो उन्होंने बताया कि उनको सोने की ज़रूरत है। तो मेरे पास जो भी गोल्ड था मेरा, मैंने दे दिया कि जाओ, अपनी सिस्टर की शादी कराओ, आख़िर वो मेरी ननद है। लेकिन उस शादी में मुझे इनवाइट नहीं किया गया; क्योंकि आप समाज को कैसे बोलोगे कि हमारी बहू किन्नर है.... पर मुझे बहू का दर्ज़ा उन्होंने दिया.... अपनी फ़ैमिली में रखा, रेस्पेक्ट दिया। कहते हैं ना कि रिश्तेदार आख़िर रिश्तेदार होते हैं और हम दोनों ने शादी के दो साल बाद डिसाइड किया कि बच्चा एडॉप्ट करेंगे। तो हमने एक बच्चा एडॉप्ट किया। उसको जब घर लेकर आए तो प्रॉपर लीगल एडॉप्शन नहीं हो पा रहा था तो उसी टाइम में उसकी मौसी घर पर आई। मौसी उसकी मम्मी को भड़का दी कि पता नहीं ये किसका बच्चा उठा कर लाए हैं.... कैसा ख़ून होगा.... क्या होगा.... मतलब अनाप-शनाप बोलने लगी.... तबतक मैं धनबाद में जॉब करने लगी थी तो मेरे बारे में उसके मन में मिसअंडरस्टैंडिंग क्रियेट कर बोलने लग गई कि..... "वह तो शॉर्ट स्कर्ट पहन कर जाती है.... ब्लेजर्स पहन कर जाती है..... घर रात लेट से आती है.... कॉल सेंटर में क्या करती है... तेरे को पता है न..... कॉल सेंटर का नेचर तू तो जानता है ना.... तेरे साथ तो और लड़कियां भी काम करती हैं..... कैसे-कैसे रिलेशंस रहते हैं....."

मतलब हमारे रिलेशन के बीच मिसअंडरस्टैंडिंग क्रियेट करने की कोशिश की गई। तो हर चीज़ की दवा होती है, पर शक की दवा नहीं होती। तो उनको मेरे पर शक होने लगा। मेरा लेट नाइट आना, मेरा लेट नाइट जाना मीटिंग के लिए, एक एच.आर.ओ. होने के नाते कभी-कभी क्लाइंट कॉल्स होते तो रात में मुझे कॉल सेंटर में रुकना पड़ता था। तो उसकी वजह से बहुत सारी इशूज मिसअंडरस्टैंडिंग की वजह से हमको सेपरेट होना पड़ा। ऑलमोस्ट छे-सात साल हो चुके हमें अलग हुए। पर आज जब मेरे आगे उनका नाम जुड़ा है, आज सबकुछ है, मीडिया में जब वे मुझे हर जगह देखते हैं..... गूगल में सर्च मारते हैं तो मेरा नाम दिखता है.... तो अब वे वापस आना चाहते हैं..... मेरी लाइफ़ में।

तो मैंने कहा, अब क्यों..... जब मुझे तुम्हारे सहारे की ज़रूरत थी तब तो तुमने मुझे सहारा नहीं दिया..... तब तो तुम मुझे छोड़ कर चले गए अपनी फ़ैमिली के साथ..... और ऐसे दोराहे पे छोड़ गए कि मैं डिप्रेशन में चली गई.... जॉब छूट गया और मैं फिर वापस उसी चौराहे पर आकर खड़ी हो गई, जहां पर मेरे को अपना तन बेच कर अपना पेट भरना था।....और उसी तन बेचते वक्त मेरा रेप हो गया। मेरा रेप होने के बाद ना मुझे कोई सपोर्ट मिला गवर्नमेंट से, ना कोई मेरी केस फाइल हुई, ना मुझे डॉक्टर से सपोर्ट मिला..... मैं उस ब्लीडिंग हालत में दर-दर की ठोकरें खा रही थी। मैंने आपको कॉल किया, बट आपने रिस्पांस नहीं किया.... आपने.... आपकी मम्मी ने कहा, "रेप कैसे क्या हुआ.... मतलब मेरी बहन सही कह रही थी.... तू धंधा भी करती है....।"

धंधे पर लाकर खड़ा किसने किया, आप ही ने किया। तो अब वापस मेरी ज़िन्दगी में तुम आओगे..... और वापस कोई आकर आपको कुछ बोल देगा, तो आप वापस मेरी लाइफ़ से वापस निकल जाओगे और फिर वापस मैं डिप्रेशन में आके, वापस वहीं चैराहे पर जाके खड़ी नहीं रहना चाहती हूं। जो हो चुका है, वह हो चुका है; अब मेरे लाइफ़ में आपके लिए कोई जगह नहीं है।

तान्या

मैं भी शादीशुदा हूं। मैंने बताया था कि नाइंथ क्लास में मेरी पढ़ाई छुड़वा दी गई थी तो फिर ...

क्रमशः अगले अंक में...

परिवेश, अभिनय और संवाद का सम्मोहन

इतनी जल्दबाज़ी करने के बावजूद म्यूनिख एयरपोर्ट से निकलकर होटल में पहुँचते हुए साढ़े तीन बज गए। होटल के काउंटर में चेक इन करते ही वहाँ के एक कर्मचारी ने कहा, 'मिस अप्रिलिया ने तुम्हें फोन किया था। थोड़ी देर रुको, मैं उन्हें ख़बर कर देता हूँ।' उसने फोन पर कुछ बात की, जर्मन भाषा में और फोन रखकर कहा, 'उनके श्रीमान 20 मिनट के भीतर तुम्हें लेने आ जायेंगे। जल्दी से कमरे में जाओ और तैयार हो जाओ।'

लम्बी ट्रान्जिट से आते हुए भी मेरे पास फ्रेश होने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। ब्रश किया, शेविंग की, हाथ–मुँह धोया और कपड़े बदले। दौड़ते हुए नीचे लॉबी में गया। यक़ीनन एक अधेड़ उम्र का, लम्बे बालोंवाला, शुट के उपर ओवरकोट पहने हुए, ऊँचे कद का जर्मन आदमी खड़ा था लॉबी में। मेरे मन में ख़याल था कि प्रोफेसर अप्रिलिया के श्रीमान भी प्रोफेसर ही होंगे। लॉबी में उनके सिवा और कोई नहीं था। मैं सीधे उनकी ओर गया, 'आर यू मिस्टर जेराई ?' वह खुश हुए, हाथ मिलाया और कहा, 'चलिए, देर हो रही है। ठीक समय में नहीं पहुँचे तो गेट बंद हो जाएगा। हमें फिर ब्रेक तक रुकना पड़ेगा अन्दर जाने के लिए।'

जेराई जाङ्क ने जितना हो सकता था, उतनी तेज़ चलाई कार। पूरे रास्ते भर, आसपास की खाली जगहों पर, पटरियों पर, छोटे–छोटे पार्कों पर जहाँ-तहाँ बर्फ –ही–बर्फ थी। इसीलिए कई जगहों पर गति सीमित किए बगैर तो सुख ही नहीं था। मैं बर्फ का लोभी। लेकिन, अभी बर्फ की ओर थोड़ी देर के लिए भी मन को थामे रखने की फुर्सत नहीं थी। ओपेरा हाउस का दरवाज़ा बंद होने से पहले ही पहुँचने के निश्चय में थे जेराई। गाड़ी के भीतर पसरा हुआ सन्नाटा मुझे कतई अच्छा नहीं लगा। 'आप भी विश्वविद्यालय में काम करते हैं ?' ज़ल्दबाज़ी कर रहे जेराई से पूछा। 'नहीं, मैं तो नेशनल थिएटर म्युनिख (ओपेरा थिएटर) में काम करता हूँ। 'मैं संगीतकार हूँ,' उन्होंने कहा, 'अप्रिलिया ने आपके बारे में बताया तो मैं आपसे मिलने को कितना उत्सुक था। आप, अब हमारे पहले नेपाली दोस्त हो।' मैंने विनम्रतापूर्वक धन्यवाद किया। वास्तव में, मैं भी उन लोगों से मिलने के लिए उतना ही लालायित था, क्योंकि अप्रिलिया साहित्य की प्राध्यापक मात्र नहीं थीं, आज के जर्मन साहित्य की एक प्रतिभाशाली एवं प्रतिष्ठित कवयित्री भी थीं। 'यह नेशनल थिएटर यूरोप के सबसे विख्यात स्थलों में एक है। यहाँ 1600 लोग काम करते हैं,' उन्होंने कहा। 'आप कब से इस ओपेरा में काम करते हैं?'

'नौ वर्ष हो गए। लेकिन, यहाँ काम करना सचमुच भाग्य की बात है,' उन्होंने फिर कहा। हमारे प्रज्ञा-प्रतिष्ठान के कर्मचारियों को भी इस तरह गर्व करने का दिन कब आएगा ? एक झीना मगर महत्वपूर्ण सवाल समुद्र में ज्वार की तरह मन में उभर आया। इतनी बातें होने तक हम ओपेरा हाउस के अन्डरग्राउन्ड पार्किंग में पहुँच चुके थे। जल्दी-जल्दी गाड़ी पार्क करके जेराई मुझे एक लिफ्ट की ओर ले गए। हम दो मंज़िल ऊपर आए। उसके बाद वह मुझे एक कमरे में ले गए, जहाँ ओपेरा हाउस में काम करने वाले कर्मचारियों के व्यक्तिगत लॉकर थे। मैंने अपना जैकेट वहीं उतारकर हैंगर में टांग दिया और साथ में लाया हुआ हैण्डबैग भी उसी लॉकर में रख दिया। उसके बाद हम एक पटांगिनी जैसे विशाल कमरे में पहुँचे। बत्ती की मद्धिम रौशनी में वहाँ अनेक प्रकार की सामग्रियों को देखा, छोटा-सा रथ भी रखा हुआ था। विभिन्न किस्मों की रंगीन बतियाँ भी थी। 'यह पोस्टस्टेज कमरा है। यहाँ मंच के लिए सभी आवश्यक तैयारियाँ की जाती हैं,' जेराई ने बताया।

भीष्म उप्रेती नेपाली कवि, निबंधकार, उपन्यासकार और अनुवादक हैं। उनकी कविता की 8 पुस्तकें, निबंध/यात्रा की 12 पुस्तकें और एक उपन्यास प्रकाशित हो चुका है। वर्तमान में आप PEN इंटरनेशनल के नेपाली केंद्र PEN नेपाल के सचिव हैं।

उस मंच के पीछे का भाग तो हमारे देश के पूरे प्रेक्षालय से भी कहीं ज्यादा बड़ा था। मैंने चारों ओर पलटकर देखा उसे। 'जल्दी कीजिये। फिर बाहर बैठना पड़ा तो बरबाद होगा,' उन्होंने कहा। मैं उनकी रफ़्तार पकड़े उनके पीछे-पीछे चल दिया। वह कब सीढ़ियों से नीचे उतरे और कब दूसरी सीढ़ियों पर चढ़े, मैंने कोई हिसाब नहीं रखा। अंत में एक विशाल काले दरवाज़े के सामने पहुँचते ही उन्होंने कहा, 'हम पहुँच चुके हैं।' उन्होंने धीरे से दरवाज़े को धकेला और मुझे अन्दर जाने को कहा। मेरे पीछे-पीछे वह भी अन्दर आए। दरवाज़े से अन्दर घुसते ही विशाल प्रेक्षालय में पहुँचा जाता है। ठीक सामने विशाल स्टेज था। बड़ा सा लाल पर्दा स्टेज के आगे टंगा हुआ था। बत्ती की मद्धिम रोशनी जिस तरह प्रेक्षालय के भीतर फैली हुई थी उसी तरह कर्णप्रिय धुन की मद्धिम आवाज़ भी प्रेक्षालय भर फैली हुई थी।

'आपका स्वागत है, मिस्टर उप्रेती,' एक कर्णप्रिय स्त्री आवाज़ ने मुझे अपनी ओर खींचा। मेरे ठीक सामने डॉ. अप्रिलिया जाङ्क खड़ी थी मुस्कराती हुई। मैंने उन्हें पहचान लिया। मैंने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया फिर उसके बाद उनसे हाथ मिलाया। हमारी सीट वही दरवाज़े के पास थी। हम बैठ गए। नेपाल से मैं म्युनिख आ रहा हूँ, यह बताते ही उन्होंने मुझे जिस दिन आओगे उसी साँझ ओपेरा दिखाऊँगी कहा था।

पर्दा खुला। स्टेज में लोगों की चहल-पहल होने लगीं। कोई महाराज, महारानी जैसे तो कोई जोकर जैसे भी थे। सैनिक जैसे भी थे। उन्होंने गाने गाए, अभिनय की, विज्ञापन भी किया। वास्तव में यह ओपेरा शुरू होने से पूर्व की प्रदर्शनी थी, लोगों को मनोरंजन देने के लिए जिससे कि उन्हें बोरियत न हो। यह पक्ष मेरे लिए बिलकुल नया था। अप्रिलिया ने मेरा हाल खबर पूछा। यात्रा में कोई परेशानी तो नहीं हुई, यह जिज्ञासा रखा।

...परिवेश, अभिनय और संवाद का सम्मोहन

अप्रिलिया और जेराई के साथ यह पहली मुलाकात थी, लेकिन वे इतने हार्दिक थे कि मुझे वर्षों पुरानी मित्रता-सा एहसास हुआ। एक कवि, दूसरे कवि और संगीतकार के साथ था, भूगोल अलग है तो क्या हुआ? भाषा अलग है तो क्या फर्क पड़ता है? मानवीय अनुभूति , हार्दिकता और प्रेम की गर्माहट तो वैसी ही थी। मैंने किसी भी तरह की कोई औपचारिकता का निर्वाह नहीं किया। 'शुरू ही नहीं हुआ है। चलिए, थोड़ी देर बाहर चलते हैं,' अप्रिलिया ने कहा। हम लोग बाहर आए।

कॉरिडोर में कैफे था, किताबों की दुकान थी, टिकट काउंटर था। इन सबसे बचते हुए हम एक मंजिल ऊपर गए। बाप रे ! कितना विशाल पटांगिनी था। एकदम सुन्दर, कलात्मक, अनेकों कलाकृति गढ़े हुए और बहुत ही साफ़ जगह थी। 'यह ओपेरा सन् 1818 अक्टूबर से संचालन में आया था। संचालन के कुछ वर्षों में ही आग लगने से ध्वस्त हुए इस थिएटर का पुनर्निर्माण किया गया था। लेकिन, द्वितीय विश्वयुद्ध में ध्वस्त होने के बाद फिर से पुनर्निर्माण किया गया था। इस थिएटर की कहानी में बहुत से उतार-चढ़ाव हैं,' अप्रिलिया ने बताया। 'शुरू में भी यह भवन क्या इतना ही सुन्दर और विशाल था?' मैंने विस्फारित आँखों से भवन की भव्यता को देखते हुए पूछा। 'हाँ, बिलकुल ऐसा ही था। इसके पहले के स्वरूप और कला में कोई परिवर्तन नहीं किया गया,' जेराई ने कहा। मुझे जर्मनियों की सुदूर भविष्य तक की सोच को देखकर ताज्जुब हो रहा था और जर्मनियों की कला के प्रति सम्मान की भावना को अनुभूत करते हुए, दो वर्ष पहले भूकम्प से तहस-नहस हुए धरहरा, रानी पोखरी और काष्ठमंडप की दुर्दशा को भी याद कर रहा था। इस तरह तुलना करके न देखूं यह प्रयत्न करते हुए भी स्वाभाविक रूप से हो ही जाता है। मन खिसिया गया, लेकिन किसी को इसकी भनक तक नहीं लगी।

हमने तस्वीरें खींचीं । कल, यादों के लिए यही तस्वीरें होंगी। हम प्रेक्षालय की ओर लौटे। मैंने मेरी अंग्रेजी में अनुदित कुछ किताबें अप्रिलिया को भेंट की। विश्वविद्यालय में अनुदित साहित्य पढ़ाने वाली अप्रिलिया बहुत खुश हुईं। जेराई ने मुझे दो सीडी भेंट की जिनमे उन्होंने संगीत दिया था। मैंने आँखों को ऊपर करके देखा। इस प्रेक्षालय में तो कई मंजिलें थीं। हर मंजिल में दाँयें-बाँयें दोनों तरफ बरामदा बना हुआ था और दर्शकों से खचाखच भरी हुई थी। पीछे की ओर भी दर्शकों की बैठने की व्यवस्था थी, हर मंजिल में। ध्वनि और प्रकाश का संयोजन भी उसी तरह उच्चस्तर का था।

कुछ उद्घघोषणा हुआ, उसके बाद पर्दा खुला। परदे से ऊपर बीच के भाग में स्टेज में बोले जाने वाले वाक्यों का अंग्रेजी अनुवाद दिखाने की व्यवस्था थी। इससे मैं बहुत ही सहज हुआ। 'छाँव और दरिया मध्य दिन की तेज धूप को बेशक कम कर सकती है, लेकिन प्रेम की आग को कतई नहीं बुझा सकती,' प्रेम और वियोग की भावना से ओतप्रोत यह इटेलियन ओपेरा इसी वाक्य से शुरू हुआ।

मुझे इस वाक्य ने भींच लिया। मैंने गर्माहट महसूस की। ओपेरा ख़त्म होने तक कभी स्टेज पर कलाकारों की कलाकारिता और कभी स्टेज के ऊपर अनुदित संवादों में आँखें जाती रहीं। हर शब्द, वाक्य या वाक्यांश इतनी शक्ति और अनुभूतियों से भरे हुए थे कि वे कहीं से भी अनावश्यक और ज्यादा नहीं लग रहे थे । अभिनय में कहीं, कुछ भी नाटकीय नहीं था। रंग और ध्वनि का संयोजन इतना ज़बरदस्त था कि उनके हावभाव और वाक्यों से अनकही अनेक चीज़ें दर्शकों को महसूस होती थीं। हज़ारों, लाखों लोगों में छनकर आये होंगे यह कलाकार। खुद जेराई कहते हैं, 'यहाँ छोटे-मोटे नसीब से काम नहीं मिलता।' रात में बहुत देरी से ख़त्म हुआ ओपेरा । बीच में अप्रिलिया ने मुझे कहा था कि अगर थक गए हो तो जेराई होटल में छोड़ देंगे। लेकिन, उस परिवेश, अभिनय और संवाद के सम्मोहन ने मुझे थकान महसूस नहीं होने दी, आँखों को बोझिल नहीं होने दिया। यहाँ से उठकर बाहर निकलने के बाद फिर जीवन प्रति के मोह को इतने करीब से इतने भव्य थिएटर में बैठकर कब कहाँ अनुभव कर पाऊंगा ?

कलाकार के अन्तिम वाक्य बोलने तक और फिर दुबारा न खुलने के लिए पर्दा गिरने तक मैं उतनी ही उत्सुकता और भावना से ओतप्रोत थिएटर में बैठा रहा। कल सुबह साढ़े 9 बजे ही जेसिके तथा डेब्रिएन्ट के लोग मुझे लेने होटल में आ जायेंगे यह बात भी मुझे नहीं उठा सकी। आज का जीवन आज ही पूरा-पूरा जिऊंगा, कल जो भी होगा कल ही देखूंगा- मन ही मन सोचा।

अनुवादक : राजकुमार श्रेष्ठ

नाने नाने दिवस

जय कृष्णा मिश्रा "चैतन्य"
मूल निवासी साहेबगंज, झारखण्ड, भारत,
दुबई, 7 वर्ष, रेजिडेंट अम्बेसडर – UAE : इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन फॉर एजुकेशनल डेवलपमेंट (प्रोग्राम अंडर UN)
संपर्क : JKMISHRA999@GMAIL.COM

इस बार अपने यात्रा का पड़ाव पूर्वी अफ्रीका के एक ऐसे देश को चुना जिसका नाम है - "तंज़ानिया"

तंज़ानिया - एक ऐसा देश जिसका इतिहास काफी पुराना रहा है, माना जाता है कि हज़ारों वर्ष पूर्व यहाँ ज़मीन पर पैरों के निशान मिले थे जो शायद हमारे मानव जाति के पूर्वज रहे होंगे !!

चारों तरफ से जंगलों से घिरा ये देश, समुद्र की ख़ूबसूरती और वन्य प्राणियों की अनन्य प्रजातियों वाला ये देश, नैसर्गिक और प्राकृतिक रूप से बेहद समृद्ध है !

इस शहर की राजधानी 'दर-अस-सलाम' जो कि बहुत सुंदर, प्रकृति से भरपूर, सागर तट के किनारे बसा हुआ है। भारतीयों के लिए यह देश और खासकर ये शहर दूसरा ही घर है ऐसा मुझे लगा। भारतीय परिधान, खान -पान, इत्यादि मुझे आसानी से देखने को मिला। उससे भी बड़ी बात इस शहर में अनेको हिन्दू मंदिर , जैसे कि हनुमान मंदिर, गीता मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर, भगवान श्री कृष्णा मंदिर आदि देखने को मिला। मैं अपने ठहराव के दरम्यान लगभग प्रतिदिन यहाँ जाता रहा।

8 अगस्त 2023 का दिन, तंज़ानिया में यहाँ सार्वजनिक छुट्टी । इसीलिए मीटिंग के सिलसिले में मेरा भी कहीं जाना नहीं हुआ और बस समुद्र के किनारे ही घूमता रहा ! सुबह का शानदार मौसम, सुदूर समुद्र ही समुद्र का नज़ारा, वाह... बेहद सुकून और मज़ा दे रहा था !

इसी बीच मुझे एक व्यक्ति मिला जो कि पढ़ा लिखा दिख रहा था और जो लगभग 60-65 के उम्र के क़रीब था ! मैंने अनायास ही उसे गुड मॉर्निंग कहा, बदले में अफ्रीकी कल्चर को उसने प्रस्तुत करते हुए अपने सर को झुकाया और गुड मॉर्निंग के ही अंदाज में कुछ जवाब दिया !

मैंने पूछा : क्या हम अंग्रेज़ी में बात कर सकते हैं ?

उसने कहा : जी क्यों नहीं , बिल्कुल कर सकते हैं।

फिर क्या था मेरी जिज्ञासा जगी और मैंने अंग्रेज़ी भाषा को माध्यम बनाकर इस देश के बारे में इधर-उधर की जानकारी लेना शुरू कर दिया जिसका वो बड़े सहजता से मेरे हर प्रश्न का जवाब देता रहा !

इसी क्रम में मैंने पूछा : यहाँ आज सार्वजानिक छुट्टी क्यों है ? सारी दुकानें व ऑफिस बंद क्यों हैं ?

"आज 8th अगस्त है और हमलोग प्रतिवर्ष इस दिन को "नाने नाने डे" (Nane Nane Day) के रूप में मनाते हैं" - उसने जवाब दिया !

मैंने पूछा: लेकिन आप ये "Nane Nane Day" क्यों मनाते हो और इसका क्या मतलब होता है ?

उसने कहा : "Nane Nane Day" is celebrated every year on August 8th is an annual celebration that recognizes the important contribution of farmers to the national Tanzanian economy". मतलब तंज़ानिया के राष्ट्रीय अर्थतंत्र में किसान के महत्पूर्ण योगदान" को पहचान दिलवाने के लिए प्रत्येक वर्ष "नाने - नाने" दिवस मनाया जाता है और सरकार ने आज के दिन को सार्वजनिक तौर पर अवकाश घोषित किया हुआ है !!

कृषिप्रधान परिवार और देश के नाते, ये सुनना मेरे लिए किसी अच्छी अनुभूति से कम नहीं थी ! किसान का इतना बड़ा सम्मान ...जैसे किसी स्वतंत्रता सेनानी के सम्मान से जरा भी कम नहीं ! वाह ! मज़ा आ गया सुनकर।

ये देश अपने किसान का भी सम्मान करते हैं और अपने धरती का भी !! कहा जाता है कि यहाँ के पूर्वज, मरने के बाद मुर्दे को खुले जंगल में फेंक देते थे, उनको जमीन में नहीं गाड़ते थे, उनका मानना था कि जमीन दूषित और गंदी हो जाएगी !!

मैं तो हैरान रह गया ! अफ्रीका का लगभग आधा देश, दक्षिण एशिया का लगभाग आधा भाग मैं घूम चुका हूं लेकिन मैंने कहीं भी किसान के सम्मान में छुट्टी की घोषणा नहीं सुनी है! कुछ पल के लिए मैं खो-सा गया और उस अजनबी का धन्यवाद करके, बगल में ही हो रहे अफ्रीकी समारोह में मैं भी शामिल होकर उसका लुत्फ़ उठाने लगा !!!

नवनिर्मित बैप्स हिंदू मंदिर अबु-धाबी

डॉ. आरती लोकेश गोयल
साहित्यकार, संपादक, कवयित्री, वरिष्ठ परामर्शदाता (भोर, SYH ई- पत्रिका)

धार्मिक सद्भावना और सहिष्णुता का प्रतिबिम्ब यू.ए.ई. देश एक सदी से विभिन्न राष्ट्र, संस्कृति और धर्मों का दिल खोलकर स्वागत करता रहा है। वर्ष 1958 में दुबई के 'बर-दुबई' नामक स्थान पर पहले हिंदू मंदिर का निर्माण हुआ जिसने यहाँ के हिंदू समुदायों को पूजनस्थल प्रदान कर यू.ए.ई. ने एकात्मता की भावना के दर्शन कराए। वर्ष 2022 में दुबई के 'जबल-अली' नामक स्थान पर एक और भव्य मंदिर का निर्माण हुआ जो दो देशों व दो धर्मों के मध्य आपसी भाईचारे और अपनत्व का प्रतीक बनकर उभरा है। इसके अतिरिक्त 2012 में जबल अली के इसी स्थान पर 'गुरु नानक दरबार' गुरुद्वारे की भी स्थापना हुई थी। इसके बाद तीसरा और सबसे बड़ा नवनिर्मित 'बैप्स हिंदू मंदिर' अपनी परिकल्पना के समय से ही चर्चा में बना हुआ है।

यू.ए.ई. की शान में जड़ा एक और रत्न, अबु-धाबी में बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (BAPS) द्वारा निर्मित 'बैप्स हिंदू मंदिर' ऐतिहासिक भव्यता लिए संस्कृति-सम्पन्न भविष्य का सशक्त संकेत है। वेदों की जड़ों से निकली इस मंदिर की नवीनतम शाखा मरुभूमि में वैश्विक समरसता के शाद्वल में भरे आध्यात्मिक जल से सिंचित धार्मिक सद्भाव के पुष्प खिला रही है। मरुस्थल में जलज की कल्पना ही इस मंदिर की आकृति का प्रेरणा-स्रोत रही है। यह संयुक्त अरब अमीरात में प्रथम ऐसा मंदिर है जो हस्तशिल्प प्राकृतिक पत्थरों द्वारा निर्मित है, साथ ही यह पश्चिमी एशिया में सबसे विशाल होने का गौरव भी प्राप्त किए हुए है। 108 फुट ऊँचा, 180 फुट चौड़ा व 262 फुट लम्बा, यह विशाल मंदिरस्थल 27 एकड़ अर्थात् एक लाख दस हज़ार वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला है। इसमें 10 हज़ार भक्तों को एक साथ स्थान देने की क्षमता है।

दुबई से लगभग 105 किलोमीटर की दूरी पर तथा अबु धाबी से 25 किलोमीटर दूर, 'अल-ताफ़ मार्ग' (ई-16) पर, 'अबु मुरैख़ा' क्षेत्र में इसका निर्माण किया गया है। इसका बाहरी रंग सुनहरा गुलाबी दूर से ही इसकी अलौकिकता का आभास करा देता है। गुलाबी रेत के मध्य इसकी पुष्पाकृति देखकर देश यू.ए.ई. के प्रति मन श्रद्धा से भर उठता है।

यह मंदिर केवल भक्तगण को ही आकर्षित नहीं कर रहा, अलंकरण और स्थापत्य कलाप्रेमियों को भी दाँतों तले उँगली दबाने को बाध्य कर रहा है। प्राचीन मंदिरों की परंपरा को निभाते हुए, शृंखला में एक और कड़ी जोड़ते हुए, यह भारतभूमि पर स्थापित भव्य पाषाण-मंदिरों को बराबर की टक्कर देता है। मंदिर की आकाशीय संरचना में बारह उथले शिखर, सात उन्नत शिखर व दो गुम्बद शामिल हैं। सभी शिखर स्वर्णवर्ण-मंडित कलश-मीनारनुमा दंड से सुसज्जित हैं और उन पर स्वामीनारायण ध्वजाएँ फहरा रही हैं। मंदिर की भीतरी बनावट में सफेद संगमरमर पर नक्काशी से बने हुए 410 स्तम्भ लगे हैं।

प्रत्येक स्तम्भ ज्ञानवर्धक उपदेशों से भरापूरा चलचित्र उपस्थित करता है। प्राचीन हिंदू शिल्प-शास्त्रों के अनुसार मंदिर के स्तम्भ पर हिंदू सभ्यता को व भारत के समृध इतिहास को दर्शाती हुई 250 कहानियों का चित्रण है। ये शिल्प-कथाएँ हमारी संस्कृति, पुराण-गाथाओं तथा नैतिक मूल्यों का भान कराती हैं। संयुक्त अरब अमीरात का सम्मान करते हुए, गृहदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए, कई खम्भों पर घोड़ों और ऊँटों से सम्बंधित मूर्तियाँ भी उभरी हैं। इनमें प्रत्येक मूर्ति दूसरी से भिन्न है। संगमरमर जैसे कीमती पत्थर पर कारीगरी बहुत कठिन कार्य है। यह कोई मिट्टी की मूर्ति नहीं है कि बिगड़ गई तो पुन: बना ली जाएगी। देखने में मशीन से एकसार कटे दिखाई देने वाले इन सभी खंभों पर कुशल कारीगरों ने वर्षों छैनी-हथौड़ों से नपा हुआ प्रहार कर इन्हें ये आकार व आलेख प्रदान किया है।

बाहरी पत्थरों पर हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ शिल्पकारी द्वारा उकेरी गई हैं जो इसे दिव्य रूप प्रदान करती हैं। ईश्वर की मुद्राओं, भाव-भंगिमाओं, उनके अंग-प्रत्यंग, साज-सज्जा, आभूषण इतनी बारीकी से उभारे गए हैं कि देखते ही बनता है। इस कौशल की सराहना करना और सभी सौंदर्य को एक दिन में निहार लेना संभव ही नहीं है।

बैप्स मंदिर की सात उच्च चोटियाँ यू.ए.ई. की सात अमीरातों (अबु धाबी, दुबई, शारजाह, अज़मान, उम-अल-कुवैन, रस-अल-ख़माह तथा फुजेराह) की प्रतीक-स्वरूप हैं। यहाँ भारतीय दर्शन में अतिथि द्वारा गृहस्वामी का आभार करने की परंपरा परिलक्षित हो रही है। इन सात शिखरों के नीचे ही प्रभु-दर्शन के सात आलय यानि दरबार हैं:- 1. अक्षर व पुरुषोत्तम दरबार, 2. राधा-कृष्ण दरबार, 3. राम परिवार दरबार, 4. शिव परिवार, 5. जगन्नाथ जी, सुभद्रा व बलदेव परिवार, 6. तिरूपति बालाजी व पद्मावती परिवार तथा 7. अय्यप्पा स्वामी जी। देश के विभिन्न भागों में पूजे जाने वाले ईश्वरीय स्वरूपों का समावेश कर, इन समस्त दरबारों की स्थापना, स्वयं में हिंदू धर्म की सभी को साथ लेकर चलने की लोकनीति को दर्शाती है।

मंदिर के मुख्य गुम्बद को 'डोम ऑफ़ हारमनी' कहा गया है। इस की ख़ासियत यह है कि यह पंचतत्वों (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश) के कुशल संतुलन को प्रदर्शित करता है। हिंदू परंपरा में इन्हीं पाँच तत्वों के मेल से जीवन की उत्पत्ति को माना गया है। जीवन की समाप्ति पर पार्थिव देह को इसी कारण पंचतत्वों के आधीन करने का विधान है। इस आलीशान संरचना के निर्माण में चालीस सहस्र घन फीट श्वेत संगमरमर का प्रयोग हुआ है तथा एक लाख अस्सी हज़ार घन फीट गुलाबी बलुई पत्थर का, जो इसे गुलाबी-सुनहरा (रोज़ गोल्ड) रंग प्रदान करता है। महीन नक्काशीदार कारीगरी वाले तीस हज़ार पत्थर इसे बाहरी स्वरूप प्रदान करते हैं। इसमें 20 लाख ईंटों का प्रयोग हुआ है जिन्हें बनाने में 7 लाख घंटों का श्रम लगा है। अति विशिष्टता यह है कि इसे पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए इसकी निर्माण-सामग्री में आधे से अधिक कोयले की राख का प्रयोग हुआ है। यह कोयले की राख बिजली संयंत्रों को चलाने में लगी कोयले से बनी ऊर्जा का उप-उत्पाद (बाई-प्रोडक्ट) है। मंदिर को इस तकनीक से बनाया गया है कि यू.ए.ई. की 55 डिग्री सेल्सियस से अधिक तपती गर्मी से इसे कोई क्षति नहीं हो सकती। इसकी सशक्त इमारत 7 डिग्री के भूकम्प झटकों को बेखौफ़ झेल सकती है।

बी.ए.पी.एस. संस्था विश्व में एकमात्र ऐसा अनूठा धार्मिक संगठन है जो सम्पूर्ण विश्व में ग्यारह सौ से अधिक मंदिरों के निर्माण के लिए विख्यात है। कहा जाता है कि श्री गुरु प्रमुख स्वामी महाराज ने 5 अप्रैल 1997 के दिन शारजाह के रेगिस्तान में ऐसा स्वप्न देखा कि अबु धाबी में एक भव्य मंदिर बने जो विभिन्न आस्थाओं, संस्कृतियों, समुदायों व देशों को आपस में जोड़े। 27 वर्षों के भीतर ही यह स्वप्न साकार भी हो गया। लम्बे अंतराल के बाद उनकी आकांक्षा ने शब्दों का स्वरूप लिया जब प्रधानमंत्री मोदी जी ने 2015 में यह घोषणा की कि यू.ए.ई. की सरकार द्वारा इस कार्य के लिए सहमति व भूमि प्रदान करने का वादा किया गया है। 2018 में 13.5 एकड़ की भूमि 'बैप्स' को मंदिर परिसर के निर्माण के लिए सौंपी गई, फिर 2019 में इतनी ही और भूमि का उपहार इस मंदिर को मिला तो कुल 27 एकड़ भूमि मंदिर के लिए तय हो गई और यह वर्ष यू.ए.ई. में 'ईयर ऑफ़ टॉलरेंस' के नाम से जाना गया।

2019 में इसका भूमि-पूजन तथा शिलान्यास वर्ष 2018 में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के करकमलों से हुआ। इसका बेजोड़ डिज़ाइन व मॉडल दस अलग-अलग देशों से जुटे 30 विशेषज्ञों ने पाँच हज़ार घंटों के श्रम से तैयार किया था। इसके निर्माण से पूर्व ही 2019 में इसे 'मैकेनिकल प्रोजेक्ट ऑफ़ द ईयर' का अवार्ड मिल गया था। तब से प्रतिवर्ष, या हर छमाही इसमें कुंभ-पूजन, शिलास्थापन, महापीठ पूजन, प्रथम स्तम्भ स्थापन, अमलसारो पूजन, अमृत-कलश पूजन आदि के कार्यक्रम समस्त धरती से मनुष्यों का ध्यान अपनी ओर खींचते रहे।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा इसके उद्घाटन के दिन 14 फरवरी 2024 को पूरा यू.ए.ई. उत्साह से हिलोरें ले रहा था। 'एहलान मोदी' कार्यक्रम में क्षमता से दुगुने दर्शकों का जुटना इसकी अपार सफलता और आनंद का प्रमाण है। देश की सातों अमीरातों से अनेक घंटों की यात्रा कर भारतीय जनसमूह इस दिव्य समारोह का अंग बनने अबु धाबी उमड़ पड़ा। जो न जा सके, वे इसके सीधे प्रसारण से दृष्टि न हटा सके। ऐसी अमर घटनाओं का साक्षी बनने का अवसर किसी विरली पीढ़ी को ही मिलता है।

14 फरवरी 2024 के शुभ दिवस, देश की राजधानी अबु धाबी में 'प्राण-प्रतिष्ठा' अनुष्ठान हुआ जिसमें मंदिर में प्रतिष्ठित, पवित्र दैवीय मूर्तियों में पारंपरिक रीति तथा वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा प्राणों का आह्वान किया गया।

यह समारोह प्रातः छः बजे से प्रारंभ हुआ। 'अभिषेक मंडप' में अति विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति सैकड़ों में थी। इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर में कई स्थलों पर कार्यक्रम के सीधे प्रसारण की व्यवस्था थी, जिसे देखने अपार जनसमूह प्रांगण में एकत्रित था। इनमें यू.ए.ई. में बसे प्रवासी भारतीय भक्तगण के अतिरिक्त, दुनियाभर से पधारे विभिन्न आस्थाओं व पृष्ठभूमियों का शुभाकांक्षी समूह था जो मंदिर के समभाव-सद्भाव की वाणी को प्रतिध्वनित करता था। महंत स्वामी महाराज जी द्वारा सातों दरबारों के पूजन से यह स्वर्णिम ऐतिहासिक क्षण सम्पन्न हुआ। महंत जी द्वारा ही सातों दरबारों की प्रथम आरती की गई। उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "सम्पूर्ण कार्यक्रम में, मैं इस देश तथा दुनिया के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करता रहा। प्रत्येक व्यक्ति को समृद्धि मिले व शांति की स्थापना हो। हम सभी एकसाथ मानवता की सेवा के लिए कदम बढ़ाएँ।" उन्होंने यू.ए.ई. के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन ज़ायद अल-नाहयान का धन्यवाद किया, जिन्होंने उदारतापूर्वक मंदिर के लिए भूमि उपहारस्वरूप प्रदान की। उन्होंने कहा कि यह मंदिर वह स्थान है जहाँ शांति का आनंद उठाने तथा वैश्विक रागात्मकता की शिक्षा लेने के लिए सभी मान्यताओं-पार्श्वताओं के लोगों का स्वागत है।

18 फरवरी 2024 से मंदिर को आम जनता के दर्शनों के लिए खोल दिया गया है किंतु इसके लिए पूर्व पंजीकरण अनिवार्य है। ऐसा इस कारण है कि दर्शनार्थियों की संख्या पर वांछित नियंत्रण रखा जा सके अन्यथा इसके चमत्कारिक आकर्षण-पाश में बँधे अपार श्रध्दालुओं के जनसमूह के लिए व्यवस्थाएँ करना दुरूह कार्य होगा। इसमें प्रवेश का कोई शुल्क नहीं है।

उद्घाटन-समारोह का समापन एक अंत न होकर एक प्रारंभ है जो आध्यामिक विस्तार, सांस्कृतिक सामंजस्य और भौमिक सौहार्द्र का प्रथम बिंदु बन एक युग की स्थापना करेगा। यह मंदिर मात्र न होकर, सांस्कृतिक समावेश, सर्वश्रेष्ठ स्थापत्य तथा आध्यात्मिक महत्ता का उत्कृष्ट केंद्र बनकर उभरा है।

SYH मंचीय कार्यक्रम:- तस्वीरें (जनवरी - मार्च २०२४)

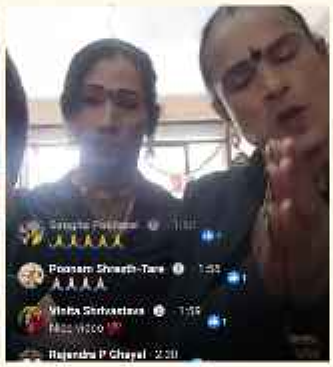

८ जनवरी २०२४ को ललितपुर, काठमांडू (नेपाल) में किन्नर बहनों की व्यथा सुनते हुए संस्थापिका मोनी विजय... इसका लाइव प्रसारण भी किया गया।

संक्षिप्त वार्ता के साथ कुछ सहायता राशि दी गई । किन्नर बहनें बहुत ही द्रवित थीं कि इतना प्यार - सम्मान कभी नहीं मिला । वे लोगों से सम्मान की दृष्टि की आस रखती हैं। आगे भी इनके उद्धार के लिए कार्य किया जाएगा ।

10 जनवरी २०२४ को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर लाइव प्रसारण (189) किया गया ,जिसमें आरती लोकेश गोयल जी(दुबई), अनु निधि (कतर), रूपम यादव(नेपाल) एवं SYH टीम से मोनी बिजय , ऐश्वर्या संपन्ना तथा सुप्रिया श्रीवास्तव (तकनीक) हिंदी साहित्यकार से वार्ता में सम्मिलित हुई ।

२० जनवरी २०२४ को राम लला के आगमन पर मंच ने 'मेरे राम' लाइव कार्यक्रम संख्या (190) का आयोजन किया जिसमें रितुप्रिया खरे (भोपाल) , नमिता पाठक (ऑस्ट्रेलिया) , संगीता गुहा(कोलकाता) , सुप्रिया श्रीवास्तव (दिल्ली), ऐश्वर्या संपन्ना (मुम्बई) मोनी बिजय (नेपाल) से सम्मिलित हुईं।

उपरोक्त सभी कार्यक्रम आप हमारे यूटयूब चैनल व फेसबुक पेज पर देख सकते हैं।

https://www.youtube.com/@shareyourhumanitysyhandkid2583

https://www.facebook.com/profile.php
id=100063963288763&mibextid=ZbWKwL

SYH मंचीय कार्यक्रम:- तस्वीरें (जनवरी - मार्च २०२४)

साहित्य एवं संगीत के प्रेम से खिले 'प्यार के गीत' में मोनी बिजय के लघुकथा पर मीरा नायर, डॉ. पल्लवी विश्वास, डॉ. स्वप्ना कुलकर्णी, संगीता गुहा, सुप्रिया श्रीवास्तव ने अपने मधुर सुर से समां बांधा। ऐश्वर्या संपन्ना ने कथा-वाचन किया और शिरीष तारे ने सुंदर दृश्य बनाया। 'प्यार के गीत' लाइव प्रसारण संख्या:- (१९१) 191, प्रसारण तिथि :-02 फ़रवरी 2024

संबंधों की प्रगाढ़ता पर संदेशात्मक सीरीज साल मे सिर्फ एक बार आनेवाली हमसफर -4 का लाइव प्रसारण (१९२) हुआ, जिसमें पंडित सुरेश नीरव - मधु मिश्रा, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी- ममता किरण, पंडित अविनय काशीनाथ - डॉ. पल्लवी विश्वास, सुमन कुंदू - संगीता गुहा ने अपने जीवन-सफ़र के विभिन्न पहलुओं को साझा किया। कार्यक्रम-संचालन मोनी बिजय और मंच-संचालन सुप्रिया श्रीवास्तव ने किया।

एडमिन ऐश्वर्या संपन्ना द्वारा सरस्वती पूजा के अवसर पर लाइव पूजा-दर्शन हुआ जिसमें बहुत से लोगो ने गीत-संगीत.भजन का सुन्दर माहौल बनाया।

28 फरवरी 2024 को साहित्य-संगत के अंतर्गत फरवरी माह के सभी साहित्यकारों (जन्मतिथि/ पुण्यतिथि) को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के लाइव प्रसारण को मंच ने इस बार अपने टीम की महिलाओं को समर्पित किया है। साथ ही एक नई सीरीज 'तेरी मेरी कहानी' की भी शुरुआत की गई है।

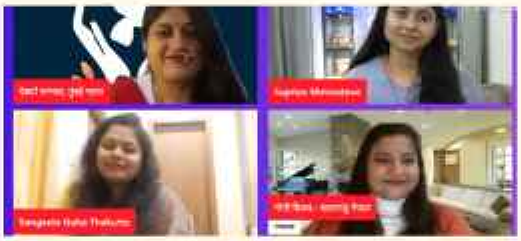

उपरोक्त सभी कार्यक्रम आप हमारे यूट्यूब चैनल व फेसबुक पेज पर देख सकते हैं।

https://www.youtube.com/@shareyourhumanitysyhandkid2583

https://www.facebook.com/profile.phpid=100063963288763&mibextid=ZbWKwL

तनाव :- कारण और निवारण

उजाला सिन्हा

मनोवैज्ञानिक एवं सीनियर मेडिकल सलाहकार
सदर अस्पताल, सुपौल, बिहार -भारत

आजकल समाज में अपने आपको हर क्षेत्र में उत्कृष्ट साबित करने की होड़ में, चाहे वो शिक्षा हो,धन हो या सुंदरता हो, समाज का हर सदस्य प्रतिस्पर्धा के दौर में शामिल होता जा रहा है। अगर वह उस ऊंचाई तक नहीं पहुंच पा रहा है तो उस परिस्थिति में तनाव से ग्रसित होना आम होता जा रहा है , जिसकी वजह से तरह -तरह की शारीरिक - मानसिक परिस्थितियाँ उत्पन्न होती जा रही है। सामान्य रूप से इसे इस तरीके से समझा जाता है कि दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं और नकारात्मक घटनाओं के कारण तनाव उत्पन्न होता है, पर ऐसा नहीं है । तनाव भी दो तरह के होते हैं :

1. Positive stress,(Eustress) यूस्ट्रेस यानि सकारात्मक तनाव और
2. Negative Stress (Distress) डिस्ट्रेस यानि नकारात्मक तनाव।

पॉजिटिव स्ट्रेस में व्यक्ति अपने आप को मोटिवेट करते हुए एग्जाम में अच्छे नंबर लाना, सामाजिक कार्यों में आगे बढ़कर भाग लेना, अपने लिए, परिवार के लिए और समाज के लिए अच्छे-अच्छे कार्यों को करना इत्यादि आता है।

1. Anxiety

इसमें व्यक्ति को डर, आशंका एवं चिंता इत्यादि की प्रधानता बढ़ जाती है। जब तक एंजायटी नॉर्मल रहती है इंसान इससे ज्यादा प्रभावित नहीं होता परंतु जब यह विकृति का रूप धारण कर लेती है तो मनुष्य एडजस्ट नहीं कर पाता और वह अपने आप को बेसहारा महसूस करने लगता है। चिंता की वजह से उसे अनकंशियस कनफ्लिक्ट होता है।

2. Anger and Aggression

नेगेटिव स्ट्रेस की वजह से ही एंगर और एग्रेशन उत्पन्न होता है और व्यक्ति का aggression उसके लक्ष्य तक पहुंचने में मदद नहीं कर पता है और व्यक्ति कुंठा का शिकार हो जाता है।

3. Depression

कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि व्यक्ति जब तनाव की स्थिति में एंगर और अग्रेशन नहीं करता तब भावशून्य और विषाद का भाव विकसित हो जाता है। सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि अगर तनावपूर्ण परिस्थिति व्यक्ति के सामने होती है तब वह व्यक्ति उसके साथ निपटने में सफल नहीं हो पाता, तब वह उनके प्रति उदासीनता विकसित कर लेता है और व्यक्ति में डिप्रेशन की टेंडेंसी उत्पन्न हो जाती है और सही ढंग से समायोजन नहीं कर पाने की वजह से वह हेल्पलेस महसूस करता है।

अतः तनाव पर नियंत्रण करने में जो व्यक्ति सफल हो जाता है तो तनाव की गंभीरता अपने आप कम हो जाती है। वह समस्या के समाधान का विकल्प ढूंढ़ता है तो समस्या अपनेआप ख़तम हो जाती है। इसके लिए हमें पर्याप्त नींद ,समुचित आहार, व्यायाम, योग इत्यादि का सहारा लेना चाहिए। मनपसंद संगीत, पेंटिंग्स या जिस भी चीज में आपकी रुचि हो, उसे करें, समाज में लोगों से संबंध बढ़ाएं और बातचीत करें।

अपना ख़याल रखें।

डॉ. मोशिर आलम

निदेशक : जीवन हयात वेलनेस सेंटर एवं सिटी डायलिसिस सेंटर।
अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त चिकित्सक एवं सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक और कवि।

किडनी स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देना: भारत-नेपाल कल्याण के लिए एक संयुक्त प्रयास

भारत-नेपाल संबंधों की साझा छवि में, एक सामान्य सूत्र मौजूद है जो हमें सीमाओं से परे बांधता है - अच्छे स्वास्थ्य की खोज। जैसा कि हम मार्च में कदम रख रहे हैं, जो कि किडनी के स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित महीना है, दोनों देशों के लिए समझ को बढ़ावा देने, निवारक उपायों को बढ़ावा देने और किडनी से संबंधित चुनौतियों का सामना करने वाले लोगों को सहायता प्रदान करने के लिए एकजुट होना अनिवार्य है।

गुर्दे की बीमारियाँ अक्सर चुपचाप बढ़ती रहती हैं, जब तक कि यह गंभीर अवस्था में नहीं पहुँच जातीं, तब तक इनके प्रभाव को कम करके आंका जाता है। भारत और नेपाल दोनों में किडनी से संबंधित मुद्दों की व्यापकता सामूहिक जागृति की मांग करती है। मौन संकट को स्वीकार करके और इसकी बारीकियों को समझकर, हम एक स्वस्थ भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

सहयोगात्मक प्रयास: स्वास्थ्य की कोई सीमा नहीं होती, और न ही जागरूकता की कोई सीमा होनी चाहिए। किडनी स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत-नेपाल सहयोग साझा प्रतिबद्धता का प्रतीक साबित हो सकता है। संयुक्त पहल, अनुसंधान परियोजनाएं और शैक्षिक कार्यक्रम हमारी सामूहिक समझ और हमारे प्रभाव को बढ़ा सकते हैं।

जागरूकता में सांस्कृतिक संवेदनशीलता: स्वास्थ्य जागरूकता में सांस्कृतिक बारीकियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत और नेपाल की विविध संस्कृतियों के अनुरूप किडनी स्वास्थ्य अभियानों को तैयार करना अधिक प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करता है। आइए ऐसी सामग्री बनाएं जो समुदायों के दिल की बात कहे, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और प्रासंगिक तरीकों से किडनी के स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दे।

शिक्षा के माध्यम से किडनी रोग की रोकथाम: हमारे समुदायों को ज्ञान के साथ सशक्त बनाना रोकथाम की आधारशिला है। ग्रामीण गांवों से लेकर हलचल भरे शहरों तक, आइए ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम स्थापित करें जो किडनी के स्वास्थ्य के रहस्य को उजागर करें, जिसमें सरल जीवनशैली में बदलाव, शीघ्र पता लगाने और नियमित स्वास्थ्य जांच पर जोर दिया जाए।

"इस किडनी स्वास्थ्य जागरूकता माह में, आइए हम एकता का एक शानदार संदेश भेजें।"

संयुक्त जागरूकता कार्यक्रमों, वेबिनार और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से, हम दूरियों को पाट सकते हैं और हमारे देशों को जोड़ने वाले बंधनों को मजबूत कर सकते हैं। साथ मिलकर, हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहां किडनी का स्वास्थ्य एक साझा प्राथमिकता होगी।

गुर्दा रोग प्रभावित लोगों की मदद करना : किडनी संबंधी चुनौतियों का सामना करने वालों की यात्रा सीमाओं से परे जाने वाली होती है। स्वास्थ्य सुविधाओं, उपचार पहुंच और सहायता नेटवर्क में भारत-नेपाल सहयोग से प्रभावित लोगों के जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है। आइए सुनिश्चित करें कि मदद की कोई भौगोलिक सीमा न हो।

जैसा कि हम किडनी स्वास्थ्य जागरूकता माह से गुज़र रहे हैं, आइए हम सामूहिक रूप से अपनी बातचीत, नीतियों और स्वास्थ्य देखभाल ढांचे में किडनी स्वास्थ्य को केंद्रबिंदु बनाने की प्रतिज्ञा करें। हमारा आज का संयुक्त प्रयास निस्संदेह भारत और नेपाल दोनों के लिए एक स्वस्थ, किडनी के प्रति जागरूक कल को आकार देगा।

किडनी स्वास्थ्य के प्रति इस साझा प्रतिबद्धता को अपनाते हुए, हम न केवल भारत-नेपाल स्वास्थ्य गठबंधन को मजबूत करते हैं, बल्कि सभी के लिए एक स्वस्थ, अधिक लचीले भविष्य की दिशा में एक मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

आप चाहें जितनी किताबें पढ़ लें, कितने भी अच्छे प्रवचन सुन लें, उनका कोई फायदा नहीं होगा, जब तक कि आप उनको अपने जीवन में नहीं अपनाते.
"भगवान बुद्ध"

कभी भी किसी से ईर्ष्या न करें, क्रोध न करें, वर्ना मन हमेशा अशांत ही रहेगा। जिस व्यक्ति का मन शांत है, वह सभी दुखों से मुक्त हो सकता है।
" भगवान बुद्ध"

"हमें किसी के भी साथ किसी भी तरह की प्रतियोगिता करने कोई की जरूरत नहीं है। हम जैसे हैं अच्छे हैं। हमें अपने आप को स्वीकार करना चाहिए।"

- ओशो

"बुद्धि कभी भी एक सीमा में रहने से नहीं बढ़ती है। बुद्धि तो अलग-अलग प्रयोग करने से और परेशानियों का सामना करने से ही बढ़ती है।"

साभार:- गूगल

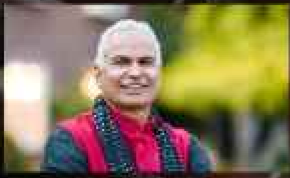

'स्वीकार भाव मेरे जीवन की धुरी है।'

- रामा तक्षक, नीदरलैंड

एक छोटी सी घटना है मेरे अपने बचपन की। यह घटना भले ही छोटी हो परन्तु बड़ी गहरी चोट करती है। 'राम' नाम शब्द भी छोटा है। दो ही अक्षरों का है। एक सम्पूर्ण मंत्र है। यदि यही मंत्र, मानव मन का भी मंत्र बन जाए तब जीवन की सजगता की गहन परतों का पता देता है।

मैं गर्मी की छुट्टियों में नानी के पास गया था। नानी काशीपुर, नैनीताल के पास रहती थी। मेरे नाना भी जीवित थे। नाना दिनभर हुक्का गुड़गड़ाते। उनका दिनभर हुक्के की गुड़गुड़ाहट के इर्द-गिर्द ही व्यतीत होता। चाय पी लें तो हुक्का चाहिए। भोजन कर लिया तो हुक्का। सुबह घूम आए तब भी और कोई मेहमान आ जाए, तब भी उनकी आवभगत भी, हुक्के से ही होती।

जब भी कोई आता हुक्के को नया जीवन दिया जाता। हुक्के के, सिर वाले, अलग होने वाले ऊपरी भाग, चिलम में नई तम्बाकू की परत जमाई जाती। उस तम्बाकू पर एक गोल ठेकरी रखी जाती। चिलम में ठीकरी के ऊपर नई आग के अंगारे रखे जाते। हुक्के की देह से पुराना पानी निकाल दिया जाता।

इस पानी की तम्बाकू सड़ान्ध से बचने के लिए, मैं कहीं दूर, पेड़ के नीचे आ बैठता। हुक्के में नया पानी भरा जाता। आग घर में हमेशा जलती रहती। अतः हुक्के के लिए अँगारे भी सदैव उपलब्ध रहते।

मेरा जन्म एवं मेरी परवरिश ऐसे परिवार में हुई जो पीढ़ियों से तंबाकू के सेवन से दूर रहता आया है। यहां तक की तम्बाकू को छूना भी पाप माना जाता है।

यदि कोई तम्बाकू सेवन करने वाला मेहमान घर पर आ जाता तो बड़ी कठिनाई होती । मेहमान बीड़ी या सिगरेट अपने साथ ही लाते थे। कभी अनायास मेहमान को किसी कारणवश एक-दो दिन लम्बा ठहरना पड़ता तब तो उनके तम्बाकू-सेवन की व्यवस्था गांव में जोशी जी की छोटी-सी दुकान से खरीद कर की जाती।

जोशी जी को तंबाकू का सेवन करने व तम्बाकू को न छूने के बारे में मेरी पारिवारिक स्थिति का पता था। इसलिए वह बीड़ी या सिगरेट के पैकेट को एक लंबे धागे में बांधकर मुझे दे देते। धागे में लटकते हुए बीड़ी सिगरेट के पैकेट को घर पर लाकर मैं मेहमान के हवाले कर देता।

इसलिए जब भी मैं नाना-नानी के पास होता, मुझसे हुक्का में तंबाकू या हुक्के में पानी भरने के लिए कोई नहीं कहता।

इसी विशेष कारण से मैं नानी के कमरे में सोता। क्योंकि नाना के कमरे में हुक्का गुड़गड़ाने की और तंबाकू की महक सदैव बनी रहती। उनके बिस्तर और कपड़ों में भी। उनके हाथ पर पीलापन, हुक्के की नाल पकड़ने वाला भाग, स्थायी रुप से बना रहता।

बाहर अँधेरा हो चुका था। सोने के कमरे में लालटेन की रोशनी थी। नानी मुझे आपबीती सुना रही थी। यह आपबीती उस समय की थी जब मेरे नाना और नानी इस जमीन को खरीदकर यहां रहने लगे थे। यहाँ चारों तरफ जंगल ही जंगल था और जंगली जानवर भी थे।

शुरू के दिनों में तो रात को जंगली जानवरों के खतरे से बचने के लिए, विशेषतः परिवार के बच्चों की सुरक्षा के लिए, रात भर मोटी-मोटी लकड़ियों की आग जलानी पड़ती थी। यह आपबीती मुझे बहुत ही रोचक लग रही थी। तभी नानी को कल के काम के बारे में याद आया। नानी को अगले दिन सुबह कुछ काम था। इस काम की तैयारी के लिए उन्हें दूसरे कमरे में,अँधेरे में, कुछ ढूँढना था। उन दिनों बिजली की रौशनी नहीं थी। उनको लालटेन की जरूरत थी ताकि अपनी कल की तैयारी कर सकें।

नानी ने कहा "मैं लालटेन ले जा रही हूं थोड़ी देर के लिए।"

मैंने कहा " नानी लालटेन मत ले जाओ, मुझे डर लगता है।" नानी ने कहा "तुम्हारे पास भगवान राम हैं। डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

मैंने नानी से कहा "नानी आप भगवान राम को साथ ले जाओ पर आप लालटेन यहीं छोड़ जाओ।"

नानी की यह बात बहुत बरसों बाद, 'रामचरितमानस' के अध्ययन के बाद, समझ में आयी।

राम को जब वनवास के बारे में सुनने को मिलता है तो वह तनिक भी, विचलित हुए बिना, पिता के वनवास के आदेश को, राजतिलक की अपेक्षा, सहज अँगीकार कर लेते हैं।

"जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौं कानन सत अवध समाना॥"

राम का जीवन के प्रति स्पष्ट संकेत है कि माता-पिता का आदेश है तो कानन यानी वन भी मेरे लिए अवध समान हो जाएगा। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मेरा राजतिलक हो। राजतिलक एक दिखावा है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि मैं वन में रहूं। वन भी एक दिखावा है। वन भी अवध समान ही है।

यह पढ़कर मेरे दिमाग में, नानी के लालटेन ले जाने का प्रसंग, एक प्रश्न-रुप में, बिजली की तरह कौंधा। नानी की जरूरत पर तो मैं उनको लालटेन दो मिनट के लिए भी ले जाने नहीं दे रहा था। मुझे अंधेरा हो जाने का भय खाए जा रहा था। यहां तो राम चौदह वर्ष के लिए वनवास जाने को तैयार हैं। बिना विचलित हुए।

मैंने स्वयं से ही पूछा - आखिर रहस्य क्या है ?

अध्यात्म!

अंतर्मन_स्पर्श

मेरी नानी का यह कथन कि 'भगवान राम तुम्हारे साथ हैं।' उनका यह जो संदेश है वह शब्दों से परे है। शब्द केवल इशारा भर हैं। उनका कहना था कि स्थिति को स्वीकार करो और स्वीकार भाव से चित्त में उतर जाओ, अंतर्मन की यात्रा करो। वहां कोई डर नहीं है। वहां लालटेन के प्रकाश की आवश्यकता नहीं है।

ब्रह्मांड में उजाले का और प्रकाश का 'होना' है। यह होना एक घटना है। जबकि 'डर' एक विचार है। 'दु:ख' एक विचार है। 'उजाला' एक स्थिति है और 'अंधेरा' भी एक स्थिति भर है।

नानी के शब्दों का गहरे में अर्थ है कि इंद्रियों की दौड़ को वापस समेट लो। इंद्रियों की बाहर की तरफ दौड़, सदैव एक डर के साथ, बनी रहेगी। इस बाहर की दौड़ में गिर जाने का खतरा भी सदैव बना रहेगा। जब अंतर्यात्रा पर उतरोगे तो बाहर का डर, अपने आप समाप्त हो जाएगा। डर विलुप्त, विलीन हो जाएगा। अन्तर की यात्रा में गिरने का खतरा नहीं है।

जब-जब हम आसक्त होते हैं तो हमारी चिंतन-प्रक्रिया, हमारी पूरी जीवन-धारा, उसी तरफ, उसी आसक्ति की ओर जीवन-ऊर्जा खिंचती चली जाती है।

विपरीत परिस्थितियां सदैव व्यक्ति के सामने दो विकल्प खड़े करती। एक विकल्प तो यह कि व्यक्ति उस परिस्थिति को स्वीकार भाव से पूर्णतया स्वीकार कर, अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखते हुए, अपनी जिज्ञासा को खोजते हुए उस प्रतिकूलता का अध्ययन कर समाधान ढूंढ़े।

दूसरा विकल्प है कि हम सिर्फ मानसिक तौर पर चिंतित हो जायें, समय को कोसने लगें। पागलपन के दौरे पड़ने लगें और हम पागल हो जायें।

राम का जीवन एक सामान्य व्यक्ति का जीवन है। उदाहरण के तौर पर यदि आप देखें कि जब राम वनवास काल में थे और उन्होंने रावण की चाल में आकर, सोने के हिरण का शिकार किया। उस शिकार को जब राम लेने गए तो उस समय जो उनका व्यक्तित्व है। वह एक सामान्य व्यक्ति का व्यक्तित्व है। उसमें परमात्मा का स्वरूप नहीं दिखाई देता। लेकिन जब उनको सीता के अपहरण की जानकारी होती है और उसके बाद की जो घटना है वह राम के जीवन का स्वीकार-भाव है। उस भाव में स्थित रहते हुए, सीता को वापस कैसे लाया जाए, वह रणनीति बनाते हैं। इस रणनीति में उनके स्वीकार-भाव के साथ-साथ उनका धैर्य, उनकी जिज्ञासा और उनका नेतृत्व--ये सभी गुण दृष्टिगोचर होते हैं। राम योजना को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने के लिए पूरी रणनीति बनाते हैं। उस रणनीति के लिए वह यथोचित व्यक्ति एवम् सही पात्र चुनते हैं। सही पात्र चयन का आशय है कि पचास प्रतिशत सफलता। सन्नाटे की आहट को सुनने का धैर्य व्यक्ति को कालजयी बना देता है। यह बात राम के जीवन में हर पल दृष्टिगोचर होती है। रामचरितमानस या रामायण का कोई भी प्रसंग हो, जब सीता के स्वयंवर के लिए जनकपुर में शिव धनुष तोड़ रहे थे तब की बात हो या अयोध्या में उनका वनवास की तैयारी हो रही है तब भी और जब राम ने वन के लिए गमन किया तब भी। बार बार उनका असीम धैर्य चरितार्थ हुआ।

जब सीता का अपहरण हुआ उस समय तो उनके ऊपर सन्नाटे का पहाड़ टूट पड़ा था । लेकिन हर स्थिति में अपने आप को सन्नाटे की आहट के साथ बनाए रखा।

राम के जीवन का जो चित्र है उसमें यह सर्वत्र दिखाई देता है कि जीवन 'अब' है, इस वर्तमान क्षण में है। परिस्थितियां चाहे प्रतिकूल हो जायें या अनुकूल,परिस्थितियां चाहे प्रिय हों या अप्रिय, चाहे प्रकाश हो या फिर घोर अंधेरा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। उन परिस्थितियों को मानसमात्र संपूर्ण रूप से जी सके। यही राम के जीवन का सबसे बड़ा मूल मंत्र है।

स्वीकार-भाव, व्यक्ति को 'अब' और 'वर्तमान क्षण' की नब्ज की पहचान कराता है। कल नहीं, आज। आज नहीं, 'अब' में जीवन के तार, समय की कुञ्जी को जीने के लिए कहीं गहरे में आत्मसात कराता है। इस आत्मसात की अनुभूति में 'मैं' का कोई स्थान नहीं है। वहाँ सब होना है। सब राममय है।

वाल्मीकि कृत रामायण हो या फिर तुलसीकृत रामचरितमानस, राम के जीवन में सन्नाटे की आहट की प्रतिध्वनि जीवन के हर महत्वपूर्ण मोड़ पर सुनाई पड़ती है। जो कि उनके धैर्य में स्पष्ट रूप से प्रतीत होती है। उनकी एकाग्रता भी इसी सन्नाटे की प्रतिध्वनि का ही प्रतिबंब है। राम का संदेश है - मेरा जीवन मेरे 'स्वीकार-भाव' में है।

उनके जीवन में सर्वत्र 'स्वीकार भाव' दिखाई देता है। वह परिस्थितियों के साथ जीते हैं। चाहे अनुकूल हो या प्रतिकूल हो, इस बात का उनके जीवन पर कोई असर नहीं पड़ता। जीवन अपने आप में पूर्ण है, अनुकूल स्थिति में भी और प्रतिकूल परिस्थिति में । यह बात राम के जीवन में पग-पग पर दिखाई देती है। हर क्षण दिखाई देती है। उनके जीवन में 'स्वीकार-भाव' अनुपस्थित नहीं है, सदैव उपस्थित है। यही जिज्ञासा का धरातल है और जिज्ञासा का धरातल ही उनको अपनी योजनाओं की सफल क्रियान्वयन की समझ देता। राम विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए योजना बनाते हैं। अपनी योजनाएं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने तक पूर्ण धैर्य भी रखते हैं।

यही स्वीकार-भाव और यही समझ उनके नेतृत्व का आधार है। परिस्थिति चाहे जैसी भी क्यों न हो! चाहे हलचल हो या सन्नाटा।

सन्नाटे की अपनी सत्ता है।

सन्नाटे की आहट आप भी सुन सकते हैं। शर्त केवल और केवल मात्र एक है। वह शर्त है - जब आप भी मानसिक रूप से, शारीरिक रूप से, तन से, मन से, उस क्षण में, जो वर्तमान में आपके समक्ष सन्नाटे के रूप में खड़ा है, उपस्थित हैं। तभी आप सन्नाटे की आहट सुन सकते हैं। आप सन्नाटे के साथ एकरस हो सकते हैं।

यही क्षण आपको स्थितप्रज्ञ होने की चुनौती देता है। आपके स्वीकार भाव को चुनौती देता है। यदि आप निर्विचार हैं, उस क्षण में, उपस्थित हैं, उस परिस्थिति में उपस्थित हैं। और परिस्थिति को पूर्णतया स्वीकार करने में, कहीं भी मन में, उस परिस्थिति के प्रति, प्रतिकार नहीं है। ऐसी स्थिति में ही स्वीकार भाव घटता है। स्थितप्रज्ञ होने की घटना घटती है। यदि आप स्थितप्रज्ञ हो जाएँ, तभी आप सन्नाटे की आहट को सुन पाएंगे। आप अपनी चेतना तक पहुंच पाएंगे। आप अपने को पहचान पायेंगे। कहीं गहरे में इस प्रश्न का उत्तर अनुभव कर पायेंगे कि 'मैं कौन हूँ ?"

राम के व्यक्तित्व में यही स्वीकार भाव, राजतिलक के अवसर एवम् सिंहासनारूढ़ होने की अपेक्षा, वनवास का आदेश सुनने से लेकर, पिता दशरथ के अस्वस्थ होते हुए भी एवम् मां कौशल्या को विव्हल देखकर भी राम विचलित नहीं होते हैं। पेचीदगियों से भरी पारिवारिक स्थिति में भी, उनको परिस्थिति का स्वीकार-भाव, अविचलित बनाए रखता है।

वनवास का आदेश सुन वे स्थिति को भांपते हैं, तटस्थ बने पास जाते हैं। राम अपने माता-पिता के पैर छूते हैं। सहर्ष अपने माता-पिता की जीवन-ऊर्जा का, चरणस्पर्श कर, आचमन करते हैं।

"रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातु पद नायउ माथा॥"

यही स्वीकार-भाव, राम को , इस प्रतिकूल परिस्थिति को, अनुकूल बनाने में, उस क्षण को उसी की पूर्णता में जीने में, सहायक बनता है। अपने राम अपने गुरु वशिष्ठ से भी शीश नवाते हुए विदा लेते हैं ॥

एहि बिधि राम सबहि समुझावा। गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा।

स्वीकार-भाव आपको जीवन की 'अनुभूति' की यात्रा करवाता है।

इसके ठीक विपरीत 'अनुमान' आपको जीवन के दूसरे छोर पर ला खड़ा करता है।। अनुमान के लिए स्वीकार-भाव में कोई स्थान नहीं है। स्वीकार-भाव में आप 'अनुमान' से दूर और अनुभव के पास हैं, अनुभव की गोद में हैं।

जीवन के प्रति यही स्वीकार-भाव उनके धैर्य का आधार है।

यही धैर्य उनकी कठिन परिस्थितियों को साधने की कला बन जाता है। उनको सही निर्णय के लिए भी प्रेरित करता है। यही स्वीकार भाव सही निर्णय के रूप में उनकी सफलता का मार्ग बन जाता है।

जब जीवन सरल तरीके से चल रहा हो और उसमें अचानक कुछ परिस्थितियां, समय की राह को ही बदल दें तो जो आपके मस्तिष्क में चिंतन-क्रियाओं का बहाव शुरू होगा, यह सारा बहाव, हमसे हमारा वर्तमान छीन ले जाता है। हमारे सामने एक झंझट खड़ा हो जाता। यही एक छोटा-सा क्षण है जो हमारे जीवन के संतुलन को तौलता है, यदि हम उस झंझट को स्वीकार कर लें। इसी स्वीकार-भाव से, इस शुरू हुए नये झंझट की दीवारें, एक- एक कर गिरनी प्रारम्भ हो जाती हैं।

....

पाठकों के पत्र

bhorsyh@gmail.com

चलते - चलते...